CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संस्कृतधातुसरणिः

डा० रामलखन शर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संस्कृत धातु सरणिः

लेखकौ
डा० रामलखन शर्मा
एम० ए०. पी-एच० डी०, आचार्य
सुधीर तिवारी

प्रकाशक
रामप्रसाद एण्ड ब्रादर्स
प्रकाशन विभाग
राजागंज, इटावा

प्रथम संस्करणम् १९८२

मूल्यम् १० रु०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रमेशचन्द्र त्रिपाठी
शिक्षा सचिव

उत्तर प्रदेश सरकार

विधान भवन
लखनऊ

श्री रामलखन शर्मा की संस्कृत व्याकरण की पुस्तक 'संस्कृत धातुसरणि:' देखने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। श्री शर्मा ने सरल भाषा में संस्कृत व्याकरण को जन-मानस तक पहुँचाने का प्रयास किया है। इसके लिए वह बधाई के पात्र हैं। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक संस्कृत भाषा के विद्यार्थियों के लिए सहयोगी होगी। विद्वज्जन तथा पाठकों का निर्णय ही इस पुस्तक की उपादेयता को पूर्णरूप से प्रमाणित करेगा।

रमेश चन्द्र त्रिपाठी

5500

State Museum Library • Lucknow •

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

संस्कृत कितनी ललित भाषा है, कितनी महती इसकी भाव प्रकाशन की क्षमता है किसी से छिपा नहीं । पर जब कोई इसकी धातुओं का स्वरूप देखता है तो एकाएक चका जाता है । गच्छति, गच्छतः, गच्छन्ति कहने में अति सरल लगता है, पर यदि कहे कि इसकी धातु तो गम्लृ है, उससे लृ चला जाता है, आगे तिप् का ति आता से पहले गम् के म् के स्थान पर छ् आता है शप् का अ आता है तब छ् के होने त् आता है, त् का च् होता है तब गच्छति बनता है, तो बात बड़ी अटपटी लगती है । विशेषकर आज का छात्र जो गच्छति गच्छतः भी नहीं कण्ठ करना चाहता, उसके लिए तो संस्कृत दूर की चीज हो जाती है, वह सूत्र की तो बात ही न सुनेगा ।

यह पुस्तक इसीलिए लिखी गयी है कि संस्कृत धातुओं के प्रति छात्रों को ही नहीं अध्यापकों की भी जो धारणा बन गयी है कि यह अंश तो छूने लायक नहीं, वह मिट जाय । आज के संस्कृत अध्यापकों से किसी धातु के लिट् के रूप पूछ दिये जायँ या दुह् धातु के धोक्षि अथवा दृश से द्रक्ष्यति की साधनिका पूछ दी जाय तो वे बिना रूप कौमुदी या सिद्धान्त कौमुदी देखे न बता सकेंगे । इसका अर्थ यह निकला कि कुछ समय में भाषा का प्राण ही मर जायगा । भाषा तो धातु पर ही टिकती है । संस्कृत आज वैसे ही कहाँ कोई पढ़ना चाहता है । अतः इसकी कठिनता की भावना को हटाना ही इस पुस्तक के लिखने का उद्देश्य है ।

अब देखें दूसरा पक्ष । संस्कृत में धातुओं की कुल संख्या १९४६ है । उसे देखकर या उसमें अल्ल, अक्क, रुधिर्, विजिर् या डुकृञ्, पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं पर यदि कहा जाय कि इससे अधिक संख्या अँग्रेजी में है जिसकी हर शब्द की अक्षरी रटनी पड़ती है, और इसके विपरीत यह बताया जाय कि सारी वाल्मीकि रामायण को जिसमें २४००० श्लोक हैं केवल ६०० धातुओं के आधार पर पढ़ा जा सकता है तो बात कुछ समझ में आती है । उसमें भी जब यह कहा जाय कि हमारा बोल-चाल और व्यवहार केवल १७५ सूत्र पढ़कर इतना सुन्दर ढंग से चल सकता है तो कुछ सन्तोष होता है । इन १७५ में भी २५ सूत्र ऐसे हैं जो सामान्य शब्द रूप जानने वाले को नहीं पढ़ने पड़ते, तो केवल १५० सूत्रों की बात रह जाती है । तब यह किसी का भी साहस हो सकता है कि संस्कृत पढ़ें और यह अंश भी सरलता से जाने ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विज्ञान पढ़ने वालों को अनेक सूत्र कण्ठ करने पड़ते है, गणित वालों को भी इसी तरह बहुत रटना पड़ता है। विना सूत्र के कोई भी शास्त्र टिक ही नहीं सकता। तब संस्कृत के लिए केवल यह समझना कि 'कर्तरि शप्' क्या कहता है, अथवा 'अतोगुणे' क्यों बना, कोई बड़ी बात नहीं। इस पुस्तक को लगभग एक वर्ष में लिखा जा सका। इसका मुख्य कारण यह था कि इस हेतु जो धातुओं की सूची बनायी गयी उसे अनेक ग्रंथों की कसौटी पर कसना था। जैसे इसमें एक धातु तिज् है, वह प्रायः सन्नन्त आती है, मुझे इस स्तर पर सन्नन्त के चक्कर में पाठक को नहीं डालना था, पर गीता में **'तितिक्षस्व"** आया है, अतः उस धातु को रखना पड़ा। इसी प्रकार चक्षिङ् का प्रयोग बहुत कम होता है और उसके रूप भी टेढ़े हैं, पर वाल्मीकि रामायण में आचक्षते आया है तो उसे भी यहाँ स्थान देना पड़ा। इस पुस्तक को पढ़ने से पाठक को एक अनुभूति अवश्य होगी कि संस्कृत धातुएँ कैसे चलती हैं, वे वस्तुतः चलती ही नहीं ढरकती हैं, बस उनका मंत्र जान लें तो वे बड़ी वैज्ञानिकता से भरी दिखायी देंगी। मंत्र का स्वरूप व्याकरण बनाने वाले निश्चित करते हैं। जैसे जाना अर्थ के लिए **'गच्छति'** आता है, पर सूत्रकार को गम् धातु इसलिए बनानी पड़ी कि गमिष्यति, अगमत्, जगाम आदि रूप इसी से सम्भव हैं। हम बड़ी सरलता से कहते हैं—गत, मत, हत। इनमें धातुएँ गम्, मन्, और हन् हैं, यह हम नहीं जानना चाहते। हम यान, वायुयान, जलयान कहते हैं पर याति के या का ही यह प्रसार है यह नहीं जानते। इसी का बिगड़कर जाता है आज हिन्दी में है। हम 'प्रयोग' शब्द का व्यवहार करते हैं पर युज् नहीं जानना चाहते, हम दोष का व्यवहार करते है पर दुष में उ के कारण दो या युज् में यु के उ के कारण योग बनता है यहीं नहीं जानना चाहते। संक्षेप में बात कुल इतनी है कि हम रोटी खाना चाहते हैं पर यह नहीं जानना चाहते कि यह बनी कैसे? जैसे स्वयं पकाया भोजन अधिक स्वादिष्ट लगता है वैसे ही मेरा विश्वास है, कि ये रूप बनाने पर कभी रटने नहीं पड़ेंगे। रटने में दो बुराइयाँ होती हैं- एक तो रटना कभी भी मनोवैज्ञानिक नहीं, दूसरे भूलने पर उसका कोई इलाज नहीं होता। मैंने देखा है कि प्रायः बड़े-बड़े पढ़े लिखें यह तय नहीं कर पाते कि ग्रहीष्यति शुद्ध है या गृहीष्यति, ग्रह्णाति होगा कि गृह्णाति। अनुग्रह से शुद्ध अनुगृहीत बनता है पर कौन समझाये—९० % निमंत्रण पत्रों में अनुग्रहीत लिखा मिलेगा। मेरा विश्वास है कि इस प्रकार के जितने झमेले हैं, सभी इस पुस्तक को पढ़कर दूर हो जायेंगे। आज जो समाज धातु के व्यवहार के स्थान पर कृदन्त से काम चलाता है वह भी तिङन्त का व्यवहार बड़ी रुचि से करेगा।

इसके प्रणयन में मूल प्रेरक माननीय मुख्यमन्त्री श्री श्रीपति मिश्र हैं, जिन्होंने एक बार ऐसे ही मुझसे कहा था कि संस्कृत अध्यापकों को इसे थोड़ा और सरल करना चाहिये। उस समय वे विधान सभा अध्यक्ष थे और विधान पर ही कुछ काम करना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चाहते थे । यह कार्य कुछ सरल नहीं था, फिर मैं कोई विद्वान् नहीं, पर अपने ज्ञान की रेखा को थोड़ा और बढ़ाने का मुझे यही बहाना मिला । इसके प्रणयन से मेरी स्वयं की अनेक भ्रांतियाँ निकल गयीं । अब यह तो पाठक ही बतायेंगे कि यह उन्हें कितनी लाभप्रद लगी । यह कार्य वस्तुतः धनोपार्जन के लिए नहीं वरन् भाषा को स्थायित्व देने के लिए किया गया है । आज व्याकरण की अनगिनत पुस्तकें हैं और वे दो तरह की हैं—एक ओर तो सिद्धांत कौमुदी या अष्टाध्यायी मूलग्रंथ हैं । पर वे अब व्याकरण से आचार्य के भी पल्ले नहीं पड़ते, तो किस काम के, दूसरी ओर जो रूप रटाने वाली या सामान्य रूपों को दिखाकर जो खाना पूरी करती हैं, वे पुस्तकें वस्तुतः आधारहीन शिलाएँ हैं और बहुधा अशुद्ध भी रहती हैं । इस प्रकार के दोनों दोषों से यह पुस्तक मुक्त होगी, क्योंकि मैं दो और दो चार ही कह सकता हूँ, तीन या पाँच कहने में मैं स्वयं ही पकड़ा जाऊँगा ।

इस कार्य में मुझे **आचार्य ललिता प्रसाद शास्त्री, डा० वी० बी० मिश्र तथा डा० चन्द्रभानु त्रिपाठी** से अपूर्व सहयोग मिला । उनके प्रति मैं सतत आभारी रहूँगा । दो बच्चों का भी इसमें मुझे सहयोग मिला—वे हैं—**श्री राकेश चन्द्र दुबे** तथा **रामकिशोर शुक्ल,** इन्हें मैं हृदय से आशिष देता हूँ । यदि ईश्वर की कृपा हुई और जीवन के क्षण कुछ और मिले तो इसका दूसरा भाग भी लिखूँगा । उस भाग में केवल १०० सूत्र होंगे और शेष लकार होंगे । अपने प्रकाशक के प्रति भी मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिसने पुस्तक देखकर यह कहा था कि गुरुजी इसे कौन पढ़ेगा आप ज्ञान की बातें करते हैं, ज्ञान किसे चाहिए । पर मेरे समझाने पर कि यह पुस्तक संस्कृत को संरक्षण देगी, उन्होंने मेरी बात मान ली । इसे पढ़कर विज्ञ जन जो भी सुझाव देंगे उन्हें स्नेह से हृदय से लगाऊँगा ।

विनीत :

राम लखन शर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रयुक्त प्रत्ययों की तालिका [प्रयोगानुसार]

१ कर्त्तरि शप्
२ झोऽन्तः
३ अतोगुणे
४ अतो दीर्घे यञि
५ दंशसंजस्वञ्जां शपि
६ सार्वधातुकार्धधातुकयोः
७ पुगन्तलघूपधस्य च
८ आदिर्ञिटुडवः
९ इदितोनुम् धातोः
१० धात्वादेः षः सः
११ पाघ्राध्मास्था म्नादाण्—
१२ इषुगमियमां छः
१३ छे च
१४ णो नः १५ श्रुवः शृ च
१६ सार्वधातुकमपित्
१७ अचिश्नुधातुभ्रुवां —
१८ हुश्नुवोः सार्वधातुके
१९ लोपश्चास्यान्यतरस्याम्
२० वाभ्राशभ्लाशभ्रमु—
२१ क्रमः परस्मैपदेषु
२२ गूपूधूपविच्छपणि—

(२) अदादिगणः

२३ अदिप्रभृतिभ्यः शपः
२४ श्नसोरल्लोपः
२५ तासस्त्योर्लोपः
२६ इणो यण्
२७ चक्षिङ ख्याञ्
२८ जक्षित्यादयः षट
२९ अदभ्यस्तात्
३० जाग्रोऽविचिणल्
३१ दादेर्धातोर्घः
३२ झषस्तथोर्धोऽधः
३३ एकाचो बशो भष्
३४ ब्रुव ईट्
३५ ब्रुवः पञ्चानाम्
३६ आहस्थः ३७ मृजेर्वृद्धिः
३८ व्रश्च भ्रस्ज सृज मृज—
३९ रुदादिभ्यः सार्वधातुके
४० उतोवृद्धिर्लुकि
४१ विदो लटो वा
४२ शास इदङ् हलोः
४३ शासिवसिघसीनां च
४४ अनुदात्तोपदेश वनति—
४५ गमहनजनखनघसां—
४६ हो हन्तेर्ञिणन्नेषु

(३) जुहोत्यादिगणः

४७ जुहोत्यादिभ्यः श्लुः
४८ श्लौ ४९ हलादि शेषः
५० ह्रस्वः
५१ श्नाभ्यस्तयोरातः
५२ अभ्यासे चर्च
५३ दधस्तथोश्च
५४ अर्तिपिपर्त्योश्च
५५ उद् ओष्ठ्य पूर्वस्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५६ हलि च
५७ भियोऽन्यतरस्याम्
५८ कुहोश्चु:
५९ ई हल्यघो:
६० जहातेश्च
६१ नाभ्यस्तस्याचि
(४) दिवादिगण:
६२ दिवादिभ्य: श्यन्
६३ शमामष्टानां दीर्घ:
६४ ओत: श्यनि
६५ अनिदितां हल्
अन्य गण
६६ ग्रहिज्यावयिव्यधि
६७ स्वादिभ्य: श्नु
६८ तुदादिभ्य: श:
६९ ऋत इद्धातो:
७० किरतौ लवने
७१ अचि विभाषा
७२ शे मुचादीनाम्
७३ रुधादिभ्य: श्नम्
७४ श्नान्नलोप:
७५ तनादि कृञ्भ्य: उ:
७६ अत उत् सार्वधातुके
७७ न भ कर्छुराम्
७८ नित्यं करोते:
७९ संपरिभ्यां करोतौभूषणे
८० समवाये च
८१ उपात् प्रतियत्न
८२ क्रयादिभ्य: श्ना
८३ प्वादीनां ह्रस्व:
८४ चुरादिभ्यो णिच्
८५ अच: परस्मिन् पूर्वविधौ
८६ णिचश्च
८७ मितां ह्रस्व:
८८ टित आत्मनेपदानां टेरे
८९ आतो ङित:
९० लोपोव्योर्वलि
९१ थास: से, ९२ रज्जेश्च
९३ कर्मणिङ्, ९४ उपसर्गस्यायतौ
९५ उपधायां च
९६ क्रपो रोल:
९७ आत्मनेपदेष्वनत:
९८ धि च
९९ शीङ् सार्वधातुके
१०० शीङो रुट्
१०१ भ्रिञाम् इत्
१०२ ज्ञाजनोर्जा
१०३ म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च
१०४ रिङ् शयग्
१०५ आडजादीनाम्
१०६ इतश्च
१०७ तस्थस्थमिपांतांतं—
१०८ नित्यं ङित:
१०९ आटश्च
११० लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वड
१११ अद: सर्वेषाम्
११२ अस्तिसिचोऽपृक्ते
११३ तिप्यनस्ते:
११४ सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च
११५ रुदश्च पञ्चभ्य:
११६ अड्गार्ग्य गालवयो:
११७ दश्च
११८ लङ: शाकटायनस्यैव
११९ जुसि च

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१२० स्यतासीऌ्लुटोः
१२१ आर्द्धधातुकस्येड्वलादेः
१२२ स स्यादार्धधातुके
१२३ ऋद्धनोः स्ये
१२४ षढोः कः सि
१२५ सृजदृशोर्झल्यमकिति
१२६ चोः कुः
१२७ अस्तेर्भूः
१२८ ब्रुवो वचि
१२९ मस्जिनशोर्झलि
१३० रधादिभ्यश्च
१३१ आदेच् उपदेशेऽशिति
१३२ वा द्रुहमुहष्णुह—
१३३ सेऽचिकृतचृतछृदतृदनृत
१३४ स्वरतिसूति सूयति
१३५ मस्जेरन्त्यात्
१३६ ग्रहोऽलिटि दीर्घः
१३७ मीनाति मिनोति
१३८ विभाषा लीयते (६-१-५०)
१३९ लोट् च
१४० एरुः
१४१ तुह्योस्तातङ्
१४२ लोटोलङ्वत्
१४३ सेर्ह्यपिच्च
१४४ अतो हेः
१४५ मेर्निः
१४६ आडुत्तमस्य पिच्च
१४७ हुझल्भ्योर्हेर्धिः
१४८ घ्वसोरेद्धावभ्यास
१४९ शा हौ
१५० हन्तेर्जः
१५१ असिद्धवदत्राभात्
१५१(अ) आ च हौ
१५२ उतश्च प्रत्ययात्
१५३ हलः श्नः
१५४ आमेतः
१५५ सवाभ्यां वाऽमौ
१५६ एत ऐ
१५७ ईड्जनोर्ध्वे च
१५८ यासुट् परस्मैपदेषु
१५९ लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य
१६० अतोयेयः
१६१ झेर्जुसः
१६२ वचि स्वपि
१६३ ये च
१६४ लिङः सीयुट्
१६५ झस्यरन्
१६६ इटोऽत्
१६७ स्कोः संयोगाद्योरन्ते च
१६८ अनुदात्तस्य
१६९ ऊदुपधाया
१७० उस्यपदान्तात्
१७१ आदेश प्रत्यययोः
१७२ हलङ्याब्भ्यो दीर्घात्
१७३ मिदचोऽन्त्यात् परः
१७४ रषाभ्यां नो णः
१७५ अट्कुप्वाङ्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिच्छेद—१

सन्धियों का सामान्य परिचय

संस्कृत एक संश्लिष्ट भाषा है। इसमें प्रकृति और प्रत्यय के योग से पदों का निर्माण होता है। संस्कृत व्याकरण के किसी भी अंश को पढ़ने के लिए सन्धियों का सामान्य ज्ञान होना आवश्यक है। इस दृष्टि से इस पुस्तक को पढ़ने के लिए भी इनको जानना आवश्यक होगा। अतः यह मानकर कि जिसने इन्हें नहीं पढ़ा वह भी इस पुस्तक को पढ़ सके, सन्धियों का सांकेतिक रूप यहाँ दिया जाता है।

१. **अकः सवर्णे दीर्घः**—अ इ उ ऋ से परे समान स्वर आने पर इनके स्थान में दीर्घरूप आ, ई, ऊ, ॠ हो जाता है। विद्या+अर्थी=विद्यार्थी। अ, इ, उ, ऋ चाहें ह्रस्व मिलें या दीर्घ, उनका फल सदा दीर्घ ही होगा।

२. **इको यणचि**—इ उ ऋ लृ से परे यदि कोई असमान स्वर आवे तो इनके स्थान में क्रम से य व र ल हो जाते हैं।

इति+आदि=इत्यादि, सु+आगतम्=स्वागतम्

३. **आद्गुणः**—अ से परे इ आने पर ए तथा उ आने पर ओ और ऋ आने पर अर् हो जाता है। रमा+ईशः=रमेशः, सूर्य+उदयः=सूर्योदयः, महा+ऋषिः =महर्षिः।

४. **वृद्धिरेचि**—अ से परे यदि ए या ऐ आवे तो ऐ तथा ओ या औ आवे तो औ हो जाता है। तव+एव=तवैव, परम+औदार्यम्=परमौदार्यम्।

५. **एचोऽयवायावः**—ए ऐ ओ औ से परे यदि कोई स्वर आवे तो इनके स्थान में क्रम से अय्, आय्, अव्, आव् हो जाते हैं। ने+अनम्=नयनम्

६. **एङः पदान्तादति**—यदि पदान्त एङ् (ए या ओ) से परे अ आवे तो अ का पूर्वरूप हो जाता है। हरे+अव=हरेऽव।

७. **एङि पररूपम्**—यदि अवर्णान्त उपसर्ग से परे एङादि (जिसके आरम्भ में ए या ओ हो तो पर रूप एकादेश हो जाता है। प्र+एजते=प्रेजते, उप+ओषति =उपोषति।

८. **स्तोः श्चुनाश्चुः**—यदि स् तथा तवर्ग का श् या चवर्ग के साथ मेल हो तो स के स्थान में श् तथा तवर्ग के स्थान में चवर्ग हो जाता है। सत्+जनः=सज्जनः, हरिस्+शेते=हरिश्शेते। रामस्+चिनोति=रामश्चिनोति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

९. ष्टुना ष्टुः—यदि स् तथा तवर्ग का ष् अथवा टवर्ग से मेल हो तो स् के स्थान में ष् तथा तवर्ग के स्थान में टवर्ग हो जाता है। तत्+टीका=तट्टीका, रामस्+षष्ठः=रामष्षष्ठः।

१०. झलां जशोऽन्ते—पदान्त झलों के स्थान में जश् हो जाता है। तत्+रूपम्=तद्रूपम, वाक्+ईशः=वागीशः।

११. झलांजश्झशि—झलों के परे यदि झश् हो तो झलों के स्थान में जश् हो जाता है। सुध् ध्=सुद्ध्।

१२. यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा—पदान्त यर् से परे यदि कोई अनुनासिक वर्ण हो तो यर् के स्थान में भी अनुनासिक हो जाता है। धिक्+मूर्खम्=धिङ् मूर्खम्। सत्+मार्गः=सन्मार्गः।

१३. अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः—यदि अनुस्वार से परे यय् हो तो अनुस्वार के स्थान में पर सवर्ण हो जाता है। गङ्गा, चञ्चल, पण्डित, दन्तः, दम्भः।

१४ मोऽनुस्वारः—यदि पद के अन्त में म् हो तो उससे परे व्यञ्जन रहने पर उस म् के स्थान में अनुस्वार हो जाता है। आगे स्वर रहने पर म् ही रहता है।

तम्+अब्रवीत्=तमब्रवीत्, तम् पृच्छति=तं पृच्छति।

१५. खरि च—यदि झलों से परे खर् हो तो झलों के स्थान में चर् हो जाता है। अद्+ति=अत्ति। झलों में वर्ग का १,२,३,४ वर्ण आता है, चरों में प्रथम वर्ण, अतः २, ३, ४ सदा पहले में बदल जाते हैं।

उद्+थानम्=उत्थानम्। अद्+ति=अत्ति।

१६. खरवसानयोर्विसर्जनीयः—पदान्त र् से परे यदि खर् हो (पहला दूसरा वर्ण या श ष स) अथवा अवसान (कुछ नहीं) तो र् के स्थान में विसर्ग हो जाता है।

१७. लोपः शाकल्यस्य—यदि किसी पद के अन्त में य अथवा व् हो और उससे पहले अ अथवा आ हो तथा य, व से परे अश् हो तो शाकल्य के मत में उस य व का लोप हो जाय। हरय्+इह=हर इह

१८. झरो झरि सवर्णे—(८–४–६५) हल् से परे झर् का लोप हो यदि सवर्ण झर् परे हो।

१९ ससजुषो रुः—पदान्त स् या सजुष् के स्थान में रु हो जाता है। रामस्=रामरु, शिवस्=शिवरु।

२० विसर्जनीयस्य सः—खर् परे रहते विसर्ग के स्थान में स् हो जाता है। खर् में च छ, ट ठ, त थ रह जाते हैं क्योंकि क, ख, प फ के रहते इस विधान को दूसरा नियम रोक देता है, वहाँ विसर्ग आधा रह जाता है। श ष स अपनी २ ओर खींचते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं अतः इस सन्धि के तीन खण्ड हो जाते हैं—

श च छ में	श्	इनमें ८वीं ९वीं सन्धियां भी लग जाती हैं।
ष ट ठ में	ष्	
स त थ में	स्	

छात्रः + तिष्ठति = छात्रस्तिष्ठति, वातः + चलति = वातश्चलति ।

२१. **अतोरोरप्लुतादप्लुते**—अप्लुत अकार से परे रु के स्थान में उ हो जाय यदि उस रु से परे भी अप्लुत अ हो। अर्थात् रु के दोनों ओर अ होने पर रु के स्थान पर उ कर देते हैं। रामरु + अगच्छत् = राम + उ + अगच्छत्, रामोऽगच्छत् ।

२२. **हशि च**—यह सूत्र २१ का पूरक है। यह कहता है कि यदि रु से पहले ह्रस्व अ हो और रु के बाद हश् हो तो भी रु के स्थान में उ कर दो। रामरु वदति = रामो वदति। हश् में वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा अक्षर तथा हयवरल आते हैं। पार्थः + धनुर्धरः = पार्थोधनुर्धरः ।

२३. **भो भगोऽघोऽपूर्वस्ययोऽशि**—यदि भोस्, भगोस्, अघोस् अथवा अ पूर्वक रु हो तो उसके स्थान में य् हो जाय। देवा रु + इह = देवाय् इह, देवारु + यान्ति = देवाय् यान्ति ।

२४. **हलि सर्वेषाम्**—हल् परे रहते उस य् का लोप हो जो भोस्, भगोस्, अघोस् अथवा अ पूर्वक रु के स्थान में हुआ हो। अतः सूत्र २३ के साथ ही इसकी भी प्रवृत्ति हो जाती है तथा देवा इह, देवा यान्ति रूप रह जाते हैं। देवा इह में य का लोप वस्तुतः लोपः शाकल्यस्य करता है। (देखें सूत्र १७)

इसी प्रकार हरय् इह = हर इह आदि ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिच्छेद–२

व्यवहारोपयोगी–संस्कृत धातु गणना

संस्कृत में जहाँ यह कठिनाई है कि हर बात नियम बद्ध है, वहीं यह अच्छाई भी है कि वह गिनी चुनी है। इसमें कुल धातु संख्या १९४४ है। इनमें से अधिकांश का व्यवहार हम नहीं करते। अतः व्यवहार में आने वाली धातुओं का चयन करके यहाँ दिया जाता है।

(परस्मैपदिनः)

१—भ्वादिगणः

१ अक् टेढ़ा चलना अकति
२ अट् घूमना अटति
+परि=पर्यटति–भ्रमण करता है।
३ अञ्चु चलना, पूजना अञ्चति
४ अत् सदा रहना अतति
५ अर्घ मूल्य होना अर्घति
६ अर्च पूजा करना अर्चति
७ अर्ज सञ्चय करना अर्जति
८ अर्द माँगना अर्दति
९ अर्ह योग्य होना अर्हति
१० अल् सजाना, समर्थ होना, निषेध करना, अलति
११ अव् रक्षा करना अवति
१२ ईर्ष्य ईर्ष्या करना ईर्ष्यति
१३ ऋ जाना ऋच्छति
१४ एजृ (एज्) काँपना एजति
१५ कठ् कष्ट से जीवन विताना कठति
१६ काक्षि चाहना कांक्षति
१७ कील बांधना कीलति
१८ कुञ्च सिकुड़ना कुञ्चति
१९ कूज् कूजना कूजति
२० कृष् जोतना कर्षति
+आ=आकर्षति खींचता है।
+उप=उपकर्षति उठाता है।
+अप=अपकर्षति पीछे रहता है
+उत्=उत्कर्षति उन्नत होता है
+प्र=प्रकर्षति ” ”
२१ क्रदि रोना, चिल्लाना क्रन्दति
२२ क्रमु पैर रखना क्रामति (क्राम्यति)
+अति=अतिक्रामति – आगे निकलता है।
२३ क्वण् कुड़कुड़ाना क्वणति
२४ क्रीड् खेलना क्रीडति
२५ क्रुश् चिल्लाना क्रोशति
२६ क्षर् गिरना क्षरति
२७ क्षि नष्ट होना क्षयति
२८ क्षै नाश होना, क्षीण होना क्षायति
२९ खञ्ज लंगड़ाकर चलना खञ्जति
३० खनु खोदना खनति
३१ खाद् खाना खादति
३२ खेलृ (खेल) खेलना खेलति
३३ गद् स्पष्ट बोलना गदति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

+नि = निगदति

३४ गम्लृ जाना गच्छति

+अभि = अभिगच्छति = घेरता है।

+अनु = अनुगच्छति = पीछे जाता है।

+उप = उपगच्छति = पहुँचता है।

+आ = आगच्छति = आता है।

+अधि = अधिगच्छति = पाता है।

+अव = अवगच्छति = समझता है।

+सम् = संगच्छते = साथ जाता है।

+निर् = निर्गच्छति निकलता है।

३५ गुजि गुंजना गुञ्जति

३६ गुपू रक्षा करना गोपायति

३७ गै गाना गायति

३८ गर्ज गरजना गर्जति

३९ गर्व गर्व करना गर्वति

४० ग्लै खिन्न होना ग्लायति

४१ घस्लृ(घस्) खानाखाना घसति

४२ घ्रा सूँघना जिघ्रति

४३ चर् चलना चरति

+आ = आचरति = आचरण करता है

+उप = उपचरति = उपचार करता है

+प्र = प्रचरति = प्रचार करता है।

+अनु = अनुचरति = सेवा करता है।

+सम् = संचरति = घूमता है।

+व्यभि = व्यभिचरति = दुराचार करता है

+वि = विचरति = घूमता है।

४४ चर्व चबाना चर्वति

४५ चल चलना चलति

+प्र = प्रचलति = प्रचलित है।

+वि = विचलति = हटता है।

४६ चिती (चित्) जानना चेतति

४७ चुबि चूमना चुम्बति

४८ चूष् चूसना चूषति

४९ जप् जपना जपति

५० जि जीतना जयति

+वि = विजयते—जीतता है।

+परा = पराजयते—हराता है।

५१ जीव जीना जीवति

+उप = उपजीवति—जीविका पाता है

५२ जल्प बोलना जल्पति

५३ ज्वर रोगे ज्वरति

५४ ज्वल् जलना ज्वलति

+प्र = प्रज्वलति—तेजी से जलता है।

५५ तप् तपना तपति

+प्र = प्रतपति—तपाता है।

+आ = आतपति—धूप करता है।

+अनु = अनुतपति—पश्चात्ताप करता है।

+सम् = संतपति—दुःख देता है।

५६ तृप तंतुष्ट होना तृपति

५७ तृ पार जाना तरति

+उत् = उत्तरति—उत्तर देता है। उत्तीर्ण करता है।

+वि = वितरति = बाँटता है।

५८ तर्ज धमकाता तर्जति

५९ त्यज् छोड़ना त्यजति

+परि = परित्यजति = छोड़ता है।

६० दल् काटना दलति

६१ दंश काटना दंशति (विच्छू आदि का)

६२ दह जलाना दहति

६३ दाण् (दा) देना यच्छति

६४ द्रु पिघलना-जाना द्रवति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

+प्र=प्रद्रवति=भाग जाता है।
+अभि=अभिद्रवति= ,,
६५ दृशिर् (दृश्) देखना पश्यति
६६ धूप तप्त करना धूपायति
(+आय)
६७ धृञ् पकड़ना धरति
६८ धृष् हिंसायाम् धर्षति
६९ ध्मा फूँकना धमति
७० ध्यै ध्यान करना ध्यायति
७१ णट् (नट्) नाचना नटति
७२ णद् (नद्) शब्द करना नदति
७३ णम् (नम्) झुकना नमति
+उत्=उन्नमति=उठता है।
+प्र=प्रणमति=प्रणाम करता है।
+परि=परिणमति=अन्त होता है।
७४ टुनदि (नद्) प्रसन्न होना नन्दति
+अभि=अभिनन्दति=स्वागत करता है।
७५ णीञ् (नी) ले जाना नयति
+परि=परिणयति—विवाह करता है।
+आ=आनयति—लाता है।
+उप=उपनयति—यज्ञोपवीत करता है।
+अप=अपनयति—हटाता है।
७६ नर्द शब्द करना नर्दति
७७ डुपचष् (पच्) पकाना पचति
७८ पठ् पढ़ना पठति
७९ पत्लृ (पत्) गिरना पतति
+उत्=उत्पतति=उड़ता है।
+सम्=समुत्पतति= ,, उठता है।

८० पा पीना पिबति
८१ पुथि मारना पुन्थति
८२ पूष् वढ़ना पूषति
८३ फल् फलता है फलति
८४ फुल्ल फूलता है फुल्लति
८५ बुधिर् बोध करना—होना बोधति/ते
+नि=निबोधति=जानता है।
८६ बृहि वढ़ना बृंहति
८७ भज् सेवा करना भजति/ते
८८ भण् बोलना भणति
८९ भू होना भवति
+अनु=अनुभवति=अनुभव करता है
+प्र=प्रभवति=निकलता है।
+उद्=उद्भवति= ,,
+परा=पराभवति=हारता है।
सम्=संभवति=होता/उगता है।
+अभि=अभिभवति=दबाता है।
+आविर्=आविर्भवति=निकलता है।
९० भूष् सजाना भूषति
९१ भृञ् धारण करना, पुष्ट करना भरति
९२ भ्रमु चलना भ्रमति भ्राम्यति
९३ मडि सजाना मण्डति
९४ मथे (मथ) मथना मथति
९५ मन्थ ,, मन्थति
९६ मह पूजना महति
९७ मील आँखें मूंदना। मीलति
+उत्=उन्मीलति=खोलता है।
९८ मूर्छा मूर्च्छित होना मूर्च्छति
९९ मृषु सहन करना मर्षति
१०० म्ना अभ्यास करना मनति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१०१ यज् यज्ञ करना यजति
१०२ यम् शान्त होना यच्छति
१०३ रक्ष् रक्षा करना रक्षति
१०४ रट् रटना रटति
१०५ रण् शब्द करना रणति
१०६ रुठि जाना रुण्ठति
१०७ रुष् रोष करना रोषति
१०८ रुह् उगना रोहति
+आ=आरोहति—चढ़ता है।
+अव=अवरोहति—उतरता है।
+प्र=प्ररोहति=उगता है।
१०९ लज् भूनना लजति
११० लप् बोलना लपति
+सम्=संलपति=बात करता है।
+आ=आलपति= ,, ,,
+वि=विलपति=रोता है।
१११ लष् चाहना लषति
+अभि=अभिलषति—(वही)
११२ लस् अच्छा लगना लसति
११३ लुञ्च नोंचना लुञ्चति
११४ लुठ् समीप से मारना लोठति
११५ लुठि आलस्ये–प्रतिघाते लुण्ठति
११६ वज् जाना वजति
११७ वद् बोलना वदति
+अनु=अनुवदति—अनुवाद करता है।
११८ वन् आदर करना वनति
११९ वप् (डुवप्) बोना वपति
१२० वम्(टुवम्) उगलना वमति
१२१ वस् रहना वसति
+नि=निवसति—रहता है।
+प्र=प्रवसति—प्रवास करता है।
१२२ वह् लै जाना वहति
+प्र=प्रवहति—बहती है।
+उद्=उद्वहति—ले जाता है।
+प्रति=प्रतिवहति—नहीं मानता
१२३ वाछि चाहना वाञ्छति
१२४ वेञ् बुनना वयति
१२५ वेलृ चलना वेलति
१२६ वेल्ल ,, वेल्लति
१२७ व्रज जाना व्रजति
१२८ शंस् स्तुति करना शंसति
१२९ शप् शाप देना शपति
१३० शमो देखना शमति
१३१ शुच् शोक करना शोचति
१३२ शूल् पीड़ा देना शूलति
१३३ श्रिञ् आश्रय लेना श्रयति
+सम्=संश्रयति—वही
१३४ श्रु सुनना शृणोति
१३५ षञ्ज चिपटना सजति
१३६ षिध्(+इ) जाना सेधति
१३७ ष्ठा रुकना तिष्ठति
+समुप=समुपतिष्ठति—आता है।
+अनु=अनुतिष्ठति—करता है।
+प्र=प्रतिष्ठते—चल देता है।
+सम्=संतिष्ठते—सामने आता है।
+अव=अवतिष्ठते— ,, ,,
+पर्यव=पर्यवतिष्ठते—करता है।
+उत्=उत्तिष्ठति—उठता है।
१३८ स्रु बहना स्रवति
१३९ सृ दौड़ना धावति
१४० सृप्लृ गतौ सर्पति
+वि=विसर्पति=चलता है।
+अप=अपसर्पति—हटता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४१ स्खल् चलायमान होना स्खलति
१४२ स्तन् शब्द करना स्तनति
१४३ स्मृ स्मरण करना स्मरति
+प्र=प्रस्रवति—बहता है।
१४४ स्वन् शब्द करना स्वनति
१४५ हस् हँसना हसति
+उप=उपहसति=उपहास करता है
१४६ हृञ् हरना हरति
+वि=विहरति—विहार करता है।
+प्र=प्रहरति—मारता है।
+आ=आहरति—लाता है।
+उपा=उपाहरति—भेंट देता है।
१४७ हृषु झूठ बोलना हर्षति
१४८ ह्रस् कम होना ह्रसति
१४९ ह्वेञ् बुलाना ह्वयति
+आ=आह्वयति—बुलाता है।

(२) अदादिगण:

१५० अद् खाना अत्ति
१५१ अस् होना अस्ति
१५२ इण् जाना एति
+उप=उपैति=पहुँचता है।
+अनु=अन्वेति=पीछे जाता है।
इसी से अन्वित, समन्वित आदि।
+अभि+उप=अभ्युपैति, उपेत।
१५३ कु कूजना कौति
१५४ चकासृ चमकना चकास्ति
१५५ जागृ जगना जागर्ति
१५६ दुह् दुहना दोग्धि
१५७ द्विष् द्वेष करना द्वेष्टि
१५८ नु (णु) स्तुति करना नौति
१५९ पा रक्षा करना पाति
१६० ब्रूञ् बोलना ब्रवीति
+प्रति=प्रतिब्रवीति=उत्तर देता है।
१६१ भा चमकना भाति
१६२ मा नापना माति
१६३ (मृजूष्) मृज् स्वच्छ करना मार्ष्टि
१६४ या जाना याति
+प्र=प्रयाति—प्रयाण करता है।
+उप=उपयाति—पहुँचता है।
१६५ यु मिलाना यौति
१६६ रु शब्द करना रौति
+वि=विरौति=चिल्लाता है।
१६७ रुद् रोना रोदिति
१६८ ला लाना लाति
१६९ वच् कहना वक्ति
१७० विद् जानना वेत्ति
१७१ शासु शासन करना शास्ति
१७२ श्वस् श्वास लेना श्वसिति
+वि=विश्वसिति—विश्वास करता है।
+उत्=उच्छ्वसिति—उच्छ्वास लेता है।
१७३ (ष्णा) स्ना नहाना स्नाति
१७४ स्तु (ष्टुञ्) स्तुति करना स्तौति
१७५ स्वप् (ञिष्वप्) सोना स्वपिति
१७६ हन् मारना हन्ति

(३) जुहोत्यादिगण:

१७७ दा (डुदाञ्) देना ददाति
+प्रति=प्रतिददाति=लौटाता है।
+आ=आददाति=लेता है।
१७८ धा (डुधाञ्) धारण करना दधाति
+वि=विदधाति=बनाता है।
+अव=अवदधाति=कहता है।
+समा=समादधाति=समाधान करता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

+प्रतिवि=प्रतिविदधाति—प्रतीकार करता है।

१७९ पृ पालन करना पिपर्ति
१८० भी (ञिभी) डरना बिभेति
१८१ भृ (डुभृञ्) धारण करना बिभर्ति
१८२ हा (ओहाक्) छोड़ना जहाति
१८३ हु हवन करना जुहोति
१८४ ह्री लजाना जिह्रेति

(४) दिवादिगणः

१८५ असु फेंकना अस्यति
१८६ कुप् कोप करना कुप्यति
१८७ क्रुध क्रुद्ध होना क्रुध्यति
१८८ क्लिद् भीगना क्लिद्यति
१८९ क्षमूप् सहना क्षाम्यति
१९० क्षिप् फेंकना क्षिप्यति
१९१ क्षुध् भूखा होना क्षुध्यति
१९२ क्षुभ् क्षुब्ध होना क्षुभ्यति
१९३ खिद् दुःख देना खिद्यति
१९४ णश् (न) नष्ट होना नश्यति
१९५ तमु चाहना ताम्यति
१९६ तुष् प्रसन्न होना तुष्यति
१९७ तृष् प्यासा होना तृष्यति
१९८ त्रसी दुःखी होना त्रस्यति
१९९ दिवु जुआ खेलना दीव्यति
२०० दुष् खराब करना दुष्यति
२०१ दृप् गर्व करना दृप्यति
२०२ दो खण्ड करना द्यति
२०३ द्रुह द्रोह करना द्रुह्यति
२०४ नृती नाचना नृत्यति
२०५ पुष् पुष्ट करना पुष्यति
२०६ पुष्प् खिलना पुष्प्यति
२०७ भृशु भ्रष्ट होना भ्रश्यति
२०८ भ्रमु अस्थिर होना भ्राम्यति
२०९ भ्रंशु गिरना भ्रंश्यति
२१० मदी मदमस्त होना माद्यति
२११ मुह् मोहित होना मुह्यति
२१२ मृष्+(इ) सहना मृष्यति
झूठ बोलना
२१३ रञ्ज रंगना रज्यति
२१४ रुप् मोहित करना रुप्यति
दुःख सहना
२१५ लुप् मुग्ध होना लुप्यति
२१६ लुभ् चाहना लुभ्यति
२१७ व्यध् मारना विध्यति
२१८ शप् कोसना शप्यति
२१९ शमु शान्त होना शाम्यति
२२० शुच् (ईशुचिर्) पवित्र करना शुच्यति
२२१ शुध् शोधना शुध्यति
२२२ शुष् सूखना शुष्यति
२२३ शो पतला करना श्यति
२२४ श्रमु परिश्रम करना श्राम्यति
२२५ श्लिष् आलिंगन करना श्लिष्यति
२२६ ष्णिह् स्नेह करना स्निह्यति
२२७ स्विद् (ञिष्विदा) पसीना आना स्विद्यति
२२८ षिधु सिद्ध करना सिध्यति
+प्रति=प्रतिषिध्यति—मना करता है।
२२९ षिव् सिलना सीव्यति
२३० षो कार्य की समाप्ति स्यति
+व्यव=व्यवस्यति—ठीक होता है।
२३१ हृषु प्रसन्न होना हृष्यति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(५) स्वादिगण:

२३२ आप्लृ प्राप्त करना आप्नोति
+प्र=प्राप्नोति— ,,
+सम्=समाप्नोति— ,,
+अनुप्र=अनुप्राप्नोति=आता है।
२३३ क्षि नष्ट करना क्षिणोति
२३४ चिञ् चुनना चिनोति
२३५ दु (टुदु) दुःख देना दुनोति
२३६ धूञ् कांपना धूनोति
+निर्=निर्धूनोति
२३७ वृञ् वरण करना वृणोति
२३८ शक्लृ समर्थ होना शक्नोति
२३९ षिञ् बाँधना सिनोति
२४० षुञ् अभिषेक करना सुनोति

(६) तुदादिगण:

२४१ इषु चाहना इच्छति
२४२ उज्झ छोड़ना उज्झति
२४३ कृती छेदना कृन्तति
२४४ कृष् रेखा खींचना कृषति
२४५ कॄ फैलाना किरति
+अव=अवकिरति—ढकता है।
२४६ क्षि रहना, जाना, क्षियति
कर्म० क्षीयते
२४७ क्षिप् फेंकना क्षिपति
(अनिट्)+अधि=अधिक्षिपति—बुरा भला कहता है।
+परि=परिक्षिपति—इधर उधर फेंकता है।
२४८ गुफ बाँधना गुफति
२४९ गुम्फ ,, गुम्फति
२५० गॄ निगलना गिरति
२५१ छुर् काटना छुरति
२५२ णुद् प्रेरित करना नुदति
२५३ तुद् दुःख देना तुदति
२५४ तृप् तृप्त होना तृपति
२५५ त्रुट् तोड़ना त्रुटति
२५६ दिश् संकेत देना दिशति
+उप=उपदिशति—उपदेश देता है।
+उत्=उद्दिशति—लक्ष्य करता है।
+निर्=निर्दिशति—निर्देश देता है।
+आ=आदिशति—आज्ञा देता है।
समादिष्ट: आदि
२५७ निल (णिल्) घना होना छिपना निलति
२५८ प्रच्छ पूछना पृच्छति
२५९ भ्रस्ज भूनना भृज्जति
२६० मस्ज (टुमस्जो) डूबना, नहाना मज्जति
२६१ मिल (१३६४) मिलना मिलति
(श्लेषणे) (Combine)
२६२ मिल (१४२९) मिलना मिलति/ते
(संगमे) (Meet)
२६३ मुच् (मुच्लृ) छोड़ना मुञ्चति
२६४ मृड् सुखी होना मृडति
२६५ मृश् विचार करना मृशति
+वि=विमृशति—विचारता है।
२६६ रुजो तोड़ना रुजति
२६७ लिख लिखना लिखति
+उत्=उल्लिखति—उल्लेख करता है। (cites)
२६८ लिप् लीपना लिम्पति
(अनिट्) वृद्धि करना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२६९ लुप् (लुप्लृ) छेदना लुम्पति
(अनिट्, १४६६)
२७० लुभ लुभाना लुभति
२७१ विद् (विद्लृ) प्राप्त करना विन्दति
२७२ विध (सेट्) चुभोना विधति
२७३ विश् प्रवेश करना विशति
+उप=उपविशति—बैठता है।
+प्र=प्रविशति—प्रवेश करता है।
+समा=समाविशति—समावेश करता है। समाविष्टः आदि।
२७४ व्रश्च (ओव्रश्चू) काटना वृश्चति।
२७५ व्यच् ठगना विचति
२७६ षिच् सींचना सिञ्चति
२७७ सद् (षदलृ) उदास होना सीदति
+अव=अवसीदति—(वही)
+नि=निषीदति—बैठ जाता है।
२७८ सृज् रचना करना सृजति
२७९ स्पृश् छूना स्पृशति
२८० स्फुट् खिलना स्फुटति
२८१ स्फुर् उठना स्फुरति

(७) रुधादिगणः

२८२ छिदिर् काटना छिनत्ति
२८३ पिष्लृ पीसना पिनष्टि
+निस्=निष्पिनष्टि
२८४ भिदिर् भेदना भिनत्ति
२८५ भुज् भोगना भुनक्ति
२८६ युजिर् मिलाना युनक्ति
+प्र=प्रयुनक्ति—प्रयोग करता है।
+वि=वियुनक्ति—अलग करता है।
प्रयुज्यते आदि
२८७ रुधिर् रोकना रुणद्धि
२८८ हिंसि मारना हिनस्ति

(८) तनादिगणः

२८९ कृ (डुकृञ्) करना करोति
+निर्मली=निर्मली करोति स्वच्छ करना
+स्वी=स्वीकरोति मानना
+अङ्गी=अङ्गीकरोति ,,
+उररी=उररी करोति ,,
+दूरी=दूरी करोति दूर करता है।
२९० तनु फैलाना तनोति

(९) क्रयादिगणः

२९१ अश् भोजन करना अश्नाति
२९२ क्री (डुक्रीञ्) खरीदना क्रीणाति
२९३ ग्रह लेना गृह्णाति
+नि=निगृह्णाति रोकता है।
+अनु=अनुगृह्णाति दया करता है।
+प्रति=प्रतिगृह्णाति लेता है।
२९४ ज्ञा जानना जानाति
+प्रति=प्रति जानाति प्रतिज्ञा करता है।
+प्रत्यभि=प्रत्यभिजानाति=पहचानता है।
२९५ दृ चीरना दृणाति
२९६ धूञ् काँपना धुनाति
२९७ पूञ् पवित्र करना पुनाति
२९८ प्रीञ् प्रसन्न करना प्रीणाति
२९९ बन्ध बांधना बध्नाति
३०० मन्थ मथना मथ्नाति
३०१ मुष् छीनना मुष्णाति
३०२ मृद् मारना मृद्नाति
३०३ मृ मारना मृणाति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३०४ लूञ्	काटना	लुनाति
३०५ वृञ्	स्वीकार करना	वृणाति
३०६ शॄ	काटना	शृणाति

(१०) चुरादिगणः

३०७ अंक	चिह्न करना	अंकयति
३०८ अघ	पाप करना	अघयति
३०९ अर्च	पूजना	अर्चयति
३१० अर्ज	संचय करना	अर्जयति
३११ अर्द	हिंसा करना	अर्दयति
३१२ अर्ह	पूजना	अर्हयति
३१३ आप्	प्राप्त करना	आपयति
+प्र=प्रापयति,	ले जाता है।	
३१४ ईड्	स्तुति करना	ईडयति
३१५ ईर्	प्रेरित करना	ईरयति
३१६ ऊर्ज्	वल देना	ऊर्जयति
३१७ कण	आँख बन्द करना	कणयति
३१८ कथ	कहना	कथयति
३१९ कल्प	मानना	कल्पयति
३२० कुत्स	गाली देना	कुत्सयति
३२१ कॄत	प्रशंसा करना	कीर्तयति
+सम्=संकीर्तयति		
३२२ क्षल्	धोना	क्षालयति
३२३ खडि	खण्ड करना	खण्डयति
३२४ गण	गिनना	गणयति
३२५ गवेप	खोजना	गवेपयति
३२६ गर्ज	गरजना	गर्जयति
३२७ गर्ह	निन्दा करना	गर्हयति
३२८ घट्	जोड़ना	घटयति
३२९ घुषिर्	घोषित् करना	घोषयति
+उत्=उद्घोषयति		,,
३३० चर्	चलाना पता लगाना	चारयति
३३१ चल्	चलाना पालना	चालयति
३३२ चित्	शक्ति पाना	चेतयति
३३३ चित्र	कभी दीखना	चित्रयति
३३४ चूर्ण	चूर चूर करना	चूर्णयति
३३५ छद्	ढकना	छादयति
३३६ जल्	,,	जालयति
३३७ ज्ञप	जानना, जताना	ज्ञपयति
३३८ ज्ञा	प्रेरित करना	ज्ञापयति
+आ=आज्ञापयति=आज्ञा देता है		
३३९ टकि	टाँकना	टंकयति
३४० तड्	पीटना	ताडयति
३४१ तप्	तपाना	तापयति
+सं=संतापयति	दुःख देता है।	
३४२ तसि	सजाना	तंसयति
३४३ तुल	तौलना	तोलयति
३४४ तृप्	तृप्त करना	तर्पयति
+सम्=संतर्पयति		,,
३४५ तॄ	तारना	तारयति
३४६ तर्क	तर्क करना	तर्कयति
३४७ तर्ज	डांटना	तर्जयति
३४८ त्वर् (ञित्वरा)	जल्दी करना	त्वरयति
३४९ दल्	चीरना	दालयति
३५० दंशि	काटना	दंशयति
३५१ दिवु	रोना	देवयति
३५२ दुल	उठाना	दोलयति
३५३ दृ	चीरना	दारयति
३५४ धृ	धारणा करना	धारयति
+निर्=निर्धारयति	निश्चित करना	
+अव=अवधारयति	समझता है।	
३५५ धृप्	विवश करना	धर्षयति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३५६ ध्वंस् नष्ट करना ध्वंसयति
+वि=विध्वंसयति
३५७ नट् अभिनय करना नाटयति
३५८ निवास ढकना निवासयति
३५९ पक्ष पक्ष लेना पक्षयति
३६० पट् पाटना पाटयति
३६१ पत् गिराना पातयति
३६२ पश् बाँधना पाशयति
३६३ पाल पालना पालयति
परि/प्रति=परिपालयति बाट जोहना
३६४ पूज पूजना पूजयति
+प्रति पूज्य मानकर
३६५ पूञ् पवित्र करना पावयति
३६६ पूरी भरना पूरयति
३६७ प्री प्रसन्न करना प्रीणयति
३६८ पॄ भरना पारयति
३६९ प्लु बहाना प्लावयति
३७० बध् बाँधना बाधयति
३७१ बल शक्ति देना बलयति
३७२ बुक्क भूकना बुक्कयति
३७३ भक्ष खाना भक्षयति
३७४ भुव् सोचना भावयति
३७५ भर्त्स डाँटना भर्त्सयति
३७६ भ्रमु घुमाना भ्रामयति
३७७ मडि सजाना मण्डयति
३७८ मन्त्रि मंत्रणा करना मंत्रयति
+आ=आमन्त्रयति बुलाता है।
३७९ मह् सम्मान देना महयति
३८० मान मानना मानयति
+अव=अवमानयति तिरस्कार करता है
+अनु=अनुमानयति अनुमान लगाता है
३८१ मार्ग खोजना मार्गयति
३८२ मुच् छुड़ाना मोचयति
३८३ मूल जमाना मूलयति
३८४ मृग खोजना मृगयति
३८५ मृजू स्वच्छ करना मार्जयति
३८६ मृद् दबाना मर्दयति
३८७ यत् चोट पहुँचाना यातयति
३८८ यन्त्रि दबाना यन्त्रयति
३८९ युज् जोड़ना योजयति
+नि=नियोजयति स्वार्थे
३९० रस स्वाद लेना रसयति
३९१ रिच् अलग होना रेचयति
३९२ रुष् क्रोध करना रोषयति
३९३ रूप बनाना, नाट्य करना रूपयति
३९४ लक्ष देखना लक्षयति
३९५ लंघ लाँघना लंघयति
३९६ लड् प्यार करना लाडयति
३९७ लल् " लालयति
३९८ लस् कारीगरी करना लासयति
३९९ लुण्ठ चोरी करना लुण्ठयति
४०० लोकृ देखना लोकयति
+वि=विलोकयति स्वार्थे
+अव=अवलोकयति देखता है।
४०१ लोचृ विचारना लोचयति
+आ=आलोचयति समीक्षा करता है।
४०२ वच् बांचना वाचयति
४०३ वर चाहना वरयति
४०४ वञ्चु ठगना वञ्चयति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४०५ वर्ण वर्णन करना वर्णयति
४०६ वर्ध वढ़ाना वर्धयति
४०७ वात हवा करना वातयति
४०८ वास् गंध देना वासयति
४०९ वृजी रोकना वर्जयति
+आ=आवर्जयति वशीभूत करता है
४१० व्यय व्यय करना व्यययति
४११ शुध् शुद्ध करना शोधयति
४१२ शब्द बुलाना शब्दयति
४१३ श्वस् श्वास देना श्वासयति
+आ=आश्वासयति आश्वासन देता है।
४१४ षान्त्व सान्त्वना देना सान्त्वयति
४१५ सद् हटाना सादयति
+उत्=उत्सादयति हटाता है।
+प्र=प्रसादयति प्रसन्न करता है।
+वि=विषादयति दुःख देता है।
४१६ सभाज प्रीतदर्शनयोः सभाजयति
४१७ सार हटाना सारयति
+अप=अपसारयति
४१८ सुख सुख देना सुखयति
४१९ सूच चुगली करना सूचयति
४२० सूद् चोट पहुँचाना सूदयति
४२१ सृज् छोड़ना सर्जयति
+वि=विसर्जयति
४२२ स्तन शब्द करना स्तनयति
४२३ स्तेन चोरी करना स्तेनयति
४२४ स्पृह चाहना स्पृहयति
४२५ स्वर बोलना स्वरयति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आत्मनेपदिन:

१. भ्वादिगण:

४२६ अंक चिह्नित करना अंकते
४२७ अय् जाना अयते
परायते/पलायते भागता है।
४२८ ईक्ष् देखना ईक्षते
+निर्=निरीक्षते निरीक्षण करता है
+प्रति=प्रतीक्षते प्रतीक्षा करता है।
+सम्=समीक्षते समीक्षा करता है।
+प्र=प्रेक्षते (स्वार्थे)
+अव्=अवेक्षनें देखता है।
+अनु=अन्वीक्षते जाँचता है।
अवेक्षमाण: आदि
४२९ ईष् देखना ईषते
+प्र=प्रेषते भेजता है।
(प्रेषयति)
४३० ईह् चाहना ईहते
+सम्=समीहते चाहता है।
४३१ ऊह् तर्क करना ऊहते
४३२ प्याय (ओप्यायी) बढ़ना प्यायते
४३३ एज् काँपना एजते
४३४ कत्थ प्रशंसा करना कत्थते
+वि=विकत्थते बढ़कर बात करना
४३५ कमु चाहना कामयते
४३६ कल गिनना कलयते
४३७ क्लृप् मानना कल्पते
४३८ काशृ चमकना काशते
+प्र=प्रकाशते स्वार्थे
४३९ कुर्द खेलना-कूदना कूर्दते

४४० कृपू समर्थ होना कल्पते
४४१ क्रंदि रोना, चिल्लाना क्रन्दते
४४२ क्रप् कृपा करना क्रपते
४४३ क्लिदि दु:खी होना क्लिंदते
४४४ क्लेश दु:ख देना क्लेशते
४४५ क्षमू सहना क्षमते
४४६ क्षुभ क्षुभित होना क्षोभते
४४७ खनिर् खोदना खनते
४४८ गर्ह निन्दा करना गर्हते
४४९ गाह थाह लेना गाहते
४५० गुहू छिपाना गूहते
४५१ ग्रथि टेढ़ा होना ग्रथते
४५२ ग्रसु डसना ग्रसते
४५३ घट घटित होना घटते
+सम्=संघटते संगठित होता है।
४५४ चेष्ट चेष्टा करना चेष्टते
४५५ जृभि जम्हाई लेना जृम्भते
४५६ त्वर् (ञित्वरा) जल्दी करना त्वरते
४५७ डीङ् उड़ना डयते
४५८ लभ् (डुलभष्) पाना लभते
४५९ तिज् सहना (प्राय: सन्नन्त) तितिक्षते
४६० त्रपूष् लज्जा करना त्रपते
४६१ त्रैङ् बचाना त्रायते
४६२ दक्ष् समर्थ होना दक्षते
४६३ दद् देना ददते
४६४ दीक्ष् मुण्डनादि करना दीक्षते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४६५ देकृ उत्साह दिखाना द्रेकते
+उत्=उत्द्रेकते स्वार्थे
४६६ द्युत् चमकना द्योतते
४६७ धृङ् नाश करना धरते
४६८ ध्वंसु गिरना ध्वंसते
४६९ पूङ् पवित्र करना पवते
४७० प्रथ प्रसिद्ध होना प्रथते
४७१ प्लुङ् तैरना प्लवते
+आ=आप्लवते उछलता है।
उत्प्लुत्य कूदकर
४७२ वाधृ प्रतिघात करना बाधते
४७३ बुधिर् जगना बोधते
४७४ भाष् बोलना भाषते
४७५ भ्रासृ चमकना भासते
४७६ भ्राजृ ,, भ्राजते
४७७ भिक्ष् माँगना भिक्षते
४७८ भ्रंशु गिरना भ्रंशते
४७९ मडि सजाना मण्डते
४८० मदि गर्व करना मन्दते
४८१ मुचि अभिमान करना मुञ्चते
४८२ मुडि मूँड़ना मुण्डते
४८३ मुद् प्रसन्न होना मोदते
४८४ यती यत्न करना यतते
४८५ याच् (टुयाचृ) मांगना याचते
४८६ रञ्ज रंगना रजते
४८७ रभ् आरम्भ करना रभते
+प्र=प्रारभते=आरमते (स्वार्थे)
४८८ रमु रमण करना रमते
४८९ राजृ शोभित होना राजते
४९० रुच् अच्छा लगना रोचते
४९१ रेभृ शब्द करना रेभते

४९२ लंघ लाँघना लंघते
४९३ लस्ज लज्जा करना लज्जते
४९४ लवि लटकना लम्बते
+आलम्बते (स्वार्थे)
४९५ लोकृ देखना लोकते
४९६ लोचृ विचारना लोचते
४९७ वकि टेढ़ा होना वंकते
४९८ वदि प्रणाम करना वन्दते
४९९ वृत् विद्यमान होना वर्तते
+अति=अतिवर्तते बीतता है।
+प्र=प्रवर्तते चलता है।
+अनु=अनुवर्तते अनुगमन करता है
+परा=परावर्तते निवर्तते या
प्रत्यावर्तते = लौटता है।
५०० वृधू बढ़ना वर्धते
५०१ वेप् (टुवेपृ) कांपना वेपते
५०२ वेष्ट (२६४) लपेटना वेष्टते
५०३ व्यथ् दुःखी होना व्यथते
५०४ शकि शंका करना शंकते
५०५ शद् (शद्लृ) नष्ट होना शीयते
५०६ शप् शाप देना शपते
५०७ शिक्ष् सीखना शिक्षते
५०८ शुभ् शोभा देना शोभते
५०९ श्लाघृ प्रशंसा करना श्लाघते
५१० श्लोकृ धर्मादि संचय श्लोकते
करना, श्लोक लिखना
५११ ष्टभि रोकना स्तम्भते
५१२ ष्मिङ् मुस्कराना स्मयते
५१३ षह सहन करना सहते
+उत्=उत्सहते साहस करता है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५१४ सूद् मारना सूदते
५१५ सेव् सेवा करना सेवते
+ उप = उपसेवते ,,
+ अनु = अनुसेवते–सेवा करता है।
+ नि = निसेवते सेता है
५१६ स्पदि हिलना स्पन्दते
५१७ स्पर्द्ध स्पर्द्धा करना स्पर्द्धते
५१८ स्फुट् खिलना स्फोटते
५१९ स्यन्दू झरना स्यन्दते
५२० स्वज् (ष्वञ्ज) मिलना स्वजते
५२१ स्वाद् स्वाद लेना स्वादते
५२२ स्विद् (ञिष्विदा) पसीना आना स्विदते
५२३ स्रंस् गिरना स्रंसते
५२४ ह्लाद् प्रसन्न होना ह्लादते

(२) अदादिगणः

५२५ आस् बैठना आस्ते
+ उप = उपास्ते–उपासना करता है।
५२६ इङ् अध्ययन करना अधीते
(यह सदा अधि पूर्वक रहता है)
५२७ ईड् स्तुति करना ईट्टे
५२८ ईर् जाना ईर्ते
५२८ (अ) चक्षिङ् कहना चष्टे
५२९ ब्रूञ् बोलना ब्रूते
५३० आ + शासु = आशा करना–आशास्ते
५३१ शीङ् सोना शेते

(३) जुहोत्यादिगणः

५३२ दा (डुदाञ्) देना दत्ते
५३३ धा (डुधाञ्) धारण करना धत्ते
५३४ माङ् नापना मिमीते
५३५ हा (ओहाङ्) जाना जिहीते

(४) दिवादिगणः

५३६ क्लिश् दुःखी होना क्लिश्यते
५३७ खिद् (अनिट्) दीन होना खिद्यते
५३८ जनी पैदा होना जायते
५३९ डीङ् उड़ना डीयते
५४० तप् तपना तप्यते
५४१ दीप् जलाना दीप्यते
५४२ दूङ् दुःखी होना दूयते
५४३ धीङ् आधारित होना धीयते
५४४ पद (अनिट्) चलना पद्यते
+ उप = उपपद्यते = ठीक होता है।
+ प्रति = प्रतिपद्यते = पालन करता हैं।
+ आ = आपद्यते = आता है।
+ सम् = सम्पद्यते = सम्पन्न होता है।
निस् = निष्पद्यते = किया जाता है।
५४५ पीङ् पीना पीयते
५४६ प्रीङ् तृप्त होना प्रीयते
५४७ बुध् समझना बुध्यते
५४८ मन् मानना मन्यते
+ अनु = अनुमन्यते = (स्वार्थे)
+ अव = अवमन्यते = कम मानना है अनादर करता है।
५४९ माङ् नापना मायते
५५० युज् मिलना युज्यते
५५१ युध् लड़ना युध्यते
५५२ रुध् रोकना रुध्यते
+ अनु = अनुरुध्यते–अनुरोध करता है।
५५३ लीङ् लीन होना लीयते
५५४ वाशृ चिल्लाना वाश्यते
५५५ विद् होना विद्यते
५५६ व्रीङ् वरण करना व्रीयते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५५७ षूङ् प्रसव करना सूयते
५५८ सृज् छोड़ना सृज्यते

(५) स्वादिगणः

५५९ अशूङ् भरना-इकट्ठा करना अश्नुते
५६० चिञ् चुनना चिनुते
५६१ धूञ् काँपना धूनुते
५६२ षुञ् रस खींचना सुनुते

(६) तुदादिगणः

५६३ जुषी सद् व्यवहार करना जुषते
५६४ तुद् पीड़ा देना तुदते
५६५ दृङ् + आ आदर पाना आद्रियते
५६६ नुद् प्रेरित करना नुदते
५६७ मिल् मिलना मिलते
५६८ मुच्लृ छोड़ना मुञ्चते
५६९ मृङ् मरना म्रियते
५७० लज् (ओलजी) लजाना लजते
५७१ विज् (ओविजी) डरना विजते
+ उद् = उद्विजते दुःखी होता है।
५७२ विद्लृ पाना विन्दते
५७३ षिच् सींचना सिञ्चते
५७४ षद्लृ नष्ट होना शीयते

(७) रुधादिगणः

५७५ छिदिर् काटना छिन्ते
५७६ भिदिर् भेदना भिन्ते
५७७ भुज् खाना भुंक्ते
५७८ युजिर् मिलाना युंक्ते
५७९ रुधिर् रोकना रुन्धे

(८) तनादि गणः

५८० (डु) कृञ् करना कुरुते
५८१ तनु फैलाना तनुते
५८२ मनु मानना मनुते

(९) क्रयादिगणः

५८३ डुक्रीञ् खरीदना क्रीणीते
५८४ ग्रह् ग्रहण करना गृह्णीते
५८५ ज्ञा जानना जानीते
५८६ धूञ् काँपना धुनीते
५८७ पूञ् पवित्र करना पुनीते
५८८ प्रीञ् तृप्ति, शोभा प्रीणीते
५८९ लूञ् छेदना लुनीते
५९० वृञ् वरण करना वृणीते

(१०) चुरादिगणः

५९१ प्र + अर्थ प्रार्थना करना प्रार्थयते
५९२ चुर् चुराना चोरयते
५९३ दीप् चमकना दीपयते
५९४ मद् आनन्द देना मादयते
५९५ शद् तेज करना शातयते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिच्छेद ३

इन धातुओं के व्यवहार में आने वाले रूप को क्रिया पद कहते हैं। धातु से क्रिया-पद बनाने से पहले कुछ पारिभाषिक शब्दों का समझना आवश्यक है। जैसे—१ धातु, २ गण, ३ लकार, ४ पद, ५ तिङ्, ६ शित्, ७ पित्–अपित्, ८ उपधा, ९ सार्वधातुक, १० सनाद्यन्त धातु, ११ अभ्यास, १२ आदेश-आगम, १३ विकरण।

१. **धातु**—क्रियापद का मूल अंश धातु कहलाता है। इसी में क्रियापद बनाने के लिए तिङ् प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे अट् धातु है, अटति क्रियापद है, पठ् धातु है, पठति क्रियापद है।

२. **गण**—धातुओं का मूलरूप अलग अलग होता है। यदि ऐसा न होता तो अलग-अलग बातों पर हमारा बोलना सम्भव ही न होता। इसी बात को इस प्रकार कह सकते हैं कि मानव ने अपने अलग-अलग विचार प्रकट करने के लिए एक नये मूल शब्द की परिकल्पना की है। भाषा का मूल यही है। हर भाषा में धातुओं को उनके स्वरूप के अनुसार अलग-अलग वर्गों में बाँटा गया है। संस्कृत में इनको दस वर्गों में बाँटा गया है। इन्हीं वर्गो को गण कहते हैं। इनका नाम वर्गो की पहली धातु के नाम पर है। यहाँ इनके सामने धातुओं की संख्या, उनमें से चुनी हुई धातुओं की संख्या तथा उनमें लगने वाला विकरण भी दिया गया है।

क्रम	गण का नाम	कुल धातु संख्या	विकरण	चुनी गयी धातु संख्या: परस्मैपदी	चुनी गयी धातु संख्या: आत्मनेपदी	योग
१	भ्वादि (भू + आदि)	१०१०	शप्	१४९	९९	२४८
२	अदादि (अद् + आदि)	७२	शप्कालोप	२७	०७	३४
३	जुहोत्यादि (जुहोति + आदि	२४	श्लु	०८	०४	१२
४	दिवादि (दिव् + आदि)	१४१	श्यन्	४७	२३	७०
५	स्वादि (सु + आदि)	३४	श्नु	०९	०४	१३
६	तुदादि (तुद् + आदि)	१५७	श	४१	१२	५३
७	रुधादि (रुध् + आदि)	२५	श्नम्	०७	०५	१२
८	तनादि (तन् + आदि)	१०	उ	०२	०३	५
९	क्र्यादि (क्री + आदि)	६१	श्ना	१६	०८	२४
१०	चुरादि (चुर × आदि)	४१०	णिच्	११९	०५	१२४
		१९४४		४२५	१७०	५९५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार धातुओं की कुल संख्या १९४४ है। इनमें से लगभग एक तिहाई ६०० ही जान लेने से हमारा सारा काम चल जाता है। इनके सभी लकारों के रूप बनाने के लिए २७२ सूत्रों की सहायता लेनी पड़ती है। उनमें से पाँच लकारों में केवल १७५ सूत्र ही लगते है जिनसे लट्, लोट्, लृट्, लङ् और विधि लिङ् के सभी गणों के रूप बन जाते हैं। सामान्यतया हम इन्हीं लकारों में व्यवहार करते है।

३. **लकार**—संस्कृत में लकार क्रिया की अवस्था का नाम है। जैसे गच्छति (जाता है) वर्तमान काल की क्रिया है। इसे लट् लकार का क्रियापद कहते हैं। पर इससे यह न समझना चाहिए कि लकार केवल काल ही बताता है। जैसे गच्छ (जाओ), गच्छतु (जाये) ये लोट् लकार के रूप हैं।

संस्कृत में लकार भी दस होते हैं। ये इस प्रकार हैं--लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ्, लृङ्, आशीर्लिङ्। इनके अतिरिक्त एक लकार लेट् और होता है। पर अब इसका प्रयोग वैदिक संस्कृत में ही रह गया हैं। आज हम जो संस्कृत लिखते और बोलते हैं वह लौकिक कही जाती है। लौकिक संस्कृत वैदिक संस्कृत से भिन्न है। हर भाषा में समय के बीतते बीतते कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है जो बहुत समय बाद स्पष्टतया दिखायी देता है। जैसे १२वीं शताब्दी की हिन्दी और आज की हिन्दी में बड़ा अन्तर है। इसी तरह वैदिक संस्कृत से निकल कर लौकिक संस्कृत कुछ भिन्न हो गयी है। आज का समाज प्राचीन काल की तरह सभी लकारों का प्रयोग नहीं करता। इनमें से केवल पाँच ही जान लिये जायँ तो भी हमारा काम चल जाता है। ये पांच हैं--लङ् (भूत), लट् (वर्तमान), लृट् (भविष्य), लोट् (आज्ञा) तथा विधिलिङ् (चाहिये अर्थवाला)।

४. **पद**—वैसे तो व्याकरण में जब किसी शब्द में सुप् (संज्ञा में जुड़ने वाला प्रत्यय) या तिङ् (धातु में जुड़ने वाला प्रत्यय) जुड़ा होता है तो उसे पद कहते हैं। पर यहाँ पर **परस्मैपद**, **आत्मनेपद**, अथवा **उभयपद** के साथ जो पद शब्द जुड़ा हैं उससे हमारा तात्पर्य है। इस पद के कहने से क्रिया के स्वरूप में एक विशेष गुण का पता चलता है। किसी क्रिया का प्रयोग करने वाला उसका किस अभिप्राय से प्रयोग करता है यह उस पद के नाम से ज्ञात हो जाता है। मूलत: पद दो होते हैं–परस्मैपद तथा आत्मनेपद। जिस धातु में परस्मैपद प्रत्यय लगते हैं वह परस्मैपदी जिसमें आत्मनेपद प्रत्यय लगते हैं वह आत्मनेपदी कही जाती है। कुछ धातुओं में दोनों तरह के प्रत्यय लगते हैं। ऐसी धातुओं को उभयपदी कहते हैं। कभी-कभी धातु में उपसर्ग लगने पर पद बदल जाते हें। मूल बात यह है कि समाज में धातुओं के प्रयोग तीन प्रकार से होते हैं :–

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(i) भवति, पचति, गच्छति--परस्मैपद का स्वरूप है।

(ii) सेवते, शोभते, रोचते—आत्मनेपद का स्वरूप है।

(iii) वहति, वहते, करोति, कुरुते--उभयपद के स्वरूप हैं।

परिवर्तन इस प्रकार होता हैं जैसे—तिष्ठति परस्मैपदी है, अव + तिष्ठति = अवतिष्ठते, आत्मनेपदी है। रमते आत्मनेपदी है, विरमति परस्मैपदी। अर्थात् दोनों ओर इनका परिवर्तन सम्भव है।

५. **तिङ्**—प्रत्येक पद में ९ प्रत्यय जोड़े जाते हैं। इन प्रत्ययों में पहला अक्षर ति है और अन्तिम ङ् है। अत: इन्हें ति + ङ् = तिङ् कहते हैं। ये तिङ् प्रत्यय जिसमें जुड़े हों वही तिङन्त होता है। तिङन्त धातु का वह रूप है जो प्रयोग में आता है। ये प्रत्यय इस प्रकार हैं --

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष	प्रथम पु०	मध्यम पु०	उत्तम पुरुष
एक वचन	तिप्	सिप्	मिप्	त	थास्	इड्
द्विवचन	तस्	थस्	वस्	आताम्	आथाम्	वहि
बहुवचन	झि	थ	मस्	झ	ध्वम्	महिङ्

६. **शित्**—श् + इत् = शित् अर्थात जिससे श् गिर जाता है उस प्रत्यय को शित् कहते हैं। जैसे शप्, श, श्यन्, श्ना सभी शित् हैं।

७. **पित्**—अपित् प् + इत् = पित् अर्थात् जिस प्रत्यय से प् गिर जाता है उसे पित् कहते हैं। जिससे प् न गिरे वह अपित्। कभी कभी प् नहीं गिरता तो भी उसे अपित् मान लेते हैं। जैसे श अपित् है क्योंकि वह पित् नहीं है। शप् ऐसा प्रत्यय है जिससे श् और प् दोनों गिरते हैं। अत: यह शित् भी है तथा पित् भी है। यहां शंका उठती है कि जब **इन अक्षरों को गिराना ही था तो लाया ही क्यों गया** ? इसके पीछे बड़ा रहस्य है। ये अक्षर झंडियों का काम करते हैं। प् के गिराने से हम चाहते हैं कि प्रत्यय आने पर धातु का गुण हो, श् के गिराने से हम चाहते हैं कि वह केवल सार्वधातुक लकार में ही लगे। ये बातें आगे अधिक स्पष्ट होंगी जब इन्हें जोड़ा जायगा।

८. **उपधा**—किसी शब्द के अन्तिम वर्ण से पूर्व वर्ण को उपधा कहते हैं। जैसे-षिध् में अन्तिम वर्ण ध् है तथा उपधा में इ है। इसी प्रकार शुच् में उपधा उ है। पतत् में पहले त का अ उपधा में हैं। ऐसी धातु को जिसकी उपधा में ह्रस्व स्वर हो लघूपध कहते हैं। (लघु + उपधा)

5500

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

९. सार्वधातुक/आर्धधातुक—तिङ् और शित् को सार्वधातुक प्रत्यय कहते हैं। इनको छोड़कर धातुओं में जुड़ने वाले अन्य प्रत्यय आर्धधातुक कहे जाते हैं।

१०. सनाद्यन्ता धातवः—(३-१-३२) धातु के लिए भूवादयो धातवः कहा गया है। अर्थात् भू इत्यादि धातुएँ हैं। इन्हीं से तिङ् प्रत्यय आयेंगे। पर जो शब्द धातुओं में कुछ और प्रत्यय जोड़ने से मूल धातु नहीं रहते, उनके लिए यह शंका हुई कि क्या वे भी धातु हैं, तो निर्णय है कि सन् आदि १२ प्रत्यय जिनमें जुड़े हों वे भी धातु माने जायँ। ये प्रत्यय सन्, क्यच्, काम्यच्, क्यङ्, क्यष्, यङ्, क्विप्, यक्, आय, इयङ्, णिङ्, तथा णिच् हैं।

११. अभ्यास—जब किसी धातु का दो बार प्रयोग किया जाता है तो पहले वाले को अभ्यास कहते हैं। इसके लिए पाणिनि ने सूत्र लिखा है – "**पूर्वोऽभ्यासः**" (६-१-४)। जैसे पत् पत् कहें तो पहला पत् अभ्यास कहा जायगा। इसका जुहोत्यादि गण की धातुओं में तथा लिट् लकार में बहुत काम पड़ता है क्योंकि इनमें सभी धातुओं का द्वित्व करना पड़ता है।

१२ आदेश–आगम—किसी को हटाकर जो बैठे उसे आदेश कहते हैं, और यदि बिना हटाये बैठें तो आगम कहते हैं। जैसे पा का पिब आदेश है, और नद् में नुम् का आगम है जिससे नन्द बनता है। रूप बनाते समय ये अधिक स्पष्ट होंगे।

१३. विकरण—धातु और तिङ् के बीच में प्रायः एक शब्दांश और जोड़ा जाता है। इससे धातु के रूप बनाने में सुविधा होती है। इसका अपना कोई अर्थ नहीं होता। इसी को विकरण कहते हैं, जैसे नृत् + य + ति में य विकरण है। यह गण के अनुसार धातु के स्वरूप को साधने में सहायक होता है। इसीलिए हर गण में विकरण का अलग-अलग स्वरूप रखा गया है।

उपर्युक्त पारिभाषिक शब्दों के सामान्य परिचय के साथ धातुओं में प्रत्ययों को जोड़ना बताया जा रहा है। लट् लकार से हम आरम्भ करते हैं। लट् वर्तमान काल को बतलाता है। इसमें भी पहले परस्मैपदी धातुओं के रूप बनाये जा रहे हैं। यह कार्य दूर से कठिन लगता है पर अत्यन्त सरल है। अधिकतर व्याकरण लिखने वाले "भू" धातु से प्रारम्भ करते हैं। यहाँ ऐसा नहीं किया गया। हमारी सूची में जो भी पहले है उसी को लिया गया है। इस सूची से यह भ्रम भी न करना चाहिए कि केवल इतनी धातुओं के रूपों का ही ज्ञान होता है। इनसे वस्तुतः सभी धातुओं (लगभग दो हजार) का ज्ञान सम्भव है। सूची अकारादि क्रम में रखी गयी है जिससे रूप खोजने में सुविधा रहे।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१) लट् लकारः (परस्मैपदम्)

(१) भ्वादिगणः (विकरण शप्)

अक् + तिप् आने पर

सूत्र १ कर्तरि शप् (३-१-६८) कर्त्ता अर्थ में धातु से शप् आवे। शप् से श् और प् गिर जाते हैं, केवल "अ" शेष रहता है। अतः अक् + अ + ति = अकति। यहाँ तिप् का प् भी गिर जाता है। इसे इसलिए रखा गया है कि यह भी पित् बन जाय। जहां पित् प्रत्यय लगता है वहां धातु को गुण होता है। आगे अक् + अ + तस् = अकतः बनता है। यहाँ तस् के स् का रु (सन्धि १९) रु से र् (उ गिरने पर) और र् का विसर्ग हो जाता है। (सन्धि १६)। इससे यह ध्यान रखना है कि अन्त में जहाँ भी स् आवे वहाँ विसर्ग कर देना है।

अक् + अ + झि आने पर

सूत्र २ झोऽन्तः (७-१-३) झ् के स्थान पर अन्त् हो जाय। चूँकि मूल प्रत्यय में झि है और यहाँ केवल झ् के स्थान में अन्त् किया है।

अतः झि का अन्ति बनता है। अक् + अ + अन्ति = अकन्ति। अक + अन्ति यहाँ अ + अ मिलकर दीर्घ हो जाता पर लोक में अकन्ति ही प्रयोग में आता है, अतः एक सूत्र और लगाना पड़ता है।

सूत्र ३ अतो गुणे (६-१-९७) यदि कहीं अपदान्त अ से परे गुण हो तो दोनों के स्थान में पर रूप हो जाय। यहाँ पहला अ पद के अन्त में नहीं है अतः अपदान्त हुआ, उससे परे दूसरा अ गुण है अतः दोनों मिलकर दीर्घ नहीं होते, बल्कि पररूप ही रहा और अकन्ति रूप बन गया।

मध्यम पुरुष में अक् + अ + सिप आने पर

तिप् की तरह सिप् का प् भी इत् है। अतः यह भी गिर जाता है। प् गिरने से यह भी पित् माना जाता है। अकसि। आगे अक् + अ + थस् = अकथः (थस् के स् के स्थान पर तस् की भांति विसर्ग करके) अक् + अ + थ = अकथ।

उत्तम पुरुष में अक् + अ + मिप् = अकमि होने पर (मिप् का प् इत् है।)

सूत्र ४ अतो दीर्घो यञि (७-३-१०१) अदन्त अङ्ग से यञादि प्रत्यय परे रहने पर अङ्ग को दीर्घ हो जाय। यहाँ शप् के अ आने से अक अदन्त है और मिप्, वस, मस् तीनों प्रत्यय यञादि हैं क्योंकि म और व दोनों यञ् में आते हैं। अतः अकामि रूप बनता है। अक् + अ + वस् = अकावः (स् के स्थान में रुत्व तथा विसर्ग करके)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अक् + अ + मस् = अकामः (स् का रुत्व विसर्ग करके)

इस प्रकार अक् के सभी रूप निम्नलिखित होते हैं ।

अकति — अकसि — अकामि

अकतः — अकथः — अकावः

अकन्ति — अकथ — अकामः

इसी आधार पर निम्नलिखित धातु रूप भी बन जायेंगे—

२ अटति, ३ अञ्चति, ४ अतति, ५ अर्घति, ६ अर्चति, ७ अर्जति, ८ अर्दति, ९ अर्हति, १० अलति, ११ अवति, १२ ईर्ष्यति, १४ एजति, १५ कठति, १७ कीलति १८ कुञ्चति, १९ कूजति, २३ क्वणति, २४ क्रीडति, २६ क्षरति, २९ खञ्जति, ३० खनति, ३१ खादति, ३२ खेलति, ३३ गदति, ३८ गर्जति, ३९ गर्वति, ४१ घसति ४३ चरति, ४४ चर्वति, ४५ चलति, ४८ चूषति, ४९ जयति, ५१ जीवति, ५२ जल्पति, ५३ ज्वरति, ५४ ज्वलति, ५५ तपति, ५६ तूषति, ५८ तर्जति, ५९ त्यजति, ६० दलति, ६२ दहति, ७१ नटति, ७२ नदति, ७३ नर्मति, ७६ नर्दति, ७७ पचति, ७८ पठति, ७९ पतति, ८२ दूषति, ८३ फलति, ८४ फुल्लति, ८७ भजति, ८८ भणति, ९० भूषति, ९४ मथति, ९५ मन्थति, ९६ महति, ९७ मीलति, ९८ मूर्छति, १०१ यजति. १०३ रक्षति १०४ रटति, १०५ रणति, १०९ लजति, ११० लपति, १११ लषति, ११२ लसति, ११३ लुञ्चति, ११६ वजति, ११७ वदति, ११८ वनति, ११९ वपति, १२० वमति, १२१ वसति, १२२ वहति, १२५ वेलति, १२६ वेल्लति, १२७ व्रजति, १२८ शंसति, १२९ शपति, १३० शमति, १३२ शूलति, १४१ स्खलति, १४२ स्तनति, १४५ हसति, १४८ ह्लसति ।

६१ दंश् + अ + ति आने पर

सूत्र ५ दंशसञ्जस्वञ्जां शपि—(६-४-२५) दंश, सञ्ज और स्वञ्ज धातुओं के उपधा वाले नकार का लोप हो यदि उससे परे शप् हो । इसके अनुसार दशति रूप बनता है । आगे सारी प्रक्रिया अकति की तरह करनी है । षञ्ज से सजति बनता है (देखें सूत्र १०) स्वञ्ज आतमनेपद में मिलेगा ।

८९ भू- भू + अ + ति आने पर

सूत्र ६ सार्वधातुकार्धधातुकयोः – (७-३-८४) सार्वधातुक या आर्धधातुक प्रत्यय आने पर इगन्त अंग को गुण हो जाय । इगन्त का अर्थ है जिसके अन्त में इक् (इ उ ऋ ऌ) हो । गुण का अर्थ है अ, ए, ओ । इसके अनुसार धातु की अन्तिम इ को ए, उ को ओ, ऋ को अर् और ऌ का अल् हो जाता है । यहा भू ऐसा अंग है जिसके अन्त में उ है,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इससे परे शप् का अ है जो सार्वधातुक प्रत्यय है। इस आधार पर जहाँ भी शप् का "अ" रहेगा या अन्य कोई आर्धधातुक प्रत्यय होगा वहाँ इक् को गुण हो जायगा। तब भू से भो होकर भो + अ + ति = भवति बनता है। (यहाँ ओ का अव् होता है।) (देखें सन्धि ५) शेष रूप इसी प्रकार--

भू + अ + तस् = भो + अ + तस् = भवतः
भू + अ + झि = भो + अ + अन्ति, भवन्ति (देखें अतो गुणे)
भू + अ + सिप् = भो + अ + सि = भवसि, आगे भवथः, भवथ, भवामि, भवावः, भवामः (देखें सूत्र ४) इसी तरह—

२७ क्षयति, ५० जयति, ५७ तरति, ६४ द्रवति, ६७ धरति, ७५ नयति, ९१ भरति, १३३ श्रयति, १३८ स्रवति, १४३ स्मरति, १४६ हरति के रूप बनते हैं।

१३१ शुच्— शुच् + अ + ति आने पर

सूत्र ७ पुगन्तलघूपधस्य च—(७-३-८६) जिस धातु के अन्त में पुक् हो (पर्ग का कोई वर्ण) या जिसकी उपधा में ह्रस्व स्वर हो तो उसकी उपधा के स्वर को भी गुण हो जाय। जैसे शुच् की उपधा में "उ" है, षिध् की उपधा में ह्रस्व इ है, तो शुच् से शोच् और षिध् से षेध् बनता है। अतः शोच् + अ + ति = शोचति, शेष कार्य अक् की भाँति करके अन्य रूप बनेंगे। इसी आधार पर २० कर्षति, २५ क्रोशति, ४६ चेतति, ६८ धर्षति, ८५ बोधति, ९९ मर्षति, १०७ रोषति, १०८ रोहति, ११४ लोठति, १३६ सेधति, १४० सर्पति, १४७ हर्षति आदि रूप बनते हैं। सेधति के ष् से स् करने को देखें सूत्र १०।

७४ टुनदि–नदि + अ + ति आने पर

सूत्र ८ आदिर्ञिटुडवः—(१-३-५) धातु के प्रारम्भ में आये ञि, टु और डु की इत् संज्ञा होती है। इत् संज्ञा करने का फल उस अक्षर को गिराना होता है। ये गिर कर भी कुछ कह जाते हैं। जैसे यहाँ टु है, वैसे ही ११९ में डु तथा १७५ में ञि है। इनका रहना और गिरना आगे रूपों में फलित होगा।

टु गिरने पर नदि + अ + ति शेष रहा। इसमें नदि का इ भी इत् है। यह भी साभिप्राय हैं और आगे फलित होता हैं।

सूत्र ९ इदितो नुम् धातोः—(७-१-५८) जिस धातु से इ का लोप होता है उसमें नुम् का आगम होता है, इसमें नदि से इ गिरने पर नद् रहा, अतः न् जुड़ने पर नन्द बना। यहाँ न् जोड़ने के लिए नुम् इसलिए कहा कि वह मित् हो जाय। मित् सदा अन्त्य अच् के बाद आता है। नुम का उम गिर जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(देखें मिदचोऽन्त्यात् परः), अतः नन्द् + अ + ति = नन्दति, आगे नन्दतः, नन्दन्ति । इसी प्रकार १६ कांक्षति, २१ क्रन्दति, ३५ गुञ्जति, ४७ चुम्बति, ८१ पुन्थति, ८६ बृंहति, ९३ मण्डति, १०६ रुण्ठति, ११५ लुण्ठति, १२३ वांछति रूप बनते है ।

१३५ षञ्ज्+अ+ति आने पर

सूत्र १० धात्वादेः षः सः—(६-१-६४) धातु के आदि षकार के स्थान पर स् हो जाय । इसी कोटि में षिध् भी आता है ।

अतः सज् + अ + ति = सजति, सजतः सजन्ति आदि ।

१३६ षिध् — सेधति — सेधतः, सेधन्ति आदि ।

८०—पा पा + अ + ति आने पर

सूत्र (११) पा–घ्राध्मास्थाम्ना–दाण् दृशि अर्ति सर्ति शद्सदां–
पिब जिघ्र धम तिष्ठ मन यच्छ पश्य ऋच्छ धौ शीय सीदाः । (७–३–७८)

अर्थात् पा घ्रा ध्मा स्था म्ना दाण् दृशि ऋ, सृ, शद और सद् के स्थान पर क्रमशः पिब, जिघ्र, धम, तिष्ठ, मन यच्छ, पश्य, ऋच्छ, धौ, शीय् और सीद आदेश हो जाते हैं यदि इनसे परे शकारादि सार्वधातुक प्रत्यय हो । इनमें से शीय् और सीद् को छोड़कर शेष सभी भ्वादिगण की धातुएँ हैं । शीय् इसी की आत्मनेपदी धातु है, सीद् तुदादिगण की २७७ है । अतः इन धातुओं के रूप बनाने के लिए सार्वधातुक लकारों में इनके आदेशों में प्रत्यय जोड़े जाते हैं । सार्वधातुक लकार लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् होते हैं । इनसे अतिरिक्त अन्य लकारों में मूल धातु में ही प्रत्यय लगाये जाते हैं । यही कारण है कि पाणिनि को ये आदेश करने पड़े ।

अतः पिब + अ + ति = पिबति (अतोगुणे से अ ही रहा) आगे १३ ऋच्छति, ४२ जिघ्रति, ६३ यच्छति, ६५ पश्यति, ६९ धमति, १०० मनति, १३७ तिष्ठति, १३९ धावति ।

३४ गम् + ति आने पर, गम् + अ + ति

सूत्र १२ इषुगमियमां छः (७-१-७७) इष्, गम और यम् धातुओं का छकार आदेश हो शित् प्रत्यय परे रहते ।

यह छ अन्तिम वर्ण के स्थान पर होता है । अतः गम् + छ से ग + छ इष् + छ से इ छ, यम् + छ से य छ आने पर अगले सूत्र से तुक् का आगम होता है ।

सूत्र १३ छे च—(६-१-७३) ह्रस्व से परे यदि छ हो तो तुक् का आगम हो जाय । तुक् में से केवल त रह जाता है, शेष गिर जाता है अतः ग + त + छ, इ+त+ छ,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

य+त्+छ स्थिति बनती है। छ के साथ त् का चवर्ग च् होकर गच्छ, इच्छ, यच्छ स्वरूप बन जाते हैं। इनमें तिप् आदि लगकर गच्छति, इच्छति यच्छति रूप बनते हैं। इसी आधार पर १०२ यम से यच्छति, यच्छतः यच्छन्ति रूप होते हैं। इच्छति तुदादिगण में आता है।

सूत्र १४ णो नः—(६-१-६५) धातु के आदि णकार को नकार आदेश हो जाय। जैसे—

७१ णट् = नट्, नटति, नटतः, नटन्ति आदि।

७२ णद = नद्, नदति, नदतः, नदन्ति। ,,

७३ णम् = नम्, नमति, नमतः, नमन्ति। ,,

७५ णीञ् = नी, नयति, नयतः, नयन्ति। ,,

यहाँ विचारने की एक बात हैं कि पहले ण और बाद में न होने पर यह कैसे पता लगेगा कि पहले कौन ण था, कौन न। इसका उत्तर स्वयं भाष्यकार ने दिया है। **"णोपदेशास्तु अनर्द नटि नाथ नाधृ नन्द नक्क नृ नृतः"** अर्थात् नर्द, नट्, नाथ, नाधृ, नन्द नक्क, नृ, नृती इन आठ धातुओं को छोड़कर शेष सभी नकारादि धातु णोपदेश हैं। इसका मन्तव्य यह है कि जिन धातुओं के आरम्भ में ण है उनका णत्व करने वाले उपसर्ग आने पर णत्व होगा अन्यथा नहीं।

जैसे णम्—नमति—प्रणमति (प्र आने पर)

नन्द—नन्दति—प्रनन्दति (प्र होने पर भी नहीं हुआ)

सूत्र १५ श्रुवः श्रृ च—(३-१-७४) श्रु धातु को श्रृ आदेश हो और श्नु प्रत्यय भी। यह विकरण यद्यपि स्वादिगण का है पर इस धातु में भी लगता है। यह शप् के स्थान पर होता है अतः श्रृ+श्नु+ति = श्रृ + नु + ति = श्रृणोति। (श् के इत् होने पर) इस श् को श्नु में रखकर इसे शित् बनाना था। शित् होने से इसकी प्रवृत्ति सार्वधातुक लकारों में हो जाती है। नु को गुण तथा णत्व होकर रूप सिद्ध होता है। ध्यान रहे न का ऋकार से परे होने पर भी णत्व होता है। जैसा कि एक वार्तिक में लिखा गया है—**"ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्"**।

श्रृ + नु + तस् आने पर

सूत्र १६ सार्वधातुकमपित्—(१-२-४) जो सार्वधातुक पित् नहीं होता उसे ङित् के समान माना जाता है। इसे ङित् के समान मानने से गुण का निषेध हो जाता है। बात असली यह है कि द्विवचन में श्रृणुतः रूप व्यवहार में आता है तो पाणिनि क्या करें, अतः यहाँ गुण को रोकना पड़ा, और रूप बना दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यहाँ ध्यान रखने की बात है कि तिप्, सिप् और मिप् तीन प्रत्यय पित् हैं शेष अपित्। अतः जहाँ भी प्रत्यय पित् नहीं होता वहाँ गुण नहीं होता। जैसे श्रृ + णु + अन्ति = श्रृण्वन्ति में शप् के स्थान में श्नु विकरण लगा हैं और झि प्रत्यय जो पित् नहीं है, इसीलिए गुण नहीं हुआ। इसमें एक समस्या और खड़ी होती है। इस धातु की स्थिति ऐसी बन जाती है कि एक अन्य सूत्र की प्रवृत्ति प्राप्त हो जाती है। वह सूत्र है--

सूत्र १७ अचि श्नुधातुभ्रुवांय्वोरियङुवङौ--(६-४-७७) सूत्र कहता है कि श्नु प्रत्यय वाले अङ्ग को, इवर्णान्त, उवर्णान्त धातु को तथा भ्रू को इयङ्, उवङ् हो जाय यदि उससे परे अजादि प्रत्यय हो। इसमें इ के स्थान में इयङ्, और उ के स्थान पर उवङ् होता है। अतः उ के स्थान पर उवङ् हो जाना चाहिये था। पर लोक में श्रृण्वन्ति बोलते हैं जो यण् करके बनता है, तो उवङ् नहीं हो सका। ऐसा करने के लिए पाणिनि को पुनः एक नये सूत्र की कल्पना करनी पड़ी। वह है-

सूत्र १८ हुश्नुवोः सार्वधातुके--(६-४-८७) अजादि प्रत्यय परे होने पर हु धातु तथा अनेकाच् श्नु प्रत्ययान्त वाले ऐसे अङ्ग के जिसके पहले संयुक्त वर्ण न हो उवर्ण को यण् आदेश हो। यही सूत्र ऊपर लिखे उवङ् को रोक देता है क्योंकि श्रृणु में संयोग नहीं है। तब यण् करके श्रृण्वन्ति रूप बनता है। संयोग का उदाहरण स्वादिगण में आप्नुवन्ति में मिलेगा। आगे श्रृ+नु + सिप् = श्रृणुसि (सिप् का प् गिरने पर) = श्रृणोषि (इगन्त अङ्ग का गुण होकर तथा सि का षि होकर) किसी आदेश का स् यदि इण् या कवर्ग से परे आता है तो स् के स्थान में ष् हो जाता है। (देखें आदेशप्रत्यययोः सूत्र १७१)

श्रृणु + थस् = श्रृणुथः, श्रृणु + थ = श्रृणुथ, श्रृणु+मि = श्रृणुमि श्रृणोमि (गुण करके) श्रृणुवः, श्रृणुमः। इस स्थल पर श्रृणुवः और श्रृणुवः के दो रूप बनते है —

सूत्र १९ लोपश्चास्यान्यतरस्याम् म्वोः--(६-४-१०७) प्रत्यय के असंयोगपूर्व उ का विकल्प से लोप हो यदि उससे परे व या म हो। यही उ के लोप होने पर श्रृण्वः, श्रृण्मः तथा लोप न होने पर श्रृणुवः, श्रृणुमः ही रूप बनते हैं।

२२ क्रमु—क्रम + अ + ति आने पर

सूत्र २० वाभ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसित्रुटिलषः--(३-१-७०) इन धातुओं से विकल्प से श्यन् हो जाय यदि सार्वधातुक लकार हो। अतः जब श्यन् न होगा तो शप् होगा। इस प्रकार इनके दो रूप बनते हैं—क्रम् + य + ति, क्रम् + अ + ति।

सूत्र २१ क्रमः परस्मैपदेषु--(७-३-७६) क्रम् धातु के अच् को दीर्घ हो परस्मैपद शित् प्रत्यय परे रहते। अतः क्राम्यति, क्रामति, क्राम्यतः क्रामतः, क्राम्यन्ति, क्रामन्ति आदि रूप बनेंगे। इसी आधार पर भ्रम् के रूप बनेंगे। भ्राम्यति, भ्रामति आदि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२८ क्षै + अ + ति = क्षायति (सामान्य सन्धि कार्य, देखें सूत्र एचोऽयवायावः क्षायतः, क्षायन्ति ।

इसी प्रकार	७० ध्यै	= ध्यायति,	ध्यायतः,	ध्यायन्ति ।
	३७ गै	= गायति,	गायतः	गायन्ति ।
	४० ग्लै	= ग्लायति,	ग्लायतः	ग्लायन्ति ।
	१४९ ह्वे	= ह्वयति,	ह्वयतः	ह्वयन्ति ।
	१२४ वे	= वयति,	वयतः,	वयन्ति ।

३६ गुपू + अ + ति आने पर

सूत्र २२ गूपूधूपविच्छिपणिपनिभ्यः आयः—(३-१-२८) गुपू, धूप, विच्छि, पणि तथा पनि धातुओं से आय प्रत्यय हो जाय ।

गुपू + आय + अ + ति = गोपायति (सनाद्यन्त होने से गोपाय की धातु संज्ञा करके) तथा अतो गुणे से गोपाय + अ + ति मिलाकर) (देखें सनाद्यन्ता धातवः) आगे गोपायतः गोपायन्ति ।

इसी प्रकार ६६ धूप से धूपायति, धूपायतः, धूपायन्ति आदि ।

इस विवरण से वह स्पष्ट है कि केवल १२ धातुओं के रूप बनाने से सभी भ्वादि-गण की परस्मैपद धातुओं के रूप सरलता से बन जाते हैं । ये बारह धातुएँ हैं—अक्, दंश्, भू, शुच्, नदि, पिध्, पा, गम्, नी, श्रु, क्रमु, तथा गुपू । इन सभी के रूप केवल २२ सूत्रों से बन जाते हैं । इससे सिद्ध होता है कि प्रति धातु दो सूत्रों का औसत भी नहीं पड़ता । यह औसत और भी अच्छा होगा जब इस सूची के बाहर की धातुएँ भी इसके आधार पर बनेंगी ।

१—लट् लकारः (परस्मैपदम्)

(२) **अदादिगणः**—इस गण में वैसे ही बहुत धातुएँ नहीं हैं । ये कुल ७२ हैं जिनमें २७ परस्मैपद में चुनी गयीं हैं । इनके रूप बनाने के लिए २४ सूत्रों से सहायता ली जाती है । इन से इस गण की १३ प्रतिनिधि धातुओं के रूप यहाँ बनाये जाते हैं । इस तरह से पुनः यह सिद्ध होता है कि प्रति धातु दो सूत्रों का औसत भी नहीं पड़ता । ये प्रतिनिधि धातुएँ इस प्रकार हैं-अद्, अस्, इ, चकास्, जागृ, दुह्, ब्रून्, मृज्, रुद्, यु, विद्, शास् तथा हन् । ध्यान रहे इस गण में विकरण नहीं लगता । शप् जो भ्वादि में लगता है, उसका इस गण में लोप हो जाता है । जैसा कि अगला सूत्र कहता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अत: अद् + तिप् आने पर

सूत्र २३ अदिप्रभृतिभ्यः शपः —(२-४-७२) अर्थात् अदादि गण में शप् का लोप हो जाय । अद् + ति = अत्ति (द् का त् करके देखें सन्धि खरि च)

इसी प्रकार अद् + तस् = अत्तः, अद् + अन्ति = अदन्ति आदि ।

आगे अद् + सिप् = अत्सि, अद् + थस् = अत्थः, अद् + थ = अत्थ, अद् + मिप् = अद्मि, अद् + वस् = अद्वः, अद् + मस् = अद्मः ।

इसी आधार पर १५९ पाति, १६१ भाति, १६२ माति, १६४ याति, १६८ लाति, १७३ स्नाति के रूप शप् का लोप करके बनते हैं । आकारान्त धातुओं के रूपों में कोई विशेष सूत्र नहीं लगता । इनके रूपों को या के समान चलाना चाहिए । या के सभी रूप इस प्रकार हैं ।

याति — यासि — यामि
यातः — याथः — यावः
यान्ति — याथ — यामः

१५१ अस्—अस् + ति = अस्ति । अस् + तस् आने पर

सूत्र २४ श्नसोरल्लोपः—(६-४-१११) श्ना प्रत्यय तथा अस् धातु के अकार का लोप हो जाय यदि उससे परे सार्वधातुक कित् या ङित् प्रत्यय हो । यहां तिप्, सिप् और मिप् को छोड़कर तस् थस् आदि सभी ङित् माने जाते हैं क्योंकि वे पित् नहीं है । अतः अस् के 'अ' का तस्, झि, थस्, थ, वस् तथा मस् में लोप हो जाता है ।

अतः स् + तस् = स्तः, स् + अन्ति = सन्ति, अस् + सि = असि (चूँकि सिप् पित् है) स् + थः = स्थः, स् + थ = स्थ, आगे अस्मि, स्वः, स्मः ।

कितनी सरलता से ये रूप बन जाते है । इनमें असि बनाते समय एक विशेष स्थिति आती है। अस् + सि आने पर दो सकार पास-पास आ बैठते हैं । अतः एक स् का लोप करना आवश्यक होता है । इसे अगले सूत्र के आधार पर करते हैं—

सूत्र २५ तासस्त्योर्लोपः—(७-४-५०) तास् और अस् धातु के स् का लोप हो यदि उससे परे सकारादि प्रत्यय हो । यही स्थिति यहां रही, अतः अस् के स् का लोप होकर असि बना है ।

१५२ इण्—इण् + ति = एति (इ का गुण होकर) इ + तस् = इतः (अपित् होने कारण गुण नहीं ।)

इ + झि = इ + अन्ति आने पर यहाँ इ को इयङ् प्राप्त होता है (देखें सूत्र १७) पर लोक में यन्ति रूप है अतः पाणिनि को एक नये सूत्र की कल्पना करनी पड़ी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूत्र २६ इणो यण्—(६-४-८१) इण् धातु के इकार को यण् हो अजादि प्रत्यय परे रहते यन्ति । आगे एषि, (इण् से परे स् को ष् करके (देखें १७१) इथः, इथ, एमि, इवः, इमः ।

एक धातु चक्षिङ् है । इसका प्रयोग ङित् होने से आत्मनेपद में होता है । आर्ध-धातुक लकारों में इसका आदेश ख्याञ् हो जाता है । तब ञित् होने से यह उभयपदी बन जाती है । पर लट् में यह आत्मनेपद में ही रहती है । (देखें ५२८ अ)

सूत्र २७ चक्षिङ् ख्याञ्—(२-४-५४) चक्षिङ् के स्थान पर ख्याञ् आदेश हो जाय यदि उससे परे आर्धधातुक प्रत्यय हो ।

१५४ चकासृ + ति = चकास्ति, चकास्तः, आगे चकास् + झि आने पर

सूत्र २८ जक्षित्यादयः षट्—(६-१-६) जक्ष आदि सात धातुओं की अभ्यास संज्ञा हो । इन सात धातुओं में जागृ, दरिद्रा, शास्, चकासृ, दीधीङ्, वेवीङ् तथा जक्ष हैं । इनमें से दीधीङ् तथा वेवीङ् का प्रयोग केवल वेद में रह गया है । इस सूत्र से चकास् को अभ्यास संज्ञा बनाने का फल है कि झि के स्थान पर अन्ति न होकर अत हो जाता है जिसका विधान अगला सूत्र करता है ।

सूत्र २९ अदभ्यस्तात्—(७-१-४) अभ्यस्त संज्ञक धातु के झ् के स्थान में अत् हो जाय । इसमें झि की इ मिलने पर अति हो जाता है । इस प्रकार चकास् + अति = चका-सति । आगे चकास् + सि = चकास्सि । चकास्थः, चकास्थ, चकास्मि, चकास्वः, चकास्मः ।

१५५ जागृ + ति = जागर्ति (इस धातु के ऋ का लोप नहीं होता क्योंकि वह अनुनासिक नहीं पढ़ा गया । अतः गुण होकर रूप बना ।

आगे जागृ + तस् आने पर

सूत्र ३० जाग्रोऽविचिण् णल् ङित्सु—(७-३-८५) निषेध तथा वृद्धि के विषय में जागृ धातु को गुण हो पर वि, चिण्, णल् और ङित् प्रत्ययों के परे रहते न हो । इस सूत्र से तीन प्रकार का नियम निकलता है ।

(i) सामान्य रूप से कित् और ङित् प्रत्यय परे रहते गुण नहीं होता किन्तु इस सूत्र से ङित् में रोका गया है, अतः कित् में गुण होना ङित् में नहीं ।

(ii) विन् प्रत्यय परे रहते गुण होना चाहिए था सो न होगा ।

(iii) चिण् और णल् को छोड़कर अन्यत्र जहां वृद्धि का स्थल है वहाँ भी गुण हो जायगा । अतः जागृ + तस् में ङित् के समान होने से गुण नहीं होता । तब जागृतः रूप बनता है । झि के स्थान में सूत्र २९ के आधार पर अति हो जाता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है, अतः जागृ + झि = जागृ + अति = (सामान्य सन्धि यण् करके) जाग्रति रूप बनता है।

आगे जागृ + सि = जागर्षि (गुण तथा षत्व करके, देखें १७१)
जागृ + थः = जागृथः, जागृ + थ = जागृथ, जागृ + मि = जागर्मि,
जागृवः, जागृमः।

१५६ दुह् + ति आने पर

यह धातु प्रयोग में कम आती है। पर इसके रूप बनाने में कुछ मानसिक व्यायाम होता है। कारण यह है कि लोक व्यवहार में सभी शब्द एक ही नियम से नहीं चलते, बल्कि व्यवहार का शब्द देखकर व्याकरण के नियम बनते है।

सूत्र ३१ दादेर्धातोर्घः—(८-२-३२) दकारादि धातुओं के ह् के स्थान में घ् हो यदि ह् से परे झल् हो या वह पद के अन्त में हो। यहाँ ति झल् में आता है। अतः दुघ् + ति बना। "**पुगन्तलघूपधस्य च**" से गुण होकर दोघ् + ति हुआ। ऐसी स्थिति बनने पर—

सूत्र ३२ झषस्तथोर्धोऽधः—(८-२-४०) अधः = धा को छोड़कर। झष् = वर्ग का चौथा वर्ण। अर्थात् धा को छोड़कर झष् प्रत्याहार से परे त व थ के स्थान में ध हो जाय। इसके अनुसार दोघ् + धि बना। इसमें घ् का जश् ग् होकर आया तो दोग्धि रूप बन गया। (इसके लिए देखें सन्धि "**झलां जश् झशि**"। आगे दुह् + तस् = दुघ् + तः = दुग्धः। सभी कार्य पूर्ववत्। यहाँ अपित् होने से गुण नहीं हुआ। दुह् + अन्ति = दुहन्ति। यहाँ अजादि प्रत्यय होने से ह् का घ् नहीं हुआ।

दुह् + सिप् आने पर दोघ् + सि बना, इसमें घ् का चर्त्व करके तथा सि का षि करके दोक् + षि स्थिति बनती है। (देखें खरि च तथा आदेश प्रत्यययोः)।

सूत्र ३३ एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः—(८-२-३७) यदि स् या ध्व परे हो या पदान्त हो तो धातु के अवयव् बश् के स्थान में भष् हो जाय। अर्थात् तीसरे वर्ण के स्थान में चौथा वर्ण हो जाय। अतः यहाँ द् के स्थान में ध् होकर धोक्षि रूप बनता है। दुह् + थस् = दुघ् + थस् = दुघ् + धस् (सूत्र ३२ से) = दुग्धः। दुग्ध। दुह् + मिप् = दोह् + मि = दोह्मि। चूँकि म और व झल् में नहीं आते अतः ह् का घ् नहीं होता। इसी आधार पर दुह् + वस्, दुह्वः, दुह् + मस् = दुह्मः। १५७ द्विष् + ति में ष् और त् का योग होने पर सामान्य सन्धि कार्य त् को ट् होता है। द्विष् + ट् = द्वेष्टि (गुण करके) आगे द्विष्टः, द्विषन्ति। द्विष + सिप् = द्वेष् + सि आने पर ष् के स्थान में क् हो जाता है (देखें १२७) द्वेक् + सि में क् के परे सि का षि बनता है (देखें १७१) = द्वेक + षि = द्वेक्षि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आगे द्विष् + थस् = द्विष्ठः, द्विष् + थ = द्विष्ठ। द्वेष्मि, द्विष्वः द्विष्मः।

१६० ब्रू + ति = आने पर

सूत्र ३४ ब्रुव ईट्—(७-३-९३) ब्रू धातु से परे हलादि पित् प्रत्यय को ईट् का आगम हो। ब्रू + ई + ति = ब्रो + ईति (गुण करके सूत्र ६) ब्रव् + ईति = ब्रवीति रूप बनता है। ब्रू + तस् = ब्रूतः, ब्रू + अन्ति = ब्रुवन्ति (देखें सूत्र १७) आगे ब्रवीषि, ब्रूथः, ब्रूथ, ब्रवीमि, ब्रूवः, ब्रूमः।

ध्यान रहे जहाँ तिप्, सिप् और मिप् आते हैं वहीं गुण होता है। जहाँ अपित् प्रत्यय आते हैं वहाँ गुण तो नहीं ही होता, बल्कि अजादि प्रत्यय परे रहने पर इयङ् और उवङ भी होता है। इसी आधार पर ब्रुवन्ति में उवङ हुआ है।

ब्रू धातु के लट् में और भी रूप बनते हैं—

सूत्र ३५ ब्रुवः पञ्चानाम् आदित आहो ब्रुवः—(३-४-८४) ब्रू धातु स परे लट् लकार के पहले पाँच प्रत्ययों को "णल्" आदि पाँच आदेश विकल्प स हों तथा ब्रू को आह् आदेश हो जाय। अर्थात् ये पाँचों आह् में जुड़ेगे, ब्रू में नहीं। णल् आदि में **णल् अतुस्, उस्, थल्, अथुस्** आते हैं। अतः **आह् + णल्** आने पर—णल् से केवल अ बचता है। इस अ की जगह णल् से केवल इसलिए कहा है कि यह णित् बन जाय। शप् का अ शित् होता है। णित् होने से आगे चलकर वृद्धि होती है अतः ऐसा ही उचित था। अतः आह् + अ = आह रूप बना।

स आह, वह कहता है। ऐसा प्रयोग होगा। आगे आह् + अतुस् आहतुः, आह् + उस् = आहुः रूप बनते हैं।

आह् + थल् आने पर

सूत्र ३६ आहस्थः (८-२-३५) आह् को थकार आदेश हो झलादि प्रत्यय परे रहने पर। इसके अनुसार अन्तिम ह् के स्थान में थ् होता है। आथ् + थ = आत्थ (पूर्व थ् को चर्त्व करके देखें सूत्र १५ सन्धि खरि च) आह् + अथुस = आहथुः रूप बना।

(ध्यान रहे ये ही केवल पाँच रूप बनने थे)

१६३ मृज् + ति आने पर

सूत्र ३७ मृजेर्वृद्धिः—(७-२-११४) मृज् धातु के इक् को वृद्धि हो यदि उससे परे सार्वधातुक या आर्धधातुक प्रत्यय हो।

इससे मार्ज् + ति स्थिति बनी। वैसे यहाँ उपधा के गुण की प्राप्ति थी पर उसे रोककर वृद्धि करनी पड़ी चूँकि मार्ज् की आवश्यकता थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूत्र ३८ व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः—(८-२-३६) व्रश्च, भ्रस्ज, सृज, मृज, यज, राज, भ्राज तथा छकारान्त और शकारान्त धातुओं के अन्तिम वर्ण को ष् आदेश हो जाय यदि उनसे परे झलादि प्रत्यय आवे। आदेश शत्रुवत् होता है। यह जिसके स्थान पर होता है उसे हटाकर बैठता हैं। इसके विपरीत आगम मित्रवत् होता है तथा पास आकर बैठता हैं। इस सूत्र के अनुसार मार्ज् के स्थान पर मार्ष् हो गया। अतः मार्ष् + ति = मार्ष्टि। (ष्टुत्व करके), मृज् + तस् = मृष् + तः = मृष्टः। मृज् + अन्ति = मृजन्ति। मार्ष् + सि = मार्क् + सि (ष् से क् के लिए, देखें सूत्र १२४, तथा स् से ष् के लिए देखें सूत्र १७१) = मार्क्षि, मृष् + थः = मृष्ठः, मृष् + थ = मृष्ठ (ष्टुत्व करके) मार्ज् + मि = मार्ज्मि, मृज् + वस् = मृज्वः, मृज् + मस् = मृज्मः। ध्यान रहे व, म झल् में नहीं आते इसलिए उत्तम पुरुष में ज् का ष् नहीं हुआ।

१६७ रुद् + ति आने पर

सूत्र ३९ रुदादिभ्यः सार्वधातुके—(७-२-७६) रुद्, श्वस्, स्वप्, जन् और जक्ष् रुदादि धातु हैं। इन पाँचों धातुओं से परे वलादि सार्वधातुक को इट् का आगम हो जाय। रुद् + इ + ति = रोदिति, रुद् + इ + तस् = रुदितः, रुद् + अन्ति = रुदन्ति। रोदिषि, रुदिथः, रुदिथ, रोदिमि, रुदिवः, रुदिमः।

ध्यान रहे यहाँ पित् में गुण हुआ है अन्य में नहीं। इसी आधार पर १७२ श्वसिति, १७५ स्वपिति आदि।

१६५ यु + ति आने पर

सूत्र ४० उतो वृद्धिर्लुकि हलि—(७-३-८९) अभ्यस्त संज्ञक को छोड़कर लुक् के विषय में धातु के उकार को वृद्धि हो यदि उससे परे हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय आवे। उ की वृद्धि 'औ' होती है।

यौति —	यौषि —	यौमि
युतः —	युथः —	युवः
युवन्ति —	युथ —	युमः

इसी आधार पर १५८ नौति, १६६ रौति, १७४ स्तौति रूप बनते हैं।

१६९ वच् + ति = वक्ति (देखें सूत्र १२६) वच् + तस् = वक्तः, (वच् धातु का झि वाला रूप प्रयोग में नहीं आता) किसी-किसी के मत से बहुवचन का कोई भी रूप व्यवहार में नहीं आता। वच् + सि = वक्षि। वक्थः, वक्थ, वच् + मि = वच्मि, वच्व. वच्मः, (देखें सूत्र १२६, १७१)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१७० विद् + ति = वेत्ति (गुण तथा चर्त्व करके)

विद् + तस् = वित्तः, विद् + अन्ति = विदन्ति, वेत्सि, वित्थः, वित्थ, विद्+मि = वेद्मि, विद्वः, विद्मः। परन्तु इस धातु के इस लकार में अन्य रूप भी बनते हैं। ये णल् आदि प्रत्ययों से बनाये जाते हैं।

सूत्र ४१ विदो लटो वा—(३-४-८३) विद् धातु से लट् के परस्मैपद प्रत्ययों को विकल्प से णल् आदि आदेश हों। णल् आदि मूल रूप से लिट् लकार में आते हैं। वे इस प्रकार हैं —

	प्र० पुरुष	म०पुरुष	उत्तम पुरुष।	इसमें निम्न अंश शेष रहते हैं।		
एकवचन	णल् —	थल् —	णल्	अ —	थ —	अ
द्विवचन	अतुस् —	अथुस् —	व	अतुस् —	अथुस्—	व
बहुवचन	उस —	अ —	म	उस् —	अ	म

अतः ये निम्नलिखित रीति से जुड़ेंगे—

विद् + अ = वेद (गुण करके) विद् + अतुस् = विदतुः, विद् + उस् = विदुः।
विद् + थ = वेत्थ (द् का चर्त्व करके), विद् + अथुस् = विदथुः, विद्+अ = विद।
विद् + अ = वेद, विद्+व = विद्व, विद्+म = विद्म।

१७१ शास्+ति = शास्ति, शास्+तस् आने पर

सूत्र ४२ शास इदङ् हलोः—(६-४-३४) शास् की उपधा को ह्रस्व इकार हो अङ् तथा हलादि कित् ङित् परे रहते। इसके अनुसार शास् के आ के स्थान पर इ आ जाता हैं। शिस् होने पर इकार के कारण स् के स्थान पर ष् हो जाता है। अतः शिष् + तः = शिष्टः (ष्टुत्व करके) इसी सूत्र से शास् से य आने पर शिष्य बनता है। (देखें सूत्र ४३)।

सूत्र ४३ शासिवसिघसीनां च—(८-३-६०) इण् और कवर्ग से परे शास्, वस् और घस् धातुओं के अवयव सकार के स्थान में षकार हो जाय। शास्+झि आने पर सूत्र २८ व २९ के आधार पर शास् + अति = शासति।

१७६ हन् + ति = हन्ति (यह मूल में न् होने के कारण बहुवचन की तरह लगता है पर ति का रूप एकवचन ही है। स हन्ति, रामः मृगं हन्ति प्रयोग होंगे।

हन् + तस् आने पर

सूत्र ४४ अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनाम्— (६-४-३७) अनुदात्तोपदेश = जो उपदेश में अनुदात्त पढ़े गये हैं। उपदेश का मतलब पाणिनि, कात्यायन या पतञ्जलि का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वचन होता है । अतः जो धातु इन आचार्यों ने उपदेश में अनुदात्त कहे हैं उनके तथा वन और तन आदि के अनुनासिक अन्त का लोप हो यदि उससे परे कित् या ङित् प्रत्यय हो । यम्, रम्, णम्, गम्, हन् तथा मन् ६ धातुएं उपदेश में अनुदात्त पढ़ी गयीं हैं । इनके अतिरिक्त—

तन्, क्षण्, क्षिण्, ऋण्, तृण्, घृण्, मनु तथा वनु आठ धातुएँ तनादि हैं जिनसें न् का लोप होता है । यहाँ हन् के न् का लोप होने पर—ह+तः = हतः रूप बनता है । इसी प्रकार गम् से ग+त = गतः, रम् से रतः, नम् से नतः आदि रूप क्त प्रत्यय आने पर बनते हैं ।

आगे हन् + झि आने पर हन् + अन्ति आता है ।

सूत्र ४५ गम-हन-जन-खनघसांलोपः क्ङित्यनङि—(६-४-९८) गम्, हन्, जन्, खन् तथा घस् की उपधा का लोप हो अजादि कित् तथा ङित् प्रत्यय परे होने पर, किन्तु अङ् परे रहते ऐसा न हो । इसके अनुसार हन् में ह के अ का लोप हो जाता है । अतः ह् + न्+अन्ति आने पर—

सूत्र ४६ हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु–(७-३-५४) ञित्, णित् प्रत्यय तथा नकार परे रहते हन् के ह् को कवर्ग आदेश हो जाय । यहाँ ह् की घ् से समानता होने से घ्नन्ति रूप बनता है । आगे हन् + सि = हसि हन् + थस् = हथः, हन् + थ = हथ (देखें सूत्र ४५) हन् + मि = हन्मि, हन् + वस् = हन्वः, हन् + मस् = हन्मः । इसी आधार पर सभी अदादिगण की धातुओं के रूप बनते हैं ।

लट् लकारः (क्रमशः) परस्मैपदम्

३. जुहोत्यादिगण :

पाणिनि ने इसकी धातु हु मानी है । हु का जुहोति रूप बनता है । इसी से गण का नाम जुहोत्यादिगण पड़ा है । यहाँ अपनी सूची के अनुसार ही इस गण की धातुओं के रूप बनाये जा रहे हैं । इस गण से आठ धातुएँ चुनी गयीं हैं । इनमें प्रतिनिधि धातुओं के रूप बनाये जा रहे है । इस हेतु कुल १५ सूत्रों की आवश्यकता पड़ती है । ये धातुएं हैं—**दा, धा, पृ, भी, हा, हु तथा ह्री** । जैसे अदादिगण की धातुओं में शप् का लुक् होता है, वैस ही जुहोत्यादि गण की धातुओं में शप् का श्लु होता है । श्लु का अर्थ भी लोप ही है । पर इसके कहने से धातु का द्वित्व कर देते हैं । तिप् आदि द्वित्व होने पर ही जुड़ते हैं । श्लु का कोई अंश जुड़ता नहीं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अतः दा + शप् + ति आने पर—शप् का श्लु से लोप होता है।

सूत्र ४७ जुहोत्यादिभ्यः श्लुः—(२-४-७५) अतः दा + ति रहा।

सूत्र ४८ श्लौ—(६-१-१०) श्लु होने पर धातु को द्वित्व हो। द्वित्व का तात्पर्य है उसे दो बार रखें। **अतः दा + दा + ति** स्थिति होने पर पहले दा की अभ्यास संज्ञा हो जाती हैं।

सूत्र ४९ हलादिः शेषः—(७-४-६०) अभ्यास का आदि हल् शेष रहता है। इसके अन्य हलों का लोप हो जाता है। यहाँ चूँकि आदि में एक ही हल् है अतः उसका लोप नहीं होता। जहाँ एक से अधिक होंगे वहाँ ऐसा होगा—जैसे ह्री में र् का लोप हो जायेगा। दा का आ भी ऐसा ही रहता है क्योंकि उसका लोप कहा नहीं गया। अतः दा + दा + ति ही रहेगा।

सूत्र ५० ह्रस्वः—(७-४-५९) अभ्यास के अच् को ह्रस्व हो जाय। इसके आधार पर दा + दा + ति = द + दा + ति = ददाति रूप बनता है।

दा + दा + तस् = दा + दा + तस् आने पर

सूत्र ५१ श्नाभ्यस्तयोरातः—(६-४-११२) श्ना प्रत्यय और अभ्यस्त संज्ञक धातु के आकार का लोप हो यदि उससे परे कित् ङित् सार्वधातुक प्रत्यय हो। इससे द + द् + तस् होने पर दूसरे द् के स्थान में चर्त्व त् होता है।

अतः द + त् + तस् = दत्तः रूप बनता है। आगे द + द् + झि आने पर—झ के स्थान में अन्त् न होकर अत् होता है। (देखें सूत्र २९)।

अतः द + द् + अति = ददति। द + दा + सि = ददासि, दत्थः, दत्थ (वही चर्त्व करके देखें सूत्र ५२) द + दा + मि = ददामि, द + द् + वस् = दद्वः द + द् + मस् = दद्मः यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि तिप्, सिप् तथा मिप् चूँकि पित् हैं अतः यहाँ ५१वाँ सूत्र नहीं लगता, क्योंकि वह कित् ङित् में ही लगता है।

१७८ धा + ति, धा + धा + ति, ध + धा + ति आने पर

सूत्र ५२ अभ्यासे चर्च—(८-४-५४) अभ्यास के झलों के स्थान पर चर् हो और जश् भी। इसका निराकरण कैसे हो कि कब जश् और कब चर् होगा। समाधान यह है कि वर्ग के तीसरे और चौथे वर्ण (जबगडद, झभघढध) के स्थान पर तीसरा होगा तथा पहले और दूसरे के स्थान पर पहला होगा।

अतः दधाति (ध् के स्थान पर द् होकर) आगे धा + धा + तस् आने पर ध + धा + तस् (५० सूत्र से), ध + ध् + तस् (सूत्र ५१ से) द + ध् + तस् (सूत्र ५२ से) आने पर सूत्र ५३ लगता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूत्र ५३ दधस्तथोश्च—(८-२-३८) द्वित्व किये गये झषन्त धा धातु के बश् को भष् हो जाय यदि उससे परे त, थ, स, या ध्व हो। यहाँ बश् का अर्थ तृतीय वर्ण और भष् का अर्थ चतुर्थ वर्ण है यहाँ झषन्त इसलिए कहा गया है कि **"श्नाभ्यस्तयोरातः"** से आ का लोप हो जाता है और आ के लोप होने पर केवल ध् रह जाता है, अतः धातु झषन्त हो जाता है। पर आकार के लोप होने पर भी इसकी चार स्थलों में ही प्रवृत्ति होती है। विधि लिङ् में आकार का लोप होने पर भी इसकी प्रवृत्ति नहीं होती क्योंकि यासुट् बीच में आ जाता है और उसे कोई तकार आदि पर में नहीं मिलता। इस आधार पर पहले अभ्यास में अभ्यासे चर्च से (५२) ध् का जो द् बन जाता है, उसी द् को यह पुनः ध् में बदल देता है, तब ध+ध्+तस् स्थिति बनती है। इसके अनन्तर दूसरे ध् का चर्त्व करके ध+त्+तस्=धत्तः रूप बनता है। शेष रूप दा के आधार पर होते हैं। जो इस प्रकार हैं– दधति, दधासि धत्थः, धत्थ, दधामि, दध्वः, दध्मः।

१७९ पॄ— पॄ+ति, पॄ+पॄ+ति आने पर

सूत्र ५४ अर्ति पिपर्त्योश्च—(७-४-७७) ऋ से अर्ति बनता है। अतः ऋ और पॄ के अभ्यास को इकार अन्तादेश हो श्लु के विषय में। इसका गुण करके पिपर्ति रूप बनता है।

पॄ+पॄ+तस् आने पर

सूत्र ५५ उदोष्ठ्यपूर्वस्य—(७-१-१०२) जिस ॠ के पहले ओष्ठ्य वर्ण हो तदन्त अङ्ग को उकार अन्तादेश हो जाय। अतः पि+पुर्+तस्=पिपुर्तस् स्थिति बनीं।

सूत्र ५६ हलि च—(८-२-७७) जिसके अन्त में र् अथवा व् हो उस धातु के उपधा वाले इक् को दीर्घ हो यदि उससे परे हल् हो।

पिपुर्तस्=पिपूर्तः, पिपुर+अति=पिपुरति, आगे पिपर्षि (इण् से परे होने से स् का ष्), पिपूर्थः, पिपूर्थ, पिपर्मि, पिपूर्वः, पिपूर्मः।

इसी आधार पर १८१ भृ के रूप इस प्रकार होंगे—

बिभर्ति	—	बिभर्षि	—	बिभर्मि
बिभृतः	—	बिभृथः	—	बिभृवः
बिभ्रति	—	बिभृथ	—	बिभृमः

१८० भी— भी+ति, भी+भी+ति, भिभीति, बिभेति (सभी कार्य पूर्व सूत्रों से) आगे बिभीतः। पर तस् में इसके दो रूप बनते है।

सूत्र ५७ भियोऽन्यतरस्याम्—(६-४-११५) भी धातु को विकल्प से ह्रस्व इकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्तादेश हो कित् ङित् सार्वधातुक परे रहते । बिभित: । वि + भी + अति आने पर यण करके बिभ्यति । ध्यान रहे चूँकि अभ्यस्त संज्ञा से अन्ति के स्थान में अति होता हैं । अत: ऐसा रूप बहुवचन में भी हुआ । आगे बिभेषि, बिभीथ: बिभिथ:, बिभीथ, बिभिथ, बिभेमि, बिभीव:, बिभिव:, बिभीम:, बिभिम: ।

१८२ ओहाक्— हा + ति, हा + हा + ति, ह + हा + ति आने पर

सूत्र ५८ कुहोश्चु :—(७-४-६२) अभ्यास के कवर्ग और हकार का चवर्ग हो जाय। यहाँ कवर्ग का तो सीधा क्रम रहता है, पहला वर्ण पहले चवर्ग में, दूसरा दूसरे में, तीसरा तीसरे में तथा चौथा चौथे में होगा । परन्तु हकार की अत्यन्त समानता चवर्ग में झ से है । अत: ह् के स्थान में झ् होता है । इस प्रकार हहाति से झहाति, इससे जश्त्व करके जहाति रूप बनता है । ह + हा + तस् आने पर हहात:, जहात: स्थिति पूर्व सूत्रों से बनती है ।

सूत्र ५९ ई हल्यघो :—(६-४-११३) दा, धा को घु कहते हैं । अघो: का अर्थ है दा और धा को छोड़कर । अत: घु को छोड़कर श्ना प्रत्यय तथा अभ्यस्त धातु के आकार को ईकार हो जाय यदि उससे परे सार्वधातुक कित् ङित् हलादि प्रत्ययप रे हो । अत: जहात: से जहीत: रूप बनता है । इसमें विकल्प भी है ।

सूत्र ६० जहातेश्च—(६-४-११६) ओहाक् धातु को विकल्प से इकार अन्तादेश हो कित् ङित् परे रहते । ये कित् ङित् हलादि सार्वधातुक हों । अत: इस सूत्र से जहित: रूप बनता है। चूँकि यह वैकल्पिक है अत: इस सूत्र से जहित: रूप बनता है । चूँकि यह वैकल्पिक है अत: जहाँ यह लगेगा वहाँ ५९ के अनुसार दीर्घ ही रहेगा ।

१८३ हु + ति, हु + हु + ति, हुहोति (गुण होने पर)

झुहोति, जुहोति । यहाँ सूत्र ४० से हु के उ को वृद्धि की प्राप्ति प्रतीत होती है । चूँकि यह अभ्यस्त है अत: वृद्धि नहीं होती । वस्तुत: बात इस प्रकार है कि **"पुगन्तलघूपधस्य च"** (७-३-८६) सूत्र के बाद अष्टाध्यायी में पहले अगला सूत्र आता है—

सूत्र ६१ नाऽभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके—(७-३-८७) अजादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे रहने पर अभ्यस्त धातु को गुण न हो । यह गुण की रोक आगे लोट् में मिलेगी । पर इस सूत्र का "नाऽभ्यस्तस्य" पक्षवाला अंश इसके बाद आने वाले सूत्र— "उतोवृद्धिर्लुकि" ७-३-८९ में लगता है जो अभ्यस्त संज्ञक धातु में वृद्धि को रोक देता है । इसीलिए इसकी वृत्ति में लिखा है कि अभ्यस्त संज्ञा को छोड़कर वृद्धि हो । अत: इसके जुहोति में लगने का भ्रम नहीं होना चाहिए ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हु + हु + तस् = जुहुतः, हु + हु + अति = जुह्वति । (देखें सूत्र १८)
जुहोषि, जुहुथः, जुहुथ, जुहोमि, जुहुवः, जुहुमः ।

१८४ ह्री + ति = ह्री + ह्री + ति = जिह्रीति = जिह्रेति (सभी पूर्व सूत्रों से)
ह्री + ह्री + तस् = जिह्रीतः (ङित् होने से गुण नहीं ।)

जि + ह्री + अति आने पर चूँकि संयोग पूर्वक है अतः यहाँ **"एरनेकाचोऽसंयोग पूर्वस्य"** (६-४-८२) की प्रवृत्ति नहीं होती । इसीलिए यहाँ यण् नहीं होता । सूत्र कहता है कि यदि संयोग पहले न हो तो "इ" अन्त वाली अनेकाच् धातु को यण् हो यदि उससे परे अजादि प्रत्यय हो । वस्तुतः यह सूत्र **"अचिश्नुधातुभ्रुवांय्वोरियङुवङौ"** का अपवाद है । पर असंयोग की शर्त पर एरनेकाचो इयङ् को रोककर यण् करता है जो जिह्री + अति में नहीं बैठतीं क्योंकि ह्री में संयोग है । इसीलिए अन्ततः अचिश्नुधातुभ्रुवां से यहाँ इ का इय् होकर जिह्रियति रूप बनता है । आगे जिह्रेषि, जिह्रीथः, जिह्रीथ, जिह्रेमि, जिह्रीवः जिह्रीमः ।

(१) लट् लकारः (क्रमशः) परस्मैपदम्

(४) दिवादिगणः

इस गण की धातुओं के रूप बनाने में केवल ५ सूत्र लगते हैं । जबकि धातुएं ४७ चुनी गयीं हैं । केवल ४ प्रतिनिधि धातुओं से इस गण के रूप बन जाते हैं ।

१८५ अस् + ति आने पर

सूत्र ६२ दिवादिभ्यः श्यन्– (३-१-६९) दिवादिगण धातुओं से श्यन् आवे । श्यन् से केवल य शेष रहता है । यह य शप् की भाँति तिप् आदि से पहले बैठता है । अस् + य + ति = अस्यति । अस्यतः, अस्यन्ति । अस्यसि, अस्यथः, अस्यथ, अस्यामि, अस्यावः, अस्यामः । इसमें कोई भी नया सूत्र नहीं लगता ।

इसी आधार पर १८६ कुप्यति, १८७ क्रुध्यति, १८८ क्लिद्यति, १८९ क्षिप्यति, १९१ क्षम्यति, १९२ क्षुभ्यति, १९३ खिद्यति, १९४ नश्यति, १९५ ताम्यति, १९६ तुष्यति १९७ तृष्यति, १९८ त्रस्यति, २०० दुष्यति, २०१ दृप्यति, २०३ द्रुह्यति, २०४ नृत्यति, २०५ पुष्यति, २०६ पुष्प्यति, २०७ भृश्यति, २०८ भ्रश्यति, २११ मुह्यति, २१२ मृष्यति, २१४ रुष्यति, २१५ लुप्यति, २१६ लुभ्यति, २१८ शप्यति, २२० शुच्यति, २२१ शुध्यति, २२२ शुष्यति, २२५ श्लिष्यति, २२६ स्निह्यति, २२७ स्विद्यति, २२८ सिध्यति, २३१ हृष्यति आदि के रूप बनते हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१८९ क्षम् + य + ति आने पर

सूत्र ६३ शमामष्टानां दीर्घः श्यनि—(७-३-७४) शम् आदि आठ धातुओं के अच् को दीर्घ हो यदि उससे परे श्यन् प्रत्यय हो। ये आठ धातुएँ निम्नलिखित हैं।

१८९ क्षम्, १९५ तम्, २०८ भ्रम्, २१० मद् २१९ शम्, २२४ श्रम् तथा क्लम् और दम्। अतः इनके अच् के दीर्घ होने पर इनके रूप इस प्रकार होंगे—क्षाम्यति, ताम्यति, भ्राम्यति, माद्यति, शाम्यति, क्लाम्यति तथा दाम्यति आदि।

१९९ दिव् + य + ति = दीव्यति (देखें सूत्र ५६), दीव्यतः, दीव्यन्ति। दीव्यसि, दीव्यथः, दीव्यथ, दीव्यामि, दीव्यावः, दीव्यामः। इसी आधार पर २२९ सीव्यति सीव्यतः, सीव्यन्ति आदि।

२०२ दो — दो + य + ति आने पर

सूत्र ६४ ओतः श्यनि—(७-३-७१) श्यन् परे रहते धातु के ओकार का लोप हो जाय। अतः द् + य + ति = द्यति, द् + य + तस् = द्यतः, आगे द्यन्ति, द्यसि, द्यथः द्यथ, द्यामि द्यावः, द्यामः।

इसी आधार पर २२३ शो से श्यति, श्यतः, श्यन्ति, तथा २३० षो से स्यति, स्यतः, स्यन्ति आदि।

२१३ रञ्ज— रञ्ज + य + ति आने पर

सूत्र ६५ अनिदितां हल उपधाया क्ङिति—(६-४-२४) ह्रस्व अनिदित् (जिसके ह्रस्व इकार की इत् संज्ञा न हुई हो) अङ्ग की उपधा के न का लोप हो कित् और ङित् प्रत्यय परे रहते।

अतः रज् + य + ति = रज्यति, रज्यतः, रज्यन्ति,
रज्यसि, रज्यथः रज्यथ,
रज्यामि, रज्यावः, रज्यामः।

२१७ व्यध् + य + ति आने पर

सूत्र ६६ ग्रहिज्यावयिव्यधि—वष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छति—भृज्जतीनांङिति च—(६-१-१६) ग्रह (क्रयादि), ज्या (क्रयादि), वेञ् (भ्वादि), व्यध् (दिवादि), वश् (अदादि), व्यच्, व्रश्च, तथा प्रच्छ (तीनों तुदादि) धातुओं का सम्प्रसारण हो कित् और ङित् प्रत्यय परे रहते। यहाँ श्यन् अपित् होने के कारण ङित्वत् माना जाता है। अतः व्यध् का सम्प्रसारण होने पर विध् हो जाता है। तब विध्यति, विध्यतः, विध्यन्ति आदि रूप बनते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१—लट् लकारः (क्रमशः) परस्मैपदम्

(५) स्वादिगणः

इस गण में केवल एक ही सूत्र नया लगता है जब कि ९ धातुओं के रूप बनाये गये है।

२३२ आप्—आप् + ति आने पर

सूत्र ६७ स्वादिभ्यः श्नुः—(३-१-७३) स्वादिगण की धातुओं से श्नु प्रत्यय हो। श्नु से केवल नु रह जाता हैं। अतः आप् + नु + ति = आप्नोति (गुण होकर), आप्+नु + तस् = आप्नुतः, आप्नु + अन्ति आने पर (देखें सूत्र १७) = आप्नुवन्ति। यहाँ आप्नु में सयोग है इसलिए यण् नहीं हुआ बल्कि उवङ् हुआ। जहाँ संयोग नहीं होता वहीं यण् होता है। जैसे २४० सुनोति, सुनुतः, सु + नु + अन्ति = सुन्वन्ति, २३४ चिनोति चिनुतः, चिन्वन्ति, इनके पूरे रूप इस प्रकार होंगे—

२३४	चिनोति	—	चिनोषि	—	चिनोमि
	चिनुतः	—	चिनुथः	—	चिन्वः, चिनुवः
	चिन्वन्ति	—	चिनुथ	—	चिन्मः, चिनुमः (देखें सूत्र १९)
२४०	सुनोति	—	सुनोषि	—	सुनोमि
	सुनुतः	—	सुनुथः	—	सुन्वः, सुनुवः
	सुन्वन्ति	—	सुनुथ	—	सुन्मः, सुनुमः (देखें सूत्र १९)

इसी आधार पर २३३ क्षिणोति (ष् का योग होने से नु का णु हो जाता है। क्षिणुतः, क्षिण्वन्ति आदि (ध्यान रहे इसमें संयोग है)।

२३५ दुनोति, २३६ धूनोति, २३७ वृणोति, २३९ सिनोति। २३८ शक् का व्यवहार प्रायः अधिक होता है अतः पूरे रूप दिये जाते है।

शक्नोति	—	शक्नोषि	—	शक्नोमि
शक्नुतः	—	शक्नुथः	—	शक्नुवः
शक्नुवन्ति	—	शक्नुथ	—	शक्नुमः

लट् लकारः (क्रमशः) परस्मैपदम्

(६) तुदादिगणः

इस गण में लट् लकार के रूपों के लिए केवल ५ सूत्र आवश्यक हैं। धातुएँ ४१ हैं और केवल ४ प्रतिनिधि धातुएँ हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२४१ इष्— इष्+ति आने पर

सूत्र ६८ तुदादिभ्यः शः—(३-१-७७) तुदादिगण की धातुओं से सार्वधातुक प्रत्यय परे रहते श प्रत्यय हो। श से केवल 'अ' रह जाता है। श के लाने से इस गण की धातुओं को शित् बनाना है तथा उसमें प् न रखने से उनमें गुण को रोकना है। अतः इष्+अ+ति=इच्छति (इष् को इच्छ करके देखें सूत्र १२) इच्छतः, इच्छन्ति, इच्छसि, इच्छथः, इच्छथ, इच्छामि, इच्छावः, इच्छामः। इसी आधार पर २५३ तुदति, तुदतः, तुदन्ति, तुदसि, तुदथः, तुदथ, तुदामि, तुदावः तुदामः। अन्य धातुओं के रूप भी इसी प्रकार सरलता से बन जाते हैं, जैसे—

२४२ उज्झति, २४४ कृषति, २४७ क्षिपति, २४८ गुफति, २४९ गुम्फति, २५१ छुरति, २५२ नुदति, २५४ तृपति, २५५ त्रुटति, २५६ दिशति, २५७ निलति, २५८ पृच्छति (सम्प्रसारण करके सूत्र ६६), २६१ मिलति, २६२ मिलति, २६४ मृडति, २६५ मृशति, २६६ रुजति, २६७ लिखति, २७० लुभति, २७२ विधति, २७३ विशति, २७४ वृश्चति (सम्प्रसारण करके देखें सूत्र ३८), २७७ सीदति (सद् से सीद् करके देखें सूत्र ११), सृजति, २७९ स्पृशति, २८० स्फुटति, २८१ स्फुरति।

२४५ कॄ+अ+ति आने पर

सूत्र ६९ ऋत इद्धातोः—(७-१-१००) दीर्घ ऋकारान्त धातु के अङ्ग को इत् आदेश हो जाय। यह इ अन्तिम ॠ के स्थान पर होती है। क्+इ+र्+ति=किरति (ॠ स्वर रपर होकर आता है) किरतः, किरन्ति, किरसि, किरथः, किरथ, किरामि, किरावः, किरामः। इसी आधार पर २५० गॄ—से—गिरति—गिरतः—गिरन्ति।

सूत्र ७० किरतौ लवने—(६-१-१४०) उप उपसर्ग से परे कॄ धातु को सुट् का आगम हो यदि उसका अर्थ काटना है। उपस्किरति। ध्यान रहे सुट् से केवल स् बचता है और वह टित् होने से धातु के पहले आता है।

सूत्र ७१ अचि विभाषा—(८-२-२१) गॄ धातु के रेफ का विकल्प से लकार हो जाय यदि उससे परे अजादि प्रत्यय हो। अजादि से यहाँ श का अ ग्रहण किया जायगा। अतः इसके दो रूप होंगे—गिरति/गिलति। चूँकि सूत्र में विकल्प है।

२६३ मुच्+अ+ति आने पर

सूत्र ७२ शे मुचादीनाम्—(७-१-५९) मुच्, लिप्, विद् लुप्, सिच्, कृत्, खिद् तथा पिश् धातुओं को नुम् का आगम हो यदि उनसे परे श प्रत्यय आवे। चूँकि यह नुम् श परे कहा गया है अतः केवल लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में ही होगा।

अतः मु+न्+च्+अ+ति आने पर सवर्ण ञ् करके मुञ्चति मुञ्चतः, मुञ्चन्ति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आदि। ध्यान रहे नुम् से केवल न् शेष रहता है। यही न् अगले वर्ण के वर्ग में बदल जाता है। यथा—२६८ लिम्पति, लिम्पतः, लिम्पन्ति। यहाँ पर वर्ण प है अतः न् म् में बदल गया। इसी आधार पर २४३ कृन्तति, २७६ सिञ्चति (जैसे मुञ्चति) २६९ लुम्पति, २७१ विन्दति, २७५ व्यच्+अ+ति आने पर सूत्र ६६ से विचति, विचतः, विचन्ति। २४६ क्षि+य+ति=क्षियति (इयङ् होकर) क्षियतः, क्षियन्ति।

२५९ भ्रस्ज्+अ+ति आने पर सूत्र ६६ से भृ+स्+ज्+अ+ति आया। इसमें स् से ज् परे होने पर पहले स् के स्थान में श् (श्चुत्व) फिर श् के स्थान में ष् (व्रश्चभ्रस्ज से) तदनन्तर ष् के स्थान में जश् ज् होकर भृज्जति रूप बनता है। आगे भृज्जतः, भृज्जन्ति। इसी आधार पर मस्ज से मज्जति, मज्जतः, मज्जन्ति रूप बनते हैं।

१—लट् लकारः (क्रमशः) परस्मैपदम्

(७) रुधादिगणः

इस गण में केवल दो नये सूत्र लगते हैं धातुएँ भी केवल ९ हैं।

२८२ छिद्+ति आने पर

सूत्र ७३ रुधादिभ्यः श्नम्—(३-१-७८) रुधादि गण की धातुओं से श्नम् आवे। यह भी शप् का बाधक है। इससे केवल न शेष रहता है। श्नम् में म् इसलिए रखा गया है कि यह मित् बन जाय। मित् बन जाने से मित् प्रत्यय सदा अन्त्य अच् के बाद आता है। अतः छि+न+द्+ति स्थिति बनती है। तब द् का चर्त्व होकर छिनत्ति रूप बनता है। आगे छि+न+द्+तस् आने पर सूत्र २४ से न के अ का लोप हो जाता है, तो छि+न्+द्+तस् स्थिति बनती है। इससे झरोझरिसवर्णे सन्धि से द् का लोप हो जाता है और छिन्तः रूप बनता है परन्तु यह विकल्प से लगता है अतः जब लोप नहीं होता तो छिन्त्तः बनता है (चर्त्व करके) आगे छि+न्+द्+अन्ति=छिन्दन्ति सामान्य रीति से बन जाता है। और भी छि+न+द्+सि=छिनत्सि, छिन्थः, छिन्थ, छि+न+द्+मि=छिनद्मि, छिन्द्वः, छिन्द्मः।

इसी आधार पर २८४ भिद् तथा २८५ भुज् के रूप बनेंगे। ये स्पष्टता के लिए पूरे दिये जाते हैं—

भिनत्ति —	भिनत्सि —	भिनद्मि	भुनक्ति —	भुनक्षि —	भुनज्मि
भिन्तः —	भिन्थः —	भिन्द्वः	भुङ्क्तः —	भुङ्क्थः	भुञ्ज्वः
भिन्दन्ति —	भिन्थ —	भिन्द्मः	भुञ्जन्ति —	भुङ्क्थ —	भुञ्ज्मः

उत्तम पुरुष में भुज् के ज् का क् इसलिए नहीं होता कि उसे झलादि प्रत्यय नहीं मिलते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२८६ युज्-- यु+न+ज्+ति=युनक्ति (चो: कु: से ज् का क् करके) यु+न्+ज्+तस्=युङ्क्त: आगे युञ्जन्ति। यु+न+ज्+सि=आने पर सि के स्थान पर षि होता है (देखें १७१) यु+न + क्+षि=युनक्षि रूप बनता है। यही प्रक्रिया भुनक्षि में भी होती है। आगे युङ्क्थ:, युङ्क्थ, युनज्मि, युंज्व:, युंज्म:।

२८७ रुध्-- रु+न+ध्+ति=रु+न+ध्+धि (ति के त् को ध् करके) (देखें सूत्र ३२) रु में र् के कारण णत्व होकर रुण+ध्+धि (रषाभ्यां नो ण: समानपदे से) आगे रुण+द् + धि (झलां जश् झशि से, देखें सन्धि ११)=रुणद्धि।

रु+न×ध्+तस् आने पर पहले न के अ का लोप होता है। (देखें २४) रु+न्+ध्+तस्=रु+न्+ध्+धस् (तस् के त् के स्थान में ध् करके देखें सूत्र ३२)= रुन्ध:। रुन्द्ध: (पूर्व ध् का झलां जश् झशि से द् करके) यहाँ इसके दो रूप इसलिए बनते हैं कि रुन्+ध्+धस् आने पर झरो झरि सवर्णे भी लग जाता है जो पहले ध् का लोप कर देता है तो रुन्ध: रह जाता है। पर जब वह लोप नहीं करता तो ध् का जश्त्व करके रुन्द्ध: रूप बनता है। आगे रु+न्+ध्+अन्ति=रुन्धन्ति। रुणत्सि, रुन्द्ध:, रुन्द्ध, रुणध्मि, रुन्ध्व:, रुन्ध्म:।

२८३ पिष्-- पि+न+ष्+ति आने पर ष्टुना ष्टु: से ति को टि करके पिनष्टि रूप बनता है। इसके अन्य सभी रूप पूर्व धातुओं की भाँति बनेंगे जो इस प्रकार हैं—

पिनष्टि,	पिनक्षि	—	पिनष्मि
पिंष्ट:,	पिंष्ठ:	—	पिंष्व:
पिंषन्ति,	पिंष्ठ	—	पिंष्म:

२८८ हिसि— हि+न+सि+ति आने पर (सि की इ गिर जाती है चूँकि इत् है पर यह इत् इसलिए रखी गयी है कि धातु इदित् हो जाय और इसमें नुम् आ जाय। अत: हि+न+स+ति में एक नुम् का और आगम होता है। (देखें इदितो नुम् धातो: सूत्र ९) तब हि+न+न्+स्+ति स्थिति बनती है। इसमें अगला सूत्र एक न् का लोप कर देता है।

सूत्र ७४ श्नान्नलोप:--(६-४-२३) श्नम् से परे न् का लोप हो जाय। तब हि+न+स्+ति=हिनस्ति। हि+न्+स्+तस्=हिंस्त: (न के अ के लोप होने पर) हि+न्+स्+अन्ति=हिंसन्ति आगे हिनस्सि, हिंस्थ:, हिंस्थ, हिनस्मि, हिंस्व:, हिंस्म:। ध्यान रहे यहाँ अपित् में न का अ नहीं गिरता शेष सभी रूपों में न के अ गिरने से वह अनुस्वार बनता है। (देखें सूत्र २४)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१—लट् लकारः (क्रमशः) परस्मैपदम्

(८) तनादिगणः

(इस गण में धातुएँ दो तीन ही काम की हैं)

२८९ डुकृञ्—कृ + ति आने पर

सूत्र ७५ तनादिकृञ्भ्यः उः—(३-१-७९) तन आदि तथा कृ धातु से उ प्रत्यय हो जाय। यह भी शप् का बाधक है। इस प्रकार इस गण की धातुओं में उ प्रत्यय लगता है। अतः कृ+उ+ति=कर्+उ+ति गुण करके करोति। कृ+उ+तस् आने पर= कर्+उ+तस्।

सूत्र ७६ अत उत् सार्वधातुके—(६-४-११०) उ प्रत्ययान्त कृ धातु के अकार को उकार हो जाय यदि उससे परे सार्वधातुक कित् ङित् प्रत्यय हो। कुर्+उ+तस्=कुरुतः। आगे कुर्+अन्ति आने पर अगला सूत्र लगता है—

सूत्र ७७ न भ कुर्छुराम्—(८-२-७९) भ संज्ञक तथा कुर् और छुर् की उपधा को दीर्घ न हो। यहाँ सूत्र ५६ के आधार पर कुर्+उ+अन्ति आने पर कु के उ को दीर्घ प्राप्त था उसे इसने (सूत्र ७७) रोक दिया। अतः कुरु+अन्ति=कुर्वन्ति रूप बना। मूल बात यह है कि सूत्रों में प्रायः अनुवृत्ति दूर तक चलती है, पर धातु का रूप तो वही रखना है। कर्+उ+सि=करोषि (इसमें इण् से परे स् को ष् करके (देखें सूत्र १७१) पित् होने से गुण हुआ। कुर्+उ+थस्=कुरुथः (गुण न होने पर) कुर्+उ+थ= कुरुथ। कर्+उ+मि=करोमि। कुरु+वस् तथा कुरु+मस् आने पर।

सूत्र ७८ नित्यं करोतेः—(६-४-१०८) कृ धातु से परे उकार का व तथा म परे रहते नित्य लोप हो। अतः कुर्+वः=कुर्वः, कुर्+मः=कुर्मः।

सूत्र ८९ संपरिभ्यां करोतौ भूषणे—(६-१-१२७) सम् और परि उपसर्ग पूर्वक कृ धातु को सुट् का आगम हो यदि भूषण अर्थ कहना हो। अतः सम्+करोति=संस्करोति, परि+करोति=परिष्करोति।

सूत्र ८० समवाये च—(६-१-१३८) समूह अर्थ में भी कृ को सुट् का आगम हो। संस्करोति, संस्कुर्वन्ति=संघीभवन्ति=एक होते हैं।

सूत्र ८१ उपात्प्रतियत्न-वैकृत-वाक्याध्याहारेषु च—(६-१-१३९) उप उपसर्ग से परे कृञ् को सुट् का आगम हो यदि उसका अर्थ प्रतियत्न, वैकृत या वाक्याध्याहार हो। उपस्कृतं भुङ्क्ते। प्रतियत्न का अर्थ गुण ग्रहण करना है। वैकृत=विकार। वाक्याध्याहार का अभिप्राय है वाक्य में जिस अंश की आवश्यकता हो उस एक अंग को पूरा करना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यथा—	उपस्कृता कन्या	—	सजायी गयी कन्या।
	उपस्कृताः ब्राह्मणाः	—	ब्राह्मण एकत्र हुए।
	उपस्कृतं भुंक्ते	—	विकृत वस्तु को खाता है।
	उपस्कृतं ब्रूते	—	अध्याहार करके कहता है।

२९० तनु — तन्+उ+ति=तनोति (गुण होकर) तन्+उ+तस्=तनुतः, तनु+अन्ति=तन्वन्ति। तनोषि, तनुथः, तनुथ। तनोमि, तन्वः, तनुवः, तन्मः, तनुमः (चूँकि उ का लोप विकल्प से होता है अतः उत्तम पुरुष के वस् तथा मस् के दो-दो रूप बनते हैं। (देखें सूत्र १९)

(१) लट् लकारः (क्रमशः) परस्मैपदम्

(९) क्रयादिगणः

२९१ अश् — अश्+ति आने पर

सूत्र ८२ क्रयादिभ्यः श्ना—(३-१-८१) क्रयादि धातुओं से श्ना प्रत्यय होता है। इससे केवल ना शेष रहता है। अतः अश्+ना+ति=अश्नाति। अश्+ना+तस् आने पर ना के आ को ई हो जाता है। (देखें सूत्र ५९)=अश्नीतः। अश्+ना+अन्ति=अश्नन्ति (देखें सूत्र ५१) आगे अश्नासि, अश्नीथः, अश्नीथ, अश्नामि, अश्नीवः, अश्नीमः। इसी आधार पर २९९ बध्नाति, ३०० मथ्नाति।

२९२ क्रीञ् — क्री+ना+ति=क्रीणाति (**रषाभ्यां नो णः** से ना को णा करके) आगे क्रीणीतः, क्रीणन्ति (अश्नन्ति की भाँति) क्रीणासि, क्रीणीथः, क्रीणीथ, क्रीणामि, क्रीणीवः, क्रीणीमः।

इसी प्रकार २९३ गृह्णाति (ग्रहज्या से सम्प्रसारण करके र ऋ होता है) (देखें सूत्र ६६)

सम्प्रसारण यण् का उल्टा होता है, अर्थात् य् के स्थान में इ, व् के स्थान में उ, र के स्थान में ऋ तथा ल के स्थान में लृ होता है। आगे गृह्णीतः, गृह्णन्ति, गृह्णासि, गृह्णीथः, गृह्णीथ, गृह्णामि, गृह्णीवः, गृह्णीमः।

२९४ ज्ञा — ज्ञा+ना+ति=जानाति (देखें सूत्र १०२)

आगे जानीतः जानन्ति, जानासि, जानीथः, जानीथ, जानामि, जानीवः, जानीमः। इसी आधार पर २९५ वृणाति तथा २९८ प्रीणाति रूप बनेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२९६ धूञ् — धू + ना + ति = धूनाति आने पर

सूत्र ८३ प्वादीनां ह्रस्वः—(७-३-८०) शित् परे रहते प्वादिओं को ह्रस्व हो। इसके आधार पर धुनाति रूप बन जाता है। प्वादिओं में पूञ्, लूञ्, वृञ् आदि धातुएँ आती हैं। अत: २९७ पुनाति, ३०४ लुनाति में भी ह्रस्व हो जाता है। आगे पुनीतः, पुनन्ति, पुनासि, पुनीथः, पुनीथ, पुनामि, पुनीवः, पुनीमः। इसी प्रकार ३०१ मुष्णाति, ३०२ मृद्नाति, ३०३ मृणाति, ३०५ वृणाति, ३०६ शृणाति सभी रूप बनते हैं।

लट् लकार: (क्रमशः) परस्मैपदम्

१०. चुरादिगण:

३०७ अंक — अंक + ति आने पर

सूत्र ८४ चुरादिभ्यो णिच्--(३-१-२५) चुरादि गण की धातुओं से णिच् हो। सामान्य रूप से णिच् प्रेरणा के लिए आता है, पर यहाँ णिच् अपने ही अर्थ में होता है। इससे धातु के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता। इसके लाने के दो प्रयोजन हैं—एक तो चुरादिगण की धातुओं के स्वरूप को बनाने में सहायक होना दूसरे इसके लिए धातु को णित् बनाना है। णिच् से केवल इ शेष रहती है। अत: अंक + इ + ति, गुण करके अंके + ति, (शप् लाकर) अंके + अ + ति = अंकयति। आगे अंकयतः, अंकयन्ति। अंकयसि, अंकयथः, अंकयथ, अंकयामि, अंकयावः, अंकयामः। ये सभी भ्वादि की भाँति बनते हैं।

सूत्र ८५ अचः परस्मिन् पूर्वविधौ—(१-१-५७) पर को निमित्त मानकर किया गया अच् वाला आदेश स्थानी के समान होता है, यदि स्थानीभूत अच् से पहले जिसे देखा गया है उसे कार्य करना है।

इस सूत्र का इस स्थल पर एक विशेष महत्त्व है। यहाँ क थ + इ + ति आने पर भ्वादि की भाँति शप् का 'अ' आता है। इससे कथ + इ + अ + ति स्थिति बनती है। इसमें भी "अतो लोपः" (६-४-४८) से कथ के थ वाले अ का लोप हो जाता है। यह सूत्र उपदेश काल में अदन्त अङ्ग के अ का लोप करता है यदि उससे परे आर्द्धधातुक हो। यहाँ कथ के थ में "अ" उपदेश पढ़ा गया है अत: अतो लोपः की परिधि में आता है क्योंकि उससे परे णिच की "इ" है। आर्धधातुक प्रत्यय है। अत: अब कथ् + इ + अ + ति स्थिति बनती है। पर कथ के अ के लोप होने पर एक नई समस्या खड़ी हो जाती है। समस्या यह है कि अब कथ् के क का "अ" उपधा में पड़ गया। इस स्थिति में उसमें **"अत उपधाया"** (७-२-११६) की प्रवृत्ति हो गयी। **"अत उपधाया"** कहता है कि ञित् और णित् प्रत्यय परे रहते उपधा के अकार को वृद्धि हो। यहाँ इ णित् है तो कथ् का काथ् क्यों न बन जाए। इसका समाधान **"अचः परस्मिन् पूर्व विधौ"** करता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस सूत्र का कहना है कि थ के "अ" का लोप पूर्व कार्य करने के लिए किया गया है अतः पर का निमित्त होने से उसका लोप होने पर भी लोप न माना जाय। अतः जब उसका लोप नहीं माना गया तो कथ के क का अ उपधा में न रहा और उसकी अत उपधाया से वृद्धि नहीं हुई। इस प्रकार कथ + इ + अ + ति = कथे+अ+ति = कथय् + अ + ति = कथयति रूप बना। आगे सामान्य रीति से कथयतः, कथयन्ति, कथयसि, कथयथः, कथयथ, कथयामि, कथयावः, कथयामः रूप होते हैं।

सूत्र ८६ णिचश्च—(१-३-७४) णिजन्त (जिसके अन्त में णिच् हो) आत्मनेपद हो यदि क्रिया का फल कर्त्ता के लिए हो। इस दृष्टि से जब क्रिया का फल कर्तृगामी न होगा तो धातु परस्मैपद रहेगी, अतः चुरादिगण में प्रायः सभी धातुएँ उभयपदी होती हैं। यथा—चोरयति, चोरयते, अंकयति, अंकयते।

सूत्र ८७ मितां ह्रस्वः—(६-४-९२) मित् धातुओं को ह्रस्व हो। घट और ज्ञप आदि कुछ धातु मित् मानी जाती हैं। अतः इनको ह्रस्व का विधान किया गया है। घट धातु से णिच् होने पर इसके उपधा की वृद्धि होकर घाटि बनता है। इसी स्थिति में मितां ह्रस्वः लगता है और इसे पुनः घटि बना देता है। इससे भी शप्, तिप् आदि उसी भाँति आते हैं जैसे कथ और अङ्क से। अतः घटयति रूप बनता है। इसी प्रकार ज्ञप से ज्ञापि तथा पुनः ज्ञपि हो जाता है और इससे परे भी शप् तिप् आदि आते हैं। सीधी बात यह है कि पाणिनि ने इस गण में धातुओं को वहीं अदन्त पढ़ा है जहाँ उसमें उन्हें गुण वृद्धि नहीं करना अन्यथा उन्हें हलन्त ही रखा है।

३०८ से लेकर ४२५ तक की सभी चुरादिगणी धातुओं के रूप इन्हीं सूत्रों से बनेंगे। जहाँ अ उपधा में रहेगा वहाँ वृद्धि होगी अन्यथा कोई विशेष बात नहीं। इनका पहला रूप धातु गणना में देखें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिच्छेद ४

लट् लकारः (आत्मनेपदम्)

आत्मनेपदी धातुएँ संख्या में कम हैं, पर उनका व्यवहार कम नहीं होता। ईक्षते कहने में अटपटा सा लगता है पर निरीक्षण सामान्य व्यवहार का शब्द है। इसी प्रकार राजते, सेवते, शोचते, द्योतते, वर्तते, सहते आदि बहुत सी लोकप्रिय धातुएँ हैं। एक भ्रान्ति यह भी है कि आत्मनेपदी धातुओं के रूप कठिनता से बनते हैं। ऐसी बात नहीं। कभी-कभी यह भी भ्रम होता है कि आत्मनेपदी तथा कर्मवाच्य में कोई अन्तर नहीं। यह अन्तर यद्यपि कुछ ही स्थलों पर होता है पर है अवश्य। केवल आर्धधातुक लकार ऐसे होते हैं जिनमें यह अन्तर नहीं रहता पर सार्वधातुक लकारों में यह स्पष्ट है। आत्मनेपदी धातुओं में निम्नलिखित प्रत्यय जुड़ते हैं—

त —	थास् —	इड्
आताम् —	आथाम् —	वहि
झ —	ध्वम् —	महिङ्

अतः ४२६ अङ्क — अंक्+त आने पर अङ्क+शप्+त= अंक्+अ+त आता है, तब अगला सूत्र लगता है।

सूत्र ८८ टित आत्मनेपदानां टेरे—(३-४-७९) टित् लकारों में आने वाले प्रत्ययों की टि के स्थान में एकार हो जाय। अङ्कते। लट्, लिट्, लृट्, लुट् और लोट् टित् हैं क्योंकि इन सभी में ट् है जो गिर् जाता है। (ट्+इत्=टित्)

आगे अंक्+अ+आताम् आने पर

सूत्र ८९ आतो ङितः—(७-२-८१) अकार से परे ङित् प्रत्ययों के आकार के स्थान में इय् हो जाय। यहाँ ध्यान देने की बात है कि आताम् के केवल आ के स्थान में इय् होता है अतः उसका ताम् बच जाता है। इस ताम् की टि आम् को एकार होकर पुनः ते बनता है। अतः अक्+अ+इय्+ते स्थिति बनी।

सूत्र ९० लोपो व्योर्वलि—(६-१-६६) वलादि प्रत्यय परे रहते य् और व् का लोप हो जाय। यहाँ ते ही वलादि है। अतः इय् के य् का लोप हो जाता है। इस प्रकार अक् अ+इ+ते=अकेते रूप बनता है।

आगे अक्+अ+झ=अक्+अ+अन्त=अङ्कन्ते। (टि को ए करके)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंक् + अ + थास् = अङ्क + थास् आने पर

सूत्र ९१ थासः से—(३-४-८०) टित् लकारों में थास् के स्थान पर "से" हो जाय। अतः अङ्कसे रूप बना। आगे अंकेथें (आथाम् के आ के स्थान में इय् करके, य् का लोप करके तथा टि को एत्व करके)

अंक् + अ + ध्वम् = अङ्कध्वे (टि का ए करके)

अंक् + अ + इ = अङ्के। अंक् + अ + वहि (एत्व) = अङ्कवहे आने पर सूत्र ४ के आधार पर अङ्कावहे। इसी प्रकार अंक् + अ + महि (एत्व करके) अङ्कामहे।

इसी आधार पर सेव और शुभ के रूप पूरे दिये जाते हैं—

सेवते —	सेवसे —	सेवे	शोभते —	शोभसे —	शोभे
सेवेते —	सेवेथे —	सेवावहे	शोभेते —	शोभेथे —	शोभावहे
सेवन्ते —	सेवध्वे —	सेवामहे	शोभन्ते —	शोभध्वे —	शोभामहे

आगे सुविधा के लिए अन्य धातुओं का पहला रूप दिया जाता है—

४२७ अयते, ४२८ ईक्षते, ४२९ ईषते, ४३० ईहते, ४३१ ऊहते, ४३२ प्यायते, ४३३ एजते, ४३४ कत्थते, ४३६ कलते, ४३८ काशते, ४४१ क्रन्दते, (देखें सूत्र ९) ४४२ क्रपते, ४४३ क्लन्दते (सूत्र ९), ४४४ क्लेशते, ४४५ क्षमते, ४४६ क्षोभते, ४४७ खनते, ४४८ गर्हते, ४४९ गाहते, ४५० गूहते, (सूत्र १६९) ४५१ ग्रन्थते (सूत्र ९) ४५२ ग्रसते, ४५३ घटते, ४५४ चेष्टते, ४५५ जृम्भते (देखें सूत्र ९) ४५६ त्वरते, ४५८ लभते, ४६० त्रपते, ४६१ त्रायते, ४६२ दक्षते, ४६३ ददते, ४६४ दीक्षते, ४६५ द्रेकते, ४६६ द्योतते, ४६७ धरते, ४६८ ध्वंसते, ४६९ पवते, ४७० प्रथते, ४७१ प्लवते, ४७२ बाधते, ४७३ बोधते, ४७४ भाषते, ४७५ भासते, ४७६ भ्राजते, ४७७ भिक्षते, ४७८ भ्रंशते, ४७९ मण्डते (सूत्र ९), ४८० मन्दते (सूत्र ९), ४८१ मुञ्चते (नुम्) ४८२ मुण्डते, (सूत्र ९) ४८३ मोदते, ४८४ यतते, ४८५ याचते, ४८७ रभते, ४८८ रमते, ४८९ राजते, ४९० रोचते, ४९१ रेभते, ४९२ लंघते, ४९३ लज्जते, ४९४ लम्बते (सूत्र ९), ४९५ लोकते, ४९६ लोचते, ४९७ वंकते (सूत्र ९), ४९८ वन्दते (सूत्र ९), ४९९ वर्तते, ५०० वर्धते, ५०१ वेपते, ५०२ वेष्टते, ५०३ व्यथते, ५०४ शकते ५०५ शद् शीयते, (देखें सूत्र ११) ५०६ शपते, ५०७ शिक्षते, ५०८ शोभते, ५०९ श्लाघते, ५१० श्लोकते, ५११ स्तम्भते, ५१२ स्मयते, ५१३ सहते, ५१४ सूदते, ५१५ सेवते, ५१६ स्पन्दते, ५१७ स्पर्द्धते, ५१८ स्फोटते, ५१९ स्यन्दते, ५२० स्वजते, ५२१ स्वादते, ५२२ स्वेदते, ५२३ स्रंसते, ५२४ ह्लादते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूत्र ९२ रञ्जेश्च—(६-४-२६) शप् परे रहते रञ्ज आदि से अनुनासिक का लोप हो जाय। इसके अनुसार ४८६ रज् + अ + ते = रजते। रजेते, रजन्ते, रजसे, रजेथे, रजध्वे, रजे, रजावहे, रजामहे।

४३५ कमु + अ + त आने पर

सूत्र ९३ कमेर्णिङ्—(३-१-३०) कम् धातु से स्वार्थ में णिङ् होता है। णिङ् से केवल इ शेष रहती है। णित् होने से यह धातु में वृद्धि करती हैं। अतः कामि + अ + त स्थिति बनती है। इसमें गुण करके कामे + अ + त = कामय् + अ + त = कामयते टि का ए करके) कामयेते, कामयन्ते, कामयसे, कामयेथे, कामयध्वे, कामये, कामयावहे, कामयामहे।

४२७ अय् — अय् + अ + ते = अयते आने पर

सूत्र ९४ उपसर्गस्यायतौ—(८-२-१९) यदि उपसर्ग से परे अय् धातु आवे तो उपसर्ग का रेफ लकार में बदल जाय। जैसे—

परा + अयते = पलायते। प्र+अयते = प्लायते।

४३९ कुर्द् + अ + ते आने पर—

सूत्र ९५ उपधायां च—(८-२-७८) यदि किसी धातु की उपधा में रेफ या वकार हो और उस र या व से परे यदि हल् वर्ण हो तो उस रेफ या वकार के परे रहते धातु के उपधा वाले इक् को दीर्घ हो जाय। अतः कूर्द् + अ + ते = कूर्दते, कूर्देते, कूर्दन्ते, कूर्दसे कूर्देथे, कूर्दध्वे, कूर्दे, कूर्दावहे, कूर्दामहे रूप बनते हैं।

४३७ कृप् + अ + ते आने पर

सूत्र ९६ कृपो रोलः—(८-२-१८) कृप् धातु के गुण हुए और ऋकार विशिष्ट जो रेफ है उन दोनों को ल आदेश हो जाय। यहाँ "**पुगन्तलघूपधस्य च**" से गुण होता है, अतः रूप निम्न प्रकार होंगे—

कल्पते	—	कल्पसे	—	कल्पे
कल्पेते	—	कल्पेथे	—	कल्पावहे
कल्पन्ते	—	कल्पध्वे	—	कल्पावहे

४५७ डा + अ + ते = डे + अ + ते = डयते, डयेते, डयन्ते, आदि।

४५९ तिज् + अ + ते आने पर

चूंकि यह प्रायः सन्नन्त होती है, इसमें धातु का द्वित्व आदि होता है। अतः तिज् + सन्+अ + ते, तिज् + तिज्+स् + अ+ते = तितिज् + स्+अ + ते (ज् को क् करके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देखें (चोः कुः) तितिक्+स्+अ+ते=तितिक्+ष्+अ+ते (स् को ष् करके, देखें सूत्र १७१)। तितिक्षते, आगे तितिक्षेते, तितिक्षन्ते, तितिक्षसे, तितिक्षेथे, तितिक्षध्वे, तितिक्षे, तितिक्षावहे, तितिक्षामहे।

१—लट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(२) अदादिगणः

५२५ आस्+ते=आस्ते (यहाँ शप् का लोप हो जाता है।)

आस्+आतास्=आसाताम्=आसाते (टि को ए करके)

एक बात यहाँ ध्यान देने योग्य है कि आताम् का इय् नहीं हुआ। कारण यह है कि सूत्र 'अ' से परे आने वाले आ को ङित् प्रत्ययों में ही इय् करता है। यहाँ शप् के लोप होने से उसे 'अ' नहीं मिला, अतः धातु अकारान्त नहीं हुई। इसीलिए यहाँ आताम् ऐसे ही जुड़ गया। आगे आस्+झ आने पर—

सूत्र ९७ आत्मनेपदेष्वनतः—(७-१-५) आत्मनेपदेषु+अनतः अर्थात् अकार को छोड़कर किसी अन्य वर्ण से आत्मनेपद के झ् को अत् हो जाय। यह "झोऽन्तः" का अपवाद है। इसमें झ् का अत् होकर उसका अ मिल जाता है। अतः अत बैठता है, अन्ति नहीं। अतः आस्+अत=आसत (टि को ए करके आसते। आगे आस्+से=आस्से (देखें सूत्र ९१) आस्+आयाम्=आसाथाम् (टि का ए करने पर=आसाथे) आगे आस्+ध्वम् आने पर।

सूत्र ९८ धि च—(८-२-२५) धकारादि प्रत्यय परे होने पर स् का लोप हो जाय। आध्वम्=आध्वे (टि का एत्व करके), आस्+इ=आसि=आसे, आस्+वहि=आस्वहे, आस्+महि=आस्महे।

५२६ इङ्—(यह धातु अधिपूर्वक आती है) अतः अधि+इ+ते=अधीते। आगे अधि+इ+आताम् आने पर सूत्र १७ के आधार पर अधि+इय्+आताम्=अधीय्+आताम् (इ का सवर्ण दीर्घ करके) अधीयाताम् स्थिति बनती है, तो इसकी टि का एत्व करके अधीयाते रूप बनता है। बहुवचन में अधि+इ+झ=अधि+इय्+अत=अधीयत=अधीयते। (इसमें पहले इय् आदेश होता है तब सवर्ण दीर्घ, देखें सूत्र १७) आगे अधि+इ+से=अधीसे=अधीषे (इण् के परे होने से स् का ष् करके) अधि+इ+आथाम्=अधि+इय्+आथाम्=अधीयाथाम्=अधीयाथे। आगे अधीध्वे अधीये, अधीवहे, अधीमहे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५२७ ईड्+ते=ईट्टे (ष्टुत्व करके), ईड्+आताम्=ईडाताम्=ईडाते। ईड्+अते=ईडते। ईड्+थास्=ईड्+से=ईडिषे (देखें सूत्र १५७) ईड्+आथाम्=ईडाथाम=ईडाथे, ईडिढ्वे (देखें १५७) ईड्+इ=ईडि=ईडे, आगे ईड्वहे, ईड्महे।

इसी आधार पर ५२८ ईर्ते। ईराते, ईरते, आदि।

(५२८ अ) **चक्षिङ्**—चक्ष्+त आने पर सूत्र १६७ से इसके क्ष में क् का लोप झलादि प्रत्यय परे होने से हो जाता है। तब चष्+त=चष्ट (ष्टुत्व करके) इसकी टि का एत्व करके चष्टे रूप बनता है। पर जहाँ झलादि प्रत्यय नहीं है वहाँ क् का लोप न होगा। तब चक्ष्+आताम्=चक्षाते (टि का ए करके) आगे चक्ष्+अत्+ए=चक्षते।

चक्ष्+से आने पर क् का लोप होता है। तब चष्+से आने पर "**षढोः कः सि**" के आधार पर ष् के स्थान में क् हो जाता है। इस क् से परे से को षे होकर मिलने पर चक्षे बनता है। आगे चक्षाथे, चड्ढ्वे, चक्षे, चक्ष्वहे, चस्महे।

५२९ ब्रूञ् — ब्रू+ते=ब्रूते। ब्रू+आताम्=ब्रुवाताम् ब्रू, के उ के स्थान में उवङ् होकर ब्रुवाते। आगे ब्रू+झ=ब्रू+अते=ब्रुवते। ब्रू+से=ब्रूषे। ब्रुवाथे, ब्रूध्वे, ब्रू+इ=ब्रुवे (उवङ होकर) ब्रू+वहे=ब्रूवहे, ब्रू+महे=ब्रूमहे।

५३० आङ् पूर्वक शास्=आशास्+ते=आशास्ते। आशास्+आताम्=आशासाताम्=आशासाते, आशास्+अते=आशासते। आशास्+से=आशास्से, आशासाथे, आशाध्वे, आशासे, आशास्+वहे=आशास्वहे, आशास्+महे=आशास्महे।

५३१ शीङ्+ते आने पर

सूत्र ९९ शीङः सार्वधातुके गुणः—(७-४-२१) शीङ् धातु से सार्वधातुक प्रत्यय परे रहते धातु को गुण हो जाय। यहाँ शंका उठती है कि सार्वधातुक प्रत्यय आने पर इसे गुण तो होता ही, तब नया सूत्र क्यों बनाया। इसका समाधान यह है कि शीङ् ङित् है और इसलिए आत्मनेपदी है। आत्मनेपद के सभी प्रत्यय अपित् होते हैं। अतः उनके रहने पर गुण का निषेध हो जाता है। पर व्यवहार में शेते ही आता है। अतः उसे बनाने के लिए एक नया सूत्र बनाना पड़ा। शेते। शीङ्+आताम्=शे+आताम्=शयाताम्=शयाते (टि को ए करके), शी+झ=शी+अत्+अ=शे+अते=शे+अते (टि को ए करके)

सूत्र १०० शीङो रुट्—(७-१-७) शीङ् से परे झ के आदेश अत से पहले रुट् का आगम हो। शेरते (रुट् से केवल र् शेष रहता है) आगे शेषे, शयाथे, शेध्वे, शे+इ=शयि=शये, शेवहे, शेमहे।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१—लट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(३) जुहोत्यादिगणः

५३२ दा + दा + ते (जुहोत्यादिभ्यः श्लुः देखें ४७)

दा + दा + ते = द + द् + ते = दत्ते (देखें सूत्र ४८ से ५१ तक) आगे दा + दा + आताम् = दद् + आताम् = ददाताम् = ददाते (टि की एत्व करके) दा + दा + झ = द + द् + अत = ददत = ददते (ध्यान रहे झ् के स्थान में अत् होता है, अतः झ का अ लेकर अत् + अ = अत बनता है। दद् + से = दत्से (द् का चर्त्व करके) ददाथे, दद्ध्वे। ददे, दद्वहे, दद्महे।

५३३ धा + धा + ते = ध + ध् + ते = धत्ते (चर्त्व तथा टि को एत्व करके) ध + ध् + आताम् = ध + ध् + आते = धधाते = दधाते (देखें सूत्र ५२) आगे दधते (झ को अत तथा टि को ए करके), धत्से, दधाथे, दद्ध्वे। दधे, दध्वहे, दध्महे (कोई नया सूत्र नहीं लगता।)

५३४ माङ् — मा मा + ते = ममाते आने पर

सूत्र १०१ भृञामित्—(७-४-७६) भृञ्, माङ् तथा ओहाङ् तीनों के अभ्यास को इकार अन्तादेश हो श्लु परे रहते। मिमाते = मिमीते (देखें सूत्र ५९) मिमाते, मिमते, मिमीषे, मिमाथे, मिमीध्वे। मिमे, मिमीवहे, मिमीमहे। इसी आधार पर हा से जिहीते, जिहाते, जिहते आदि रूप बनते हैं।

(१) लट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(४) दिवादिगणः

५३८ जनी + ते आने पर

सूत्र १०२ ज्ञाजनोर्जा—(७-२-७९) ज्ञा (जानना) तथा जन् (उत्पन्न होना) धातुओं को जा आदेश हो शित् प्रत्यय परे रहते। यहाँ "**दिवादिभ्यः श्यन्**" में "य" शित् है। अतः जा + य + ते = जायते। जा + य + आताम् आने पर चूंकि य अकारान्त है अतः इसमें भी भ्वादिगण की तरह आताम् के आ के स्थान में इय् होगा। जाय + इय + ताम् = जायेताम् (य् का लोप करके) जायेताम् की टि का एत्व करके = जायेते रूप बनता है। जा + य + झ = जाय + अन्त = जायन्ते (टि का एत्व करके तथा अतोगुणे) आगे जायसे, जायेथे, जायध्वे, जाये, जायावहे, जायामहे। इस गण की शेष सभी धातुओं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के रूप लगभग भ्वादिगणी के समान होते हैं। केवल शप् के स्थान पर श्यन् आने से इनमें य रहता है। जैसे—

क्लिश्यते	—	क्लिश्यसे	—	क्लिश्ये
क्लिश्येते	—	क्लिश्येथे	—	क्लिश्यावहे
क्लिश्यन्ते	—	क्लिश्यध्वे	—	क्लिश्यामहे

और भी इसी आधार पर ५३७ खिद्यते, ५३९ डीयते, ५४० तप्यते, ५४१ दीप्यते, ५४२ दूयते, ५४३ धीयते, ५४४ पद्यते, ५४५ पीयते, ५४६ प्रीयते, ५४७ बुध्यते, ५४८ मन्यते, ५४९ मायते, ५५० युज्यते, ५५१ युध्यते, ५५२ रुध्यते, ५५३ लीयते, ५५४ वाश्यते, ५५५ विद्यते, ५५६ व्रीयते, ५५७ सूयते, ५५८ सृज्यते।

१—लट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(५) स्वादिगणः

५५९ अश् — अश्+नु+ते=अश्नुते (सभी सामान्य सूत्रों से) अश्+नु+आताम्=अश्नु+आताम्=अश्नुवाते (देखें सूत्र १७) अश्+नु+झ+ए, अश्नु+अत्+ए (देखें सूत्र ९७ झ का अत् करके)=अश्नु+अते=अश्नुवते (देखें सूत्र १७) इसी आधार पर अश्नुषे, अश्नुवाथे, अश्नुध्वे, अश्नुवे, अश्नुवहे, अश्नुमहे।

५६० चिञ् — चि+नु+ते=चिनुते (सामान्य रीति से) चि+नु+आताम्=चिन्वाताम्=चिन्वाते (यहाँ सूत्र १७ की प्रवृत्ति नहीं होती क्योंकि नु से पहले संयोग नहीं है जैसे अश्नुते में था। आगे चि+नु+अत्+ए=चिन्वते। चिनुषे, चिन्वाथे, चिनुध्वे, चिन्वे, चिन्वहे, चिनुवहे, चिन्महे, चिनुमहे। (देखें सूत्र १९) इसी तरह ५६१ धू—धूनुते-धून्वाते-धून्वते ५६२ षु-सुनुते-सुन्वाते-सुन्वते आदि।

१—लट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(६) तुदादिगणः

५६३ जुष्+अ+ते=जुषते (श से अ शेष रहता है) जुष्+अ+आताम्=जुषाताम् आने पर भ्वादिगण की भाँति अ से परे आ के स्थान में इय् होता है तथा य् का लोप। (देखें लोपो व्योर्वलि)=जुषेते (टि को एत्व करके) आगे जुष्+अ+अन्ते=जुषन्ते। जुष्+अ+थास्=जुष्+अ+से=जुषसे, जुषेथे, जुषध्वे, जुषे, जुषावहे, जुषामहे। इसी आधार पर ५६४ तुदते, तुदेते, तुदन्ते, तुदसे, तुदेथे, तुदध्वे, तुदे, तुदावहे, तुदामहे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसी प्रकार ५६६ नुदते, ५६७ मिलते, ५६८ मुञ्चते, (देखें सूत्र ७२) ५७० लजते, ५७१ विजते (उत् + विजते = उद् विजते) ५७२ विन्दते (देखें सूत्र ७२) ५७३ सिञ्चते, ५७४ शीयते (शद् देखें पाघ्राध्मा जिससे शद् का शीय होता है।) रूप बनते हैं।

५६९ मृङ् + अ + त = मृ + अ + त आने पर

सूत्र १०३ म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च–(१-३-६१) लुङ्, लिङ् और शित् प्रत्यय परे रहते अर्थात् सार्वधातुक लकारों में मृ धातु से तङ् हो जाय। तङ् से अभिप्राय है आत्मनेपद प्रत्यय। अतः मृङ् धातु से लट्, लोट्-विधिलिङ्, आशीर्लिङ् और लुङ् में ही आत्मनेपद होता है।

सूत्र १०४ रिङ्-शयग्-लिङ्क्षु—(७-४-२८) श प्रत्यय, यक् और यकारादि आर्ध-धातुक लिङ् परे रहते ऋ को रिङ् आदेश हो जाय। रिङ् से केवल रि रह जाता है। अतः म्रियते, म्रियेते, म्रियन्ते। यहाँ ध्यान देने की बात है कि ऋ से रि होने पर चूँकि इसे आगे श का "अ" मिलता है अतः "**अचिश्नुधातुभ्रुवां**" की प्रवृत्ति यहाँ हो जाती है और इ को इयङ् होकर रिय् + अ = रिय हो जाता है। इसी आधार पर ५६५ दृङ् से द्रियते आदि रूप भी बनते हैं।

(१) लट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(७) रुधादिगणः

५७५ छिदिर् — छिद् + त आने पर (इर् गिर जाता है)

छि + श्नम् + त = छि + न + द् + त = छि + न + द् + ते = छि + न् + द् + ते (न के अ का लोप होने पर देखें सूत्र २४) = छिन्त्ते (द् का चर्त्व करके) तथा "झरो झरि सवर्णे से) द् के लोप होने पर छिन्ते रूप बनता है।

आगे छिन्द्+आताम् = छिन्दाताम् = छिन्दाते (टि का ए करके) छिन्द्+झ।ते = छिन्द् + अत् + अ + ते = छिन्दते, छिन्त्से, छिन्दाथे छिन्द्ध्वे। छिन्दे, छिन्द्वहे, छिन्द्महे। इसी प्रकार ५७६ भिदिर (भिद्) (आवश्यक होने से इसके पूरे रूप दिये जाते हैं।)

भिन्ते	—	भिन्त्से	—	भिन्दे
भिन्दाते	—	भिन्दाथे	—	भिन्द्वहे
भिन्दते	—	भिन्द्ध्वे	—	भिन्द्महे

५७७ भुज् — भु + न + ज् + ते = भु + न् + ज् + ते (न के अ का लोप करके, देखें श्नसोरल्लोपः) = भुङ्क्ते — (ज् का क् करके देख सूत्र १२६ तथा न् को ङ् पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सवर्ण करके) आगे भुञ्जाते, भुञ्जते, भु+न्+ज्+से = (सभी पूर्व सूत्रों से) भु+न्+क्+से (देखें चोः कुः) = भु+न्+क्+षे (देखें सूत्र १७१) = भुङ्क्षे, भुञ्जाथे, भुङ्ग्ध्वे, भुञ्जे, भुञ्ज्वहे, भुञ्ज्महे ।

इसी आधार पर ५७८ युज् —

युङ्क्ते	—	युङ्क्षे	—	युञ्जे
युञ्जाते	—	युञ्जाथे	—	युञ्ज्वहे
युञ्जते	—	युङ्ग्ध्वे	—	युञ्ज्महे

५७९ रुध् —	रुन्धे	—	रुन्त्से	—	रुन्धे
	रुन्धाते	—	रुन्धाथे	—	रुन्ध्वहे
	रुन्धते	—	रुन्द्ध्वे	—	रुन्ध्महे

इनमें किसी में भी कोई नया सूत्र नहीं लगता ।

१—लट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(८) तनादिगणः

५८० डुकृञ् (कृ) कृ+उ+ते = कुरुते (देखें सूत्र ७६)
कुरु+आताम् = कुर्वाताम् = कुर्वाते (टि को ए करके)
कुरु+अते = कुर्वते, आगे कुरुषे, कुर्वाथे, कुरुध्वे, कुर्वे, कुर्वहे, कुर्महे ।

इसी प्रकार —

५८१ तनु—	तनुते — तनुषे (देखें १७१ से का षे) तन्वे			उ का लोप
	तन्वाते — तन्वाथे	तन्वहे—तनुवहे		विकल्प से होता
	तन्वते — तनुध्वे	तन्महे—तनुमहे		है देखें सूत्र १९
५८२ मनु—	मनुते — मनुषे — मन्वे			
	मन्वाते — मन्वाथे —	मन्वहे—मनुवहे		(देखें सूत्र १९)
	मन्वते — मनुध्वे —	मन्महे—मनुमहे		

१—लट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(९) क्र्यादिगणः

५८३ डुक्रीञ् — क्री+ना+ते = क्रीणाते आने पर सूत्र ५९ से आ को ई करके क्रीणीते रूप बनता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्री + ना + आताम् = क्रीणाताम् = क्रीणाते (आम् को एत्व करके) क्री + ना + झ = क्री + ना + अत् + ए = क्रीणते (देखें ५१) आगे क्रीणीषे, क्रीणाथे, क्रीणीध्वे, क्रीणे, क्रीणीवहे, क्रीणीमहे ।

५८४ ग्रह्, गृह्णीते (ग्रह का ग्रहिज्या से सम्प्रसारण, करके) = गृह्णीते (शेष कार्य क्री की भाँति) ग्रह + ना + आताम् + ए = गृह्णाते, ग्रह + ना + झ (ना के आ का लोप करके) गृह्णते, आगे गृह्णीषे, गृह्णाथे, गृह्णीध्वे, गृह्णे, गृह्णीवहे, गृह्णीमहे (देखें सूत्र १३६) इसी आधार पर ५८५ ज्ञा (ज्ञाजनोर्जा से जा करके) जानीते, ५८६ धुनीते, ५८७ पुनीते, ५८८ प्रीणीते, ५८९ लुनीते, ५९० वृणीते ।

१—लट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(१०) चुरादि गणः

इस गण की प्रायः सभी धातुएँ दोनों पदों में चलती हैं । दो चार ही ऐसी हैं जो केवल आत्मनेपद में चलती हैं जैसे अर्थ से अर्थयति नहीं बनता । अतः प्रार्थयति कहना अशुद्ध है ।

प्रार्थ + णिच् + शप् + ते = प्रार्थयते । आगे भ्वादिगण की तरह अर्थयेते, अर्थयन्ते आदि रूप बनते हैं । जो उभयपदी हैं उनके रूप भी इसी प्रकार चलते हैं । जैसे—

चोरयते	—	चोरयसे	—	चोरये
चोरयेते	—	चोरयेथे	—	चोरयावहे
चोरयन्ते	—	चोरयध्वे	—	चोरयामहे

२—लङ् लकारः (परस्मैपदम्)

(१) भ्वादिगणः

लट् की भाँति लङ् में बहुत सूत्रों की आवश्यकता नहीं पड़ती । केवल १५ सूत्रों से इस लकार के सभी गणों के रूप बन जाते हैं । आज को छोड़कर किसी भी भूतकाल की घटना के लिए लङ् लकार का प्रयोग किया जाता है । पाणिनि ने इसके लिए **"अनद्यतने लङ्"** लिखा है ।

१ अक् + तिप् आने पर = अक् + अ + ति (शप् का अ होकर)

सूत्र १०५ आडजादीनाम्—(६-४-७२) अजादि अङ्ग को आट् का आगम हो यदि उससे परे लुङ्, लङ्, लृङ् का कोई प्रत्यय हो । अतः आ + अक् + अ + ति स्थिति होती है ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूत्र १०६ इतश्च—(३-४-१००) ङित् लकारों के स्थान में आदेश होने वाले इकार का लोप हो जाय। अत: आकत् रूप बनता है। आगे आ+अक्+अ+तस् आने पर आकत: स्थिति बनती है।

सूत्र १०७ तस्थस्थमिपांतांतंतामः—(३-४-१०१) अर्थात् ङित् प्रत्ययों में निम्न रीति से आदेश हो जायँ—

तस्	के	स्थान	पर	ताम्,	थस्	के	स्थान	पर तम्
थ	,,	,,	,,	त,	मिप् ,,	,,	,,	अम्

इस आधार पर आकत: से आकताम् रूप बना। आगे आक्+अ+झि=आक्+अ+अन्त् (अन्ति की इ लोप होने पर, तथा अतो गुणे से)=आकन्त् आता है, इससे संयोग के अन्त में होने से त् का भी लोप हो जाता है। अत: आकन् रूप बनता है। आक्+अ+सिप्=आक+सि=इ के लोप होने पर आकस्=आक:। आक+तम्= आकतम्, आक+थ=आकत। आक+मिप्=आक+मि=आने पर मि का अम् तथा अतो गुणे से अ करके=आकम् रूप बनता है। आक+अस् आने पर

सूत्र १०८ नित्यंङितः—(३-४-९९) ङित् लकारों के उत्तम पुरुष के स् का लोप हो जाय। अत: **अतो दीर्घो यञि** से दीर्घ होकर आकाव तथा मस् आने पर इसी प्रकार आकाम रूप बनते हैं। अक् के सभी रूप इस प्रकार हैं—

आकत्	—	आक:	—	आकम्
आकताम्	—	आकतम्	—	आकाव
आकन्	—	आकत	—	आकाम

इसी आधार पर २ आटत्, ३ आश्वत्, ४ आतत्, ५ आर्घत्, ६ आर्चत्, ७ आर्जत्, ८ आर्दत्, १० आलत्, ११ आवत् आदि रूप बनते हैं।

१२ ईर्ष्य — आ+ईर्ष्य्+अ+त्=आ+ईर्ष्यत् स्थिति बनी।

सूत्र १०९ आटश्च—(६-१-१९०) आट् से अच् परे आने पर वृद्धि एकादेश हो जाय। आ+ई=ऐ=अत: ऐर्ष्यत् रूप बना, पूरे रूप इस प्रकार होंगे—

ऐर्ष्यत्	—	ऐर्ष्य:	—	ऐर्ष्यम्
ऐर्ष्यताम्	—	ऐर्ष्यतम्	—	ऐर्ष्याव
ऐर्ष्यन्	—	ऐर्ष्यत	—	ऐर्ष्याम्

१३ ऋछ — आ+ऋच्छत्=आर्च्छत्, आर्च्छताम् आर्च्छन्, आर्च्छ: आर्च्छतम्, आर्च्छत, आर्च्छम्, आर्च्छाव, आर्च्छाम।

१४ एज़् — ऐजत्	—	ऐजः	—	ऐजम्
ऐजताम्	—	ऐजतम्	—	ऐजाव
ऐजन्	—	ऐजत	—	ऐजाम

१५ कठ् — कठ् + अ + ति = कठत् (इ के लोप होने पर)

सूत्र ११० लुङ् लङ् लृङ्क्ष्वडुदात्तः—(६-४-७१) लुङ्, लङ्, लृङ् परे रहते हलादि अङ्ग को अट् का आगम हो। अतः अट् + कठत् = अकठत्। इसी प्रकार अपठत्, अचरत् आदि। अ + भू + अत् = अभवत्।

अभवत्	–	अभवः	—	अभवम्
अभवताम्	—	अभवतम्	—	अभवाव
अभवन्	—	अभवत	—	अभवाम

भ्वादिगण में हलादि धातुओं के रूप बनाने का सीधा सा उपाय यह है कि लट् के रूप से इ हटा दें, आरम्भ में अ या आ नियमानुसार जोड़ दें तथा सूत्र १०७ के परिवर्तन कर दें। जैसे गच्छति से अगच्छत्, पिबति से अपिबत्।

यहाँ एक बात का विशेष ध्यान रखना है कि यदि किसी धातु में उपसर्ग लगा है तो अट् वाला अ धातु में पहले जुड़ जायगा तथा उपसर्ग उस अ से पहले बैठेगा। जैसे—भवति से अभवत्

प्र + भवति = प्रभवति = प्र + अभवत् = प्राभवत्।

अनु + भवति = अनुभवति = अनु + अभवत् = अन्वभवत्।

सम् + श्रयति = संश्रयति = सम् + अश्रयत् = समश्रयत्। आदि

दूसरी बात विचारणीय है कि मूल धातु के आदेश में सार्वधातुक लकारों के प्रत्यय जोड़े जाते हैं। मूलधातु में नहीं। जैसे पीने के अर्थ में

पा — से पिब — अपिबत् होता है। इसी तरह

ष्ठा — से तिष्ठ — अतिष्ठत् तथा सृ—से धौ—अधावत् होता है

इसी आधार पर १६ अकांक्षत, १७ अकीलत्, १८ अकुञ्चत् १९ अकूजत्, २० अकर्षत्, २१ अक्रन्दत्, २२ अक्रामत्, २३ अक्वणत्, २४ अक्रीडत्, २५ अक्रोशत् २६ अक्षरत्, २७ अक्षयत्, २८ अक्षायत्, २९ अखञ्जत्, ३० अखनत्, ३१ अखादत्, ३२ अखेलत्, ३३ अगदत्, ३४ अगच्छत्, ३५ अगुञ्जत्, ३६ अगोपायत्, ३७ अगायत्, ३८ अगर्जत्, ३९ अगर्वत्, ४० अग्लायत्, ४१ अघसत्, ४२ अजिघ्रत्, ४३ अचरत्, ४४ अचर्वत्, ४५ अचलत्, ४६ अचेतत्, ४७ अचुम्बत्, ४८ अचूषत्, ४९ अजपत्,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५० अजयत्, ५१ अजीवत्, ५२ अजल्पत्, ५३ अज्वरत्, ५४ अज्वलत्, ५५ अतपत्, ५६ अतूषत्, ५७ अतरत्, ५८ अतर्जत्, ५९ अत्यजत्, ६० अदलत्, ६१ अर्दशत्, ६२ अदहत्, ६३ अयच्छत्, ६४ अद्रवत्, ६५ अपश्यत्, ६६ अधूपायत्, ६७ अधरत्, ६८ अधर्षत्, ६९ अधमत्, ७० अध्यायत्, ७१ अनटत्, ७२ अनदत्, ७३ अनमत्, ७४ अनन्दत्, ७५ अनयत्, ७६ अनर्दत्, ७७ अपचत्, ७८ अपटत्, ७९ अपतत्, ८० अपिबत्, ८१ अपुन्थत्, ८२ अपूषत्, ८३ अफलत्, ८४ अफुल्लत्, ८५ अबोधत्, ८६ अबृंहत्, ८७ अभजत्, ८८ अभणत्, ८९ अभवत्, ९० अभूषत्, ९१ अभरत्, ९२ अभ्रमत् — अभ्राम्यत, ९३ अमण्डत्, ९४ अमथत्, ९५ अमन्थत्, ९६ अमहत्, ९७ अमीलत्, ९८ अमूर्च्छत्, ९९ अमर्षत्, १०० अमनत्, १०१ अयजत्, १०२ अयच्छत्, १०३ अरक्षत्, १०४ अरटत्, १०५ अरणत्, १०६ अरुण्ठत्, १०७ अरोषत्, १०८ अरोहत् १०९ अलजत्, ११० अलपत्, १११ अलषत्, ११२ अलसत्, ११३ अलुञ्चत्, ११४ अलोठत्, ११५ अलुण्ठत्, ११६ अवजत्, ११७ अवदत्, ११८ अवनत्, ११९ अवपत् १२० अवमत्, १२१ अवसत्, १२२ अवहत्, १२३ अवाञ्छत्, १२४ अवयत्, १२५ अवेलत् १२६ अवेल्लत्, १२७ अव्रजत्, १२८ अशंसत्, १२९ अशपत्, १३० अशमत्, १३१ अशोचत्, १३२ अशूलत्, १३३ अश्रयत्, १३४ अशृणोत्, १३५ असजत्, १३६ असेधत्, १३७ अतिष्ठत्, १३८ अस्रवत्, १३९ अधावत्, १४० असर्पत्, १४१ अस्खलत्, १४२ अस्तनत्, ९४३ अस्मरत्, १४४ अस्वनत्, १४५ अहसत्, १४६ अहरत्, १४७ अहर्षत्, १४८ अह्लसत्, १४९ आह्वयत् (यह प्रायः आपूर्वक आती है।)

२—लङ् लकारः (परस्मैपदम्)

(२) अदादिगणः

१५० अद्— आ + अद्+त् आने

सूत्र १११ अदः सर्वेषाम्—अद् धातु से परे अपृक्त सार्वधातुक को अट् का आगम हो। यह सभी के मत से होता है। इसके अनुसार आ+अद्+अ + त् आने पर आदत् रूप बनता है। यहां यदि यह अ न लाते तो द् के परे त् होने के कारण द् का चर्त्व त् हो जाता, पर बनाना आदत् है अतः ऐसा करना पड़ा। अपृक्त का अर्थ है एक अक्षर वाला प्रत्यय। आगे आ + अद् + तस् = आद् + तस् = आद् + ताम् = आत्ताम्। यहाँ १११ से अट् का आगम इसलिए नहीं हुआ कि उससे परे अपृक्त हल् नहीं है। आद्+अन् + त् (इ के लोप होने पर) = आदन् (त् को संयोगान्त से लोप करके) आद् + अ+सिप्= आद्+स् = आदः (यहाँ पर सिप् के प् और इ गिरने पर केवल स् बचता है, अतः अट्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का आगम होता है।) आगे आद्+तम्=आत्तम् आत्त, आदम्, आद्व, आद्म। वस् और मस् का स् "**नित्यं ङितः**" से परे गिर जाता है। (देखें सूत्र १०८)

१५१ अस् — आ+अस्+त् आने पर

सूत्र ११२ अस्तिसिचोऽपृक्ते—(७-३-९६) विद्यमान सिच् और अस् धातु से परे अपृक्त हल् को ईट् का आगम हो। आत्+त् आने पर स् से परे अपृक्त हल् है अतः आस्+ई+त्=आसीत्, आस्+ताम्=आस्ताम्। अस्+अन्ति=अन्स्+अन् (ति की इ का तथा त् का लोप होने पर)=आसन्। आस+ई+स् (यहाँ सिप् का स् बचा है।)=आसीः आस+तस्=आस्तम्। आस्त, आसम्, आस्व, आस्म।

१५२ इण् — आ+इ+त् (वृद्धि करके देखें १०९)

आ+इ+ताम्=ऐताम्=आ+इ+अन्=आयन्।

यहाँ इ+अन् मिलने पर यन् बन जाता है फिर भी इसे आट् का ही आगम होता है, अट् का नहीं क्योंकि वह यन में भी इ को देखता है य को नहीं। आगे ऐः, ऐतम्, ऐत, आयम्, ऐव, ऐम।

१५४ अचकास्+त्=अचकास्त आने पर "**हलङ्याब्भ्योदीर्घात्**" से होता है, तब अचकास् वचता है। अचकास के स् को द् हो जाता है (देखें सूत्र ११३)

सूत्र ११३ तिप्यनस्तेः—(८-२-७३) अस् के स् को छोड़कर पदान्त स् को द् हो जाय यदि उससे परे तिप् हो। तब अचकाद् बना। अचकाद् होने पर वाऽवसाने से द् के स्थान में त् भी हो जाता है। **वाऽवसाने** (८-४-५५) अवसान में झलों का विकल्प से चर् करता है। अतः जब द् का त् न होगा तो **अचकाद्** ही रूप रहेगा।

सूत्र ११४ सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च—(३-४-१०९) सिच् प्रत्यय, अभ्यस्त संज्ञक जागृ आदि धातुओं तथा विद् से परे ङित् लकार सम्बन्धी झि के स्थान में जुस् हो। जुस् से केवल उस् रह जाता है। अतः अचकास्+उस् आने पर स् का रुत्व विसर्ग करके अचकासुः रूप बनता है। आगे अचकाः, अचकास्तम् अचकास्त। अचकासम्, अचकास्व अचकास्म।

१५५ जागृ — अ+जागृ+त् आने पर गुण होकर अजागर्त् (देखें सूत्र ३०) तदनन्तर "**हल्ङ्याब्भ्यो**" से त् का लोप हो जाता है। तब अजागर् के र् का रुत्व विसर्ग करके अजागः रूप बनता है। देखें सन्धि का सूत्र **खरवसानयोर् विसर्जनीयः**।) आगे अ+जागृ+ताम्=अजागृताम् (यहाँ ङित् होने से गुण नहीं हुआ), अजागृ+झि आने पर जागृ के अभ्यस्त संज्ञा होने से झेर्जुसः लगेगा। (देखें सूत्र १६१)। जुस् आने पर "**जुसि च**" से धातु को गुण होगा। (देखें सूत्र ११९)। तब अजागर्+उस्=अजागरुः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनता है। अजागृ+सि = अजागर्स् आने पर स् का लोप होता है (**हलङ्याब्भ्यो दीर्घात् से**) तब र् का रुत्व विसर्ग करके अजागः पुनः बन जाता है। आगे अजागृताम्, अजागृत। सामान्य नियमों से बन जाते हैं। अजागरम्, अजागृव, अजागृम।

१५६ दुह् — अ+दुह +त् आने पर पहले सूत्र ३१ लगता है। उससे अदुघ्+त् स्थिति बनती है। तब "**पुगन्तलघूपधस्य च**" से अदोघ्+त् बनता है। यहाँ "संयोगान्तस्य" से त् के लोप होने पर अदोघ् रह जाता है। तब सूत्र ३३ के आधार पर अधोघ्—आता है, उससे चर्त्व करके अधोक् तथा जश्त्व करके अधोग् रूप रहता है। आगे अदुह्+ताम् आने पर सूत्र ३२ से अदुग्धाम्। अदुह्+अन् = अदुहन् रूप बनते हैं।

मध्यम पुरुष में पुनः अधोक्—अधोग्, आगे अदुग्धम् अदुग्ध, अदुह्+अम् = अदोहम्, अदुह्व, अदुह्म।

१५७ द्विष् — अ+द्विष्+त् (त् का लोप होने तथा धातु का गुण होने पर अद्वेष् बनता है। तब **झलांजशोऽन्ते** के आधार पर ष् के स्थान में ड् तथा **वावसाने** से ट् हो जाता है और अद्वेट् रूप बनता है। आगे अद्विष् + ताम् = अद्विष्टाम् बनता है। (त् का ष्टुत्व तथा गुण न होने पर) आगे अद्विष् + अन् = अद्विषन्। मध्यम पुरुष में पुनः अद्वेट्, अद्विष्टम्, अद्विष्ट, अद्विषम्, अद्विष्व, अद्विष्म।

१५८ नु — अ+नु+त् = अनौत् (देखें सूत्र ४०)।

अ+नु+ताम् = अनुताम्, अ + नु + अन् = अनुवन् (उवङ् होकर) अ+नु+स् = अनौस् = अनौः, अ + नु + तम् = अनुतम्, अ+नु + त = अनुत। अनुवम्, अनुव, अनुम (वस् मस् के स् का लोप हो जाता है। (देखें **नित्यं ङितः** सूत्र १०८) इसी आधार पर १६५ अयौत्, १६६ अरौत्, १७४ अस्तौत् आदि रूप बनते हैं।

१५९ पा — अ+पा + त् = अपात् (सीधा सादा अ जुड गया)

अ+पा+ताम् = अपाताम्, अ + पा + झि = अपा + जुस् = अपा + उस् = अपुः (देखें सूत्र ११८), अ+पा+अन् = अपान्। इसके दो रूप बनते हैं। जब झि का जुस् न होगा तो सामान्य रीति से अन् रह कर अपान्, अन्यथा शाकटायन के मत से अपुः। आगे अपाः, अपातम्, अपात, अपाम्, अपाव, अपाम।

इसी तरह १६१ अभात्, १६२ अमात्, १६४ अयात्, १६८ अलात्, १७३ अस्नात् आदि के रूप बनते हैं।

१६७ रुद् — अ + रुद्+त् = अरोद्त् आने पर

सूत्र ११५ रुदश्च पञ्चभ्यः—(७-३-९८) रुद् आदि पाँच धातुओं से अपृक्त सार्वधातुक को ईट् का आगम हो। अतः अरोदीत् रूप बनता है। रुद्, स्वप्, श्वस्, अन् तथा जक्ष पाँच रुदादि धातुएँ हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूत्र ११६ अड्गार्ग्यगालवयोः—(७-३-९९) इनके मत में पाँचों धातुओं को हलादि पित् परे रहते अट् का आगम हो जाय। इससे अरोद्+अ+त्=अरोदत् रूप भी बनता है। यहाँ ध्यान देने की बात है कि चूंकि अदादिगण में शप् का लुक् हो जाता है, पर लोक में अरोदत् और अरोदीत् रूप हैं अतः इस सूत्र से उनका समाधान कर दिया गया। यह निश्चित है कि जब अट् का आगम होता है तो ईट् का नहीं होता।

आगे अरुदिताम्, अरुदन्, अरोदीः, अरोदः, अरुदितम्, अरुदित, अरोदम्, अरुदिव, अरुदिम। यहाँ ईट् और अट् दोनों इट् के आगम के निषेधक हैं।

१६० ब्रूञ् — अ+ब्रू+त् आने पर सूत्र ३४ के आधार पर ई का आगम होता है। अ+ब्रू+ईत्=अब्रो+ईत्=अब्रवीत्। चूंकि यह ई केवल हलादि पित् में ही होती है अतः अपित् प्रत्ययों में न आयेगी। अतः अ+ब्रू+ताम्=अब्रूताम्, अब्रू+अन् =अब्रुवन्। (देखें सूत्र १७) यहाँ धातु उवर्णान्त है अतः ऊ के स्थान पर उवङ् होकर अब्रुवन् बना। आगे अ+ब्रू+ई+स्=अब्रो+ईस्=अब्रवीः। आगे अब्रूतम्, अब्रूत, अब्रवम्, अब्रूव, अब्रूम।

१६३ मृज् — अ+मृज्+त् आने पर सार्वधातुक या आर्धधातुक प्रत्यय आने पर मृज् को वृद्धि होती है। (देखें सूत्र ३७) अमार्ज्+त्=अमार्ज्,=अमार्ष्= अमार्ट्। (पहले ज् को ष्, ष् को ड् तथा ड् को ट् करके) (देखें सूत्र ३८)। आगे अमृष्+ताम्=अमृष्टाम् (ष्टुत्व) अमार्जन्, अमार्ट्, अमृष्टम्, अमृष्ट, अमार्जम्, अमृज्व अमृज्म।

१७० विद् — अ+विद्+त्=अवेद्—अवेत् (अपृक्त त् का संयोगान्त से लोप होकर तथा विद् के द् का चर्त्व होकर) अ+विद्+ताम्= अवित्ताम्, अविदुः देखें सिजभ्यस्त विदिभ्यश्च सूत्र ११४) अ+विद्+स्=अवेद्+स्=अवेद् (स् के लोप होने पर अवेद् ही रह जाता है। पर इसके और भी रूप बनते है।

सूत्र ११७ दश्च—(८-२-७५) धातु के पदान्त दकार को सिप् परे रहते विकल्प से रु हो। अवेरु=अवेः (रु का र् तथा विसर्ग होकर) आगे अविद्+तम्=अवित्तम्, अवित्त, अवेदम्, अविद्व, अविद्म।

१७१ शास् — अ+शास्+त्=अशात् (इसमें पहले सूत्र १७२ से अन्तिम त् गिर जाता है तब स् को द् तथा द् को त् होता है। (देखें सूत्र ११३) अ+शास्+ ताम्=अशिष्टाम् (देखें सूत्र ४२ तथा ४३ और सन्धि ष्टुना ष्टुः अशास्+जुस् (अभ्यस्त होने के कारण)=अशासुः। अ+शास्+स्=अशाः (अन्तिम स् के लोप होने पर देखें १७२) अ+शास्+तम्=अशिष्टम्, अशास्+त=अशिष्ट। अशासम्, अशिष्व, अशिष्म।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१७२ श्वस् — अश्वसत् (देखें ११५, ११६) पक्ष में ई आने पर अश्वसीत्, आगे अश्वसिताम्, अश्वसन्, अश्वसीः, अश्वसितम्, अश्वसित, अश्वसम्, अश्वसिव, अश्वसिम । ठीक इसी तरह १७५ अस्वपत्, अस्वपीत् आदि ।

१७६ हन् — अ+हन्+त्=अहन् (त् के लोप होने पर देखें १७२) अहन्+ताम्=अहताम् (सूत्र ४४ से न् का लोप होने पर) अ+हन्+अन्=लट् की भांति कुत्व करके अघ्नन् । मध्यम पुरुष में अहन्+स्=अहन् ही रह जाता है क्योंकि स् का लोप हो जाता है। आगे अहतम्, अहत, अहनम्, अहन्व, अहन्म (देखें सूत्र १०८) (धातु १५९) । अ+पा+त्=अपात्, अपाताम्, अ+पा+अन् आनें पर

सूत्र ११८ लङः शाकटायनस्यैव—(३-४-१११) शाकटायन के मत में आकारान्त धातु से परे लङ् लकार के झि को जुस् हो जाय । अतः अपुः रूप बनता है। जैसा कि पहले दिखाया जा चुका है। चूंकि यह शाकटायन के मत में होता है अतः दूसरे पक्ष में अपान् ही रहेगा ।

(२) लङ् लकारः (परस्मैपदम्)

(३) जुहोत्यादिगणः

११७ दा, अ+दा+त्=अ+दा+दा+त् (श्लु से द्वित्व)=अददात् (५० से अभ्यास के ह्रस्व होने पर) रूप बनता है। अ+दा+दा+ताम्=अददाताम्=अदत्ताम् (देखें सूत्र ५१) अददुः (देखें सूत्र ११४) अददाः, अदत्तम्, अदत्त, अददाम् अदद्व, अदद्म ।

१७८ धा — अ+धा+धा+त्=अधधात् (सूत्र ५० से)=अदधात् (लट् की भाँति देखें सूत्र ५२) अधत्ताम्, अधत्त । (देखें ५१) आगे अदधाः, अधत्तम्, अधत्त अदधाम्, अदध्व, अदध्म ।

१७९ पॄ — अ+पॄ+पॄ+त् आने पर सूत्र ५४ से अपिपर्त् आता है। इसके अन्तिम हल् त् के लोप होने पर अपिपर् आया तब र् का विसर्ग करके अपिपः रूप बनता है। आगे अ+पॄ+पॄ+ताम्=अपिपुर्ताम् (देखें सूत्र ५५)=अपिपूर्ताम् (देखें सूत्र ५६) अपिपर्+उस्=अपिपरुः=अपिपः, अपिपूर्तम्, अपिपूर्त, अपिपरम्, अपिपूर्व, अपिपूर्म ।

१८० भी — अ+भी+भी+त् (लट् की भांति) आने पर निम्नलिखित रूप बनेंगे — अबिभेत् — अबिभेः — अबिभयम्

अबिभेत्	अबिभेः	अबिभयम्
अबिभिताम्	अबिभितम् / अबिभीतम्	अबिभिव/अबिभीव
अबिभयुः (देखें ११९) (गुण करके)	अबिभित / अबिभीत	अबिभिम/अबिभीम

१८१ भृ — अ + भृ + भृ + त् = अबिभर् (पॄ की तरह) = अबिभः । आगे अबिभृताम्, अबिभरुः, अबिभः, अबिभृतम्, अबिभृत, अबिभरम्, अबिभृव, अबिभृम ।

१८२ हा — अ + हा + हा + त् = अहहात् (ह्रस्वः से देखें सूत्र ५०) = अजहात् (लट् की भाँति ह् से झ् तथा झ् से ज्) आगे अजहीताम् अथवा अजहिताम्, अजहुः (सभी पूर्व सूत्रों से) अजहाः, अजहीतम् अथवा अजहितम् । अजहीत, अजहित, अजहाम्, अजहीव, अथवा अजहिव, अजहीम अथवा अजहिम ।

१८३ हु — अ + हु + हु + त् आने पर हा की भाँति पहले अजुहत् बनता है, तब गुण होकर अजुहोत् रूप बनता है । आगे अजुहुताम्, अजुहु + उस् = अजुहो + उस् = अजुहवुः (देखें सूत्र ११९) ।

सूत्र ११९ जुसि च—(७-३-८३) इगन्त अङ्ग को गुण हो अजादि जुस् परे रहते । अजुहोः, अजुहुतम्, अजुहुत, अजुहवम् अजुहुव, अजुहुम ।

१८३ ह्री — अजिह्रेत्	—	अजिह्रेः	—	अजिह्रयम्
अजिह्रीताम्	—	अजिह्रीतम्	—	अजिह्रीव
अजिह्रयुः	—	अजिह्रीत	—	अजिह्रीम

इनमें कोई नया सूत्र नहीं लगता ।

२—लङ् लकारः (परस्मैपदम्)

(४) दिवादिगणः

१८५ अस् — आ + अस् + य + त् = आस्यत् (चूंकि धातु के आदि में स्वर है अतः आट् लाया गया ।) आगे आ + अस् + य + ताम् = आस्यताम्, आ + अस् + य + अन् = आस्यन्, (अतो गुणे) आस्यः, आस्यतम्, आस्यत, आस्यम्, आस्वाव, आस्याम ।

२२० शुच् — अ + शुच् + य + त = अशुच्यत् (हलादि होने से अट् आया) अ + शुच् + य + ताम् = अशुच्यताम्, अ + शुच् + य + अन् = अशुच्यन् आगे अशुच्यः, अशुच्यतम् अशुच्यत, अशुच्यम्, अशुच्याव, अशुच्याम ।

१९९ दिव् — अ + दिव् + य + त् = अदीव्यत् (देखें लट्) अ + दिव् + य + ताम् = अदीव्यताम् अदीव्यन् । अदीव्यः, अदीव्यतम्, अदीव्यत, अदीव्यम्, अदीव्याव, अदीव्याम ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसी आधार पर १८६ अक्रुप्यत्, १८७ अक्रुध्यत्, १८८ अक्लिद्यत् । १८९ अक्षाम्यत् १९० अक्षिप्यत्, १९१ अक्षुध्यत्, १९२ अक्षुभ्यत्, १९३ अखिद्यत्, १९४ अनश्यत्, १९५ अताम्यत्, १९६ अतुष्यत्, १९७ अतृष्यत्, १९८ अत्रस्यत्, १९९ अदीव्यत, २०० अदुष्यत्, २०१ अदृप्यत्, २०२ अद्यत्, २०३ अद्रुह्यत्, २०४ अनृत्यत्, २०५ अपुष्यत्, २०६ अपुष्प्यत्, २०७ अभृश्यत्, २०८ अभ्राम्यत्, अभ्रमत् २०९अभ्रश्यत्, (देखें ६५) २१० अमाद्यत्, २११ अमुह्यत्, २१२ अमृष्यत्, २१३ अरज्यत्, २१४अरुप्यत्, २१५ अलुप्यत्, २१६ अलुभ्यत्, २१७ अविध्यत्, २१८ अशप्यत्, २१९ अशाम्यत्, २२० अशुच्यत्, २२१ अशुध्यत्, २२२ अशुष्यत्, २२३ अश्यत्, २२४ अश्राम्यत्, २२५ अश्लिष्यत्, २२६ अस्निह्यत्, २२७ अस्विद्यत्, २२८ असिध्यत्, २२९ असीव्यत्, २३० अस्यत्, २३१ अहृष्यत् के रूप बनते हैं ।

२—लङ् लकारः (परस्मैपदम्)

(५) स्वादिगणः

२३२ आप् — अ + आप् + नु + त् = आप्नोत् (गुण करके) आ + आप् + नु + ताम् = आप्नुताम्, आ + आप् + नु + अन् = आप्नुवन् (देखें १७) आगे आप्नोः, आप्नुतम्, आप्नुत । आ + आप् + नु + अम् = आप्नो+अम् = आप्नवम्, आप्नुव, आप्नुम ।

ध्यान रहे तिप्, सिप् और मिप् में ही गुण होता है । साथ ही जहाँ अपित् प्रत्यय रहते संयोग होता है तो यण् के स्थान में उवङ् हो जाता है, यण् नहीं । धातु से संयोग न होने पर ही यण् होता है । उदाहरण के लिए—

२३४ चि — **(इसमें संयोग नहीं है अतः यण् होगा ।)**

अचिनोत्	—	अचिनोः	—	अचिनवम्
अचिनुताम्	—	अचिनुतम्	—	अचिन्व, अचिनुव
अचिन्वन्	—	अचिनुत	—	अचिन्म, अचिनुम ।

इसी आधार पर २३६ धूञ् — अ + धू + नु + त् = अधूनोत् । स्पष्टता के लिए पूरे रूप दिये जाते हैं ।

अधूनोत्	—	अधूनोः	—	अधूनवम्
अधूनुताम्	—	अधूनुतम्	—	अधूनुव, अधून्व
अधून्वम्	—	अधूनुत	—	अधूनुम, अधून्म

इसी प्रकार २३३ अक्षिणोत्, २३५ अदुनोत्, २३७ अवृणोत्, २३९ अमिनोत्, २४० असुनोत्, २३८ शक् की बहुत आवश्यकता पड़ती है इसलिए पूरे रूप दिये जाते है।

अशक्नोत्	—	अशक्नोः	—	अशक्नवम्
अशक्नुताम्	—	अशक्नुतम्	—	अशक्नुव
अशक्नुवन्	—	अशक्नुत	—	अशक्नुम

२—लङ् लकारः (परस्मैपदम्)

(६) तुदादिगणः

(इसमें विकरण श है जिससे अ शेष रहता है।)

२४१ इष् — आ + इष् + त् = आ + इच्छ् + अ + त् = ऐच्छत् (देखें १०९) आगे ऐच्छताम्, ऐच्छन्, ऐच्छः, ऐच्छतम्, ऐच्छत, ऐच्छम्, ऐच्छाव, ऐच्छाम (वृद्धिः, देखें सूत्र ४)

२४२ उज्झ — आ+उज्झ् + अ + त् = औज्झत्, औज्झताम्, औज्झन्, औज्झः, औज्झतम्, औज्झत, औज्झम्, औज्झाव, औज्झाम। हलादि धातुओं में ध्यान रहे केवल अट् आता है।

२५३ तुद् — अ + तुद् + अ + त् = अतुदत् (श् के आने पर गुण नहीं होता।) आगे अतुदताम्, अतुदन्, अतुदः, अतुदतम्, अतुदत, अतुदम्, अतुदाव, अतुदाम।

२७४ व्रश्च — अ+व्रश्च् + अ + त् = अवृश्चत् (देखें सूत्र ३८) आगे अवृश्चताम्, अवृश्चन्, अवृश्चः, अवृश्चतम्, अवृश्चत। अवृश्चम्, अवृश्चाव, अवृश्चाम।

इसी आधार पर और भी — २४३ अकृन्तत्, २४४ अकृषत्, २४५ अकिरत्, २४६ अक्षियत् (इयङ होकर) २४७ अक्षिपत्, २४८ अगुफत्, २४९ अगुम्फत्, २५० अगिरत्, २५१ अक्षुरत्, २५२ अनुदत्, २५४ अतृपत्, २५५ अत्रुटत्, २५६ अदिशत्, २५७ अनिलत्, २५८ अपृच्छत्, (देखें सूत्र ११ पाघ्राध्मा), २६० अमज्जत्, २६१ अमिलत्, २६२ अमिलत्, २६३ अमुञ्चत्, २६४ अमृडत् २६५ अमृशत्, २६६ अरुजत्, २६७ अलिखत्, २६८ अलिम्पत्, २६९ अलुम्पत्, २७० अलुभत्, २७१ अविन्दत्, २७२ अविधत्, २७३ अविशत्, २७५ अविचत्, २७६ असिञ्चत्, २७७ असीदत्, २७८ असृजत्, २७९ अस्पृशत्, २८० अस्फुटत्, २८१ अस्फुरत्।

———

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२—लङ् लकारः (परस्मैपदम्)

(७) रुधादिगणः

२८२ छिदिर् — अ + छि + न + द् + त् = अच्छिनद्त् = अच्छिनद् = अच्छिनत्। (पहले त् का संयोगान्त लोप करके फिर द् का त् करके) यहाँ ध्यान देने की बात है कि "न" को श्नम् करके विकरण में इसलिए लिखा गया है कि यह मित् हो जाय। मित् सदा अन्त्य अच् के बाद आता है। इसीलिए वह छि के बाद आया।

आगे अच्छिन्ताम्, अच्छिन्दन्। अच्छिन्ताम् = अच्छि + न् + द् + ताम् इसमें श्नसोरल्लोपः से न के अ का लोप होता है। तब द् के हल् होने से वह **"झरो झरि सवर्णे"** से चला जाता है।

अच्छिनः — अच्छिनत् (अच्छिनः में द् का रुत्व विसर्ग देखें सूत्र ११७) अच्छिन्तम्, अच्छिन्त, अच्छिनदम्, अच्छिन्द्व, अच्छिन्द्म।

२८३ पिष्लृ — अ + पि + न + ष् + त् आने पर त् का लोप हो जाना हैं। अतः अ + पि + न + ष् = अपिनष् स्थिति बनती है। इस स्थिति में ष् के स्थान पर जश् ड् तथा ड् का चर्त्व ट् होता है। अतः अपिनट् रूप बनता है। आगे अ + पि + न + ष् + ताम् = अपिंष्टाम् (त् का ष्टुत्व तथा न के अ का लोप करके), अपिंषन्, अपिनट्, अपिंष्टम्, अपिंष्ट, अपिनषम्, अपिंष्व, अपिंष्म।

२८४ भिदिर् — अ + भि + न + द् + त् = अभिनद् (त् का लोप होने पर) = अभिनत् (चर्त्व करके), आगे अभिन्ताम्, अभिन्दन्, अभिनः, अभिन्तम्, अभिन्त, अभिनदम्, अभिन्द्व, अभिन्द्म।

२८५ भुज् — अ + भु + न + ज् + त् = अभुनज् (त् के गिरने पर) = अभुनक् (देखें चोः कुः), अभुंक्ताम्, अ + भु + न + ज् + अन् = अभुञ्जन्। पुनः अभुनक् (स् के लोप होने पर), अभुंक्तम्, अभुंक्त। अभुनजम्, अभुञ्ज्व, अभुञ्ज्म।

२८६ युज् — अ × यु + न + ज् + त् = अयुनक् (भुज् की भांति) अयुंक्ताम्, अयुञ्जन्, अयुनक्, अयुंक्तम्, अयुंक्त। अयुनजम्, अयुंज्व, अयुंज्म।

२८७ रुध् — अ + रु + न + ध् + त् = अरुणध् (त् के लोप होने पर) = अरुणत् (चर्त्व करके) = अरुणद् (चर्त्व न होने पर जश्) आगे अरुन्धाम्, अ + रु + न + ध् + ताम् आने पर न के अ का लोप श्नसोरल्लोपः से करके **"झषस्तथोर्धोऽधः"** सूत्र ३२ से त् के स्थान पर ध् होने पर अरुन्ध् + धाम आया तो **झरोझरि सवर्णे** से पहले ध का लोप करके

अरुन्धाम् रहता है। आगे अरुन्ध्+अन्=अरुन्धन्, अरुणद्—अरुणः (द् का स् होने पर देखें ११७) चूंकि यह विकल्प से लगता है अतः दो रूप बनते हैं। अरुन्धम्, अरुन्ध। अरुणः में कुछ विशेष समझने की बात है। अरुनध्+स् आया। पहले १७१ से स् का लोप हुआ। तब **झलां जशोऽन्ते** से ध् को द् और द् आने पर दश्च से द् का रुत्व विसर्ग होता है। आगे अरुणधम्, अरुन्ध्व, अरुन्ध्म।

२८८ हिंसि — (इदित् होने से नुम् पाकर हिंस बनती हैं) पर **"श्नान्नलोपः"** से पुनः न् के लोप होने पर तथा गण के विकरण न आने पर अ+हि+न+स्+त्= अहिन स् (त् लोप होने पर) अहिनस्=अहिनद् (सूत्र ११३ से स् को द् करके)= अहिनत् (चर्त्व करके) रूप बनता है। आगे अहिंस्ताम्, अहिंसन्, अहिनः, अहिनद्, अहिंस्तम्—अहिंस्त, अहिनसम्, अहिंस्व, अहिंस्म।

२—लङ् लकारः (परस्मैपदम्)

(८) तनादिगणः

२८९ डुकृञ् — अ+कृ+उ+त्=अकरुत्= अकरोत् (गुण होकर), अ+कृ+उ+ताम्= अकुरुताम् (देखें सूत्र ७६) अ+कृ+उ+अन्=अकुर्वन् (अन्ति की इ और त् गिरने पर) आगे अ+कृ+उ+स्=अकरुः=अकरोः। अकुरुतम् अकुरुत। अ+कृ+उ+अम्=अकरु+अम्=अकरो+अम्=अकरवम्। अकुर्व, अकुर्म (देखें सूत्र ७८)

इसी प्रकार २९० तनु — अ+तन्+उ+त्=अतनोत् (गुण करके) अतनुताम्, अतन्वन्, अतनोः, अतनुतम्, अतनुत, अ+तनु+अम्=अतनो+अम्=अतनवम्, अतन्व, अतन्म। चूंकि उ का लोप विकल्प से होता है अतः वस्, मस् में दो दो रूप बनते हैं। अतन्व, अतनुव, तथा अतन्म और अतनुम। (देखें सूत्र १९)

२—लङ् लकारः (परस्मैपदम्)

(९) क्र्यादिगणः

२९१ अश् — आ+अश्+ना+त्=आश्नात्, आ+अश्+ना+ताम्= आश्नाताम्=आश्नीताम् (देखें ईहल्यघोः सूत्र ५९) आ+अश्+ना+अन्=आश्नान्= आश्नन् (देखें सूत्र ५१) आगे आश्नाः, आश्नीतम्, आश्नीत, आश्नाम्, आश्नीव, आश्नीम।

२९३ ग्रह् — अगृह्णत् (सम्प्रसारण करके देखें ग्रहिज्या आदि) अगृह्णीताम्, अगृह्णन्, अगृह्णाः, अगृह्णीतम्, अगृह्णीत। अगृह्णाम्, अगृह्णीव, अगृह्णीम।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२९७ पूञ् — अ+पु+ना+त्=अपुनात्, अपुनीताम्, अपुनन्, अपुनाः, अपुनीतम्, अपुनीत, अपुनाम्, अपुनीव, अपुनीम ।

इसी आधार पर २९२ अक्रीणात्, २९४ अजानात्, (देखें ज्ञाजनोर्जा) २९५ अदृणात्, २९६ अधुनात्, २९८ अप्रीणात्, २९९ अबध्नात्, ३०० अमथ्नात् ३०१ अमुष्णात्, ३०२ अमृद्नात्, ३०३ अमृणात्, ३०४ अलुनात्, ३०५ अवृणात्, ३०६ अशृणात् आदि रूप बनते है ।

२–लङ् लकारः (परस्मैपदम्)

(१०) चुरादि गणः

३०७ अंक् — आ+अंक्+इ+त्=आंकि+अत्=आंकि बनने पर णिजन्त होने से पुनः धातु संज्ञा की जाती है और उससे भ्वादि की भांति शप्, तिप् आता है तथा गुण होता है । आंके+अत्=आंकयत् आगे आंकयताम्, आंकयन्, आंकयः, आंकयतम्, आंकयत, आंकयम्, आंकयाव, आंकयाम (देखें सूत्र ४, अतोदीर्घोयञि)

३१४ ईड् — आ+ईड्+इ+अ+त्=ऐडि+अत्=ऐडे+अत्=ऐडयत् । आगे ऐडयताम्, ऐडयन् (यहाँ आ+इ की वृद्धि आटश्च से हुई), ऐडयः ऐडयतम्, ऐडयत, ऐडयम्, ऐडयाव, ऐडयाम ।

३१६ ऊर्ज्—आ+ऊर्ज्+इ+अ+त्=और्जयत्, और्जयताम्, और्जयन्, (इन सबमें आदि में स्वर होने के कारण आट् का आगम होता है तथा "आटश्च" से वृद्धि होती है ।) पर हलादि धातुओं में अट् आता है जो और भी सरलता से जुड़ जाता है । इनमें सीधे से लट् के रूप से इ हटाकर तथा ताम् आदि करके अ जोड़ना है ।(देखें सूत्र १०७)

३१८ कथ — अ+कथ+इ+शप्+त्=अकथि+अत्=अकथे+अत्= अकथयत्, आगे अकथयताम्, अकथयन्, अकथयः, अकथयतम्, अकथयत्, अकथयम्, अथथयाव, अकथयाम ।

इसी आधार पर सभी चुरादिगणी धातुओं के रूप बनेंगे । यथा—३०८ आघयत्, ३०९ आर्चयत्, ३१० आर्जयत्, ३११ आर्दयत्, ३१२ आर्हयत्, ३१३ आपयत्, ३१५ ऐरयत्, ३१७ अकणयत्, ३१९ अकल्पयत्, ३२० अकुत्सयत्, ३२१ अकीर्तयत्, ३२२ अक्षालयत्, ३२३ अखण्डयत्, ३२४ अगणयत्, ३२५ अगवेषयत्, ३२६ अगर्जयत्, ३२७ अगर्हयत्, ३२८ अघटयत्, ३२९ अघोषयत्, ३३० अचारयत्, ३३१ अचालयत्, ३३२ अचेतयत्, ३३३ अचित्रयत्, ३३४ अचूर्णयत्, ३३५ अच्छादयत्, (तुक् का आगम) ३३६ अजालयत्, ३३७ अज्ञपयत्, ३३८ अज्ञापयत्, ३३९ अटंकयत्, ३४० अताडयत्,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३४१ अतापयत्, ३४२ अतंसयत्, ३४३ अतोलयत्, ३४४ अतर्पयत्, ३४५ अतारयत्, ३४६ अतर्कयत्, ३४७ अतर्जयत्, ३४८ अत्वरयत्, ३४९ अदालयत्, ३५० अदण्डयत्, ३५१ अदेवयत्, ३५२ अदोलयत्, ३५३ अदारयत्, ३५४ अधारयत्, ३५५ अधर्षयत्, ३५६ अध्वंसयत्, ३५७ अनाटयत्, ३५८ अनिवासयत्, ३५९ अपक्षयत्, ३६० अपाटयत्, ३६१ अपातयत्, ३६२ अपाशयत्, ३६३ अपालयत् ३६४ अपूजयत्, ३६५ अपावयत्, ३६६ अपूरयत्, ३६७ अप्रीणयत्, ३६८ अपारयत्, ३६९ अप्लावयत्, ३७० अबाधयत्, ३७१ अबलयत्, ३७२ अबुक्कयत्, ३७३ अभक्षयत्, ३७४ अभावयत्, ३७५ अभर्त्सयत्, ३७६ अभ्रामयत्, ३७७ अमण्डयत, ३७८ अमन्त्रयत्, ३७९ अमहयत्, ३८० अमानयत्, ३८१ अमार्गयत्, ३८२ अमोचयत्, ३८३ अमूलयत्, ३८४ अमृगयत्, ३८५ अमार्जयत्, ३८६ अमार्दयत्, ३८७ अयातयत्, ३८८ अयन्त्रयत्, ३८९ अयोजयत्, ३९० अरसयत्, ३९१ अरेचयत्, ३९२ अरोषयत्, ३९३ अरूपयत्, ३९४ अलक्षयत्, ३९५ अलघयत्, ३९६ अलाडयत्, ३९७ अलालयत्, ३९८ अलासयत्, ३९९ अलुण्ठयत्, ४०० अलोकयत् ४०१ अलोचयत्, ४०२ अवाचयत्, ४०३ अवरयत्, ४०४ अवञ्चयत्, ४०५ अवर्णयत्, ४०६ अवर्धयत्, ४०७ अवातयत्, ४०८ अवासयत्, ४०९ अवर्जयत्, ४१० अव्ययत्, ४११ अशोधयत्, ४१२ अशब्दयत्, ४१३ अश्वासयत्, ४१४ असान्त्वयत्, ४१५ असादयत्, ४१६ असभाजयत्, ४१७ असारयत्, ४१८ असुखयत्, ४१९ असूचयत्, ४२० असूदयत्, ४२१ असर्जयत्, ४२२ अस्तनयत्, ४२३ अस्तेनयत् ४२५ अस्पृहयत्, ४२६ अस्वरयत्।

२–लङ् लकारः (आत्मनेपदम्)

(१) भ्वादिगणः

इसमें लगने वाले प्रत्यय निम्नलिखित हैं —

त	थास्	इड्
आताम्	आथाम्	वहि
झ	ध्वम्	महिङ्

४२६ अंक—आ+अंक्+अ+त=आंकत।

ध्यान रहे इसका त हलन्त नहीं है जैसा कि परस्मैपदी धातुओं में होता है। आगे आ+अंक्+अ+आताम् आने पर आताम् के आ के स्थान में इय् होता है। (देखें आतो ङितः, सूत्र ८६) तब आंक्+इय्+ताम् स्थिति बनती है। इसमें य् से त् वलादि परे होने पर य् का लोप हो जाता है। अतः रूप आंकेताम् बनता है, बहुवचन में आ+अंक्+अ+झ आने पर आंक+अन्त बनता है। तब अतो गुणे से (सूत्र ३) आंकन्त रूप हो जाता है। आगे आ+अंक्+अ+थास्=आंकथास्=आंकथाः। आ+अंक्+अ+आथाम्=

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आंकेथाम् (आ का इय् हो कर तथा य् का लोप करके आ+अंक्+अ+ध्वम्=आंकध्वम्। आंक+इ=आंके। आंकवहि, आंकमहि आने परे सूत्र ४ के आधार पर आंकावहि. आंकामहि रूप बनते हैं। यहाँ यह समझना भी आवश्यक है कि आत्मनेपद में टित लकारों में टि को ए होता है, यहाँ लङ् ङित् है अतः प्रत्यय ऐसे ही जुड़ जाते हैं।

४२७ अय्—आ+आय्+अ+त=आयत। आयेताम्, आयन्त, आयथाः, आयेथाम्, आयध्वम्, आये, आयावहि, आयामहि।

४२८ ईक्ष्—आ+ईक्ष्+अ+त=ऐक्षत (आटश्च से वृद्धि हो कर) आगे ऐक्षेताम्, (आताम् के आ के स्थान पर इय् तथा य् के लोप होने पर) आ+ईक्ष्+अ+अन्त=ऐक्षन्त, ऐक्षथाः, ऐक्षेथाम्, ऐक्षध्वम्। ऐक्षे, ऐक्षावहि, ऐक्षामहि।

४३१ ऊह्—आ+ऊह+अ+त=औहत) अय् की भांति वृद्धि करके) औहेताम्, औहन्त, औहथाः, औहेथाम्, औहध्वम्, औहे, औहावहि, औहामहि।

४५८ लभ्—(हलादि धातुओं में अट् का आगम होता है।) अतः अ+लभ्+अ+त=अलभत। अलभेताम् में (अ+लभ्+आताम् आने पर आताम् के आ के स्थान पर इय् करके तथा य् का लोपो व्योर्वलि से लोप करके रूप बनता है।) अ+लभ्+अ+अन्त=अलभन्त। अलभथाः, अलभेथाम्, अलभध्वम् अलभे, अलभावहि, अलभामहि।

इसी आधार पर ४२९ ऐषत, ४३० ऐहत, ४३२ अप्यायत, ४३३ ऐजत ४३४ अकत्थत, ४३५ अकामयत, (देखें कमु लट् में) ४३६ अकलत, ४३७ अकल्पत, ४३८ अकाशत, ४३९ अकूर्दत, ४४० अकल्पत, ४४१ अक्रन्दत, ४४२ अक्रपत, ४४३ अक्लिन्दत, ४४४ अक्लेशत, ४४५ अक्षमत, ४४६ अक्षोभत, ४४७ अखनत, ४४८ अगर्हत, ४४९ अगाहत, ४५० अगूहत, ४५१ अग्रंथत, ४५२ अग्रसत, ४५३ अघटत, ४५४ अचेष्टत, ४५५ अजृम्भत, ४५६ अत्वरत, ४५७ अडयत, ४५९ अतितिक्षत, ४६० अत्रपत, ४६१ अत्रायत, ४६२ अदक्षत, ४६३ अददत, ४६४ अदीक्षत, ४६५ अद्रेकत, ४६६ अद्योतत, ४६७ अधरत, ४६८ अध्वंसत, ४६९ अपवत, ४७० अप्रथत, ४७१ अप्लवत, ४७२ अबाधत, ४७३ अबोधत, ४७४ अभाषत, ४७५ अभासत, ४७६ अभ्राजत, ४७७ अभिक्षत, ४७८ अभ्रंशत, ४७९ अमण्डत, ४८० अमन्दत, ४८१ अमुञ्चत, ४८२ अमण्डत, ४८३ अमोदत, ५८४ अयतत, ४८५ अयाचत, ४८६ अरजत, ४८७ अरभत, ४८८ अरमत, ४८९ अराजत, ४९० अरोचत, ४९१ अरेभत, ४९२ अलंघत, ४९३ अलज्जत, ४९४ अलम्बत, ४९५ अलोकत, ४९६ अलोचत, ४९७ अवंकत, ४९८ अवन्दत, ४९९ अवर्तत, ५०० अवर्धत, ५०१ अवेपत, ५०२ अवेष्टत, ५०३ अव्ययत, ५०४ अशंकत,

५०५ अशीयत, ५०६ अशपत, ५०७ अशिक्षत, ५०८ अशोभत, ५०९ अश्लाघत, ५१० अश्लोकत, ५११ अस्तम्भत, ५१२ अस्मयत, ५१३ असहत, ५१४ असूदत. ५१५ असेवत, ५१६ अस्पन्दत, ५१७ अस्पर्द्धत, ५१८ अस्फोटत, ५१९ अस्यन्दत, ५२० अस्वजत, ५२१ अस्वादत, ५२२ अस्वेदत, ५२३ अस्रसत, ५२४ अह्लादत।

२—लङ् लकारः (आत्मनेपदम्)

(२) अदादिगणः

५२५ आस् — आ+आस्+त=आस्त।

आ+आस्+आताम्=आसाताम्। इसमें ध्यान देने की बात है कि आताम् के आ के स्थान में इय् तभी होता है जब वह अकारान्त से परे हो। भ्वादिगणी धातुओं में शप् का अ रहता है तो शर्त पूरी हो जाती है, किन्तु अदादिगण में शप् का लुक् हो जाता है। अतः अ नहीं मिलता। जैसे—सेव्+अ+आताम्=सेवेताम्, किन्तु आस्+आताम्=आसाताम्। बहुवचन में आ+आस्+झ=आ+आस्+अत=आसत (यहाँ 'आत्मनेपदेष्वनतः' से झ का अन्त न होकर अत होता है। (देखें सूत्र ९७), आ+आस्+थास्=आस्थाः। आगे आसाथाम्, आस्+ध्वम्=आध्वम् (देखें सूत्र ६८) आ+आस्+इ=आसि, आस+वहि=आस्वहि, आ+आस्+महि=आस्महि।

५२६ इङ् — (पढ़ना) यह धातु अधिपूर्वक ही आती है। अतः अधि+आ+इ+त=अधि+ऐ+त (वृद्धि करके)=अध्यैत (पढ़ा), अधि+आ+इ+आताम् अध्या+इय्+आताम् (इ को इयङ् करके)=अध्यै+य्+आताम्=अध्यैयाताम्। (वृद्धि होकर) अधि+आ+इ+झ=अधि+आ+इ+अत (झ को अत करके)= अधि+आ+इय्+अत (इयङ् करके)=अधि+ऐ+य्+अत=अध्यैयत। आगे अध्यैथाः, अध्यैयाथाम् (इयङ् करके) अध्यैध्वम्, अध्यैयि, अध्यैवहि, अध्यैमहि।

इसी प्रकार ५२७ ईड् तथा ५२८ ईर् के रूप बनेंगे। इनमें अधि नहीं लगता। अतः आ+ईड्+त, तथा आ+ईर्+त आते हैं, तथा ऐट्ट और ऐर्त रूप बनते हैं। ध्यान रहे यहाँ त अकारान्त है अतः ऐट्ट और ऐर्त में हलन्त से परे होने पर भी उसका लोप नहीं होता। आगे आ+ईड्+आताम्=ऐडाताम्, ऐड्+अत=ऐडत। इसी प्रकार आ+ईर्+आताम्=ऐराताम्, आ+ईर्+अत=ऐरत। आगे ऐड्+थास्=ऐट्ठास्= ऐट्ठाः, ऐडाथाम्, ऐड्+ध्वम्=ऐड्ढ्वम्। ऐडि, ऐड्वहि, ऐड्महि, इसी प्रकार ऐर्थाः, ऐराथाम्, ऐर्ध्वम्, ऐरि, ऐर्वहि, ऐर्महि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(५२८ अ) चक्ष् — अ+चक्ष्+त=अचष्ट (क् का लोप होने पर) अचक्ष्+आताम्=अचक्षाताम्, अचक्षत (देखें आत्मनेपदेष्वनतः)।

५२९ ब्रूञ् — अ+ब्रू+त=अब्रूत

अ+ब्रू+आताम् (उ का उवङ् करके) अब्रुवाताम् (देखें सूत्र १७)

अ+ब्रू+झ=अब्रू+अत=अब्रुवत (उपर्युक्त की भाँति)

अ+ब्रू+थास्=अब्रूथाः, अब्रुवाथाम्, अब्रूध्वम्।

अ+ब्रू+इ=(उवङ् करके) अब्रुवि, अब्रूवहि, अब्रूमहि (ध्यान रहे टि का एत्व केवल टित् लकारों में होता है अतः यहाँ नहीं हुआ।

५३० आ+शास् — आ+अ+शास्+त=आशास्त, आशासाताम्, आशासत, आ+अ+शास्+थास्=आशास्थाः, आशासाथाम्, आशाध्वम् (देखें धि च, सूत्र ९८), आ+अ+शास्+इ=आशासि, आशास्वहि, आशास्महि।

५३१ शीङ् — अ+शी+त=अशेत। (देखें ९९)

अ+शी+आताम्= अशे+आताम्=अशयाताम्। अ+शी+झ=अशे+अत= अशेरत देखें शीङो रुट् सूत्र १००) आगे अशेथाः, अशयायाम्, अशेध्वम्। अशी+इ= अशे+इ=अशयि, अशेवहि, अशेमहि।

२—लङ् लकारः (आत्मनेपदम्)

(३) जुहोत्यादिगणः

५३२ दा— अ+दा+दा+त=अददात=अदद्त (ह्रस्वः तथा श्नाभ्यस्तयोरातः से, सूत्र ५०, ५१)=अदत्त (खरि च से चर्त्व) अ+दा+दा+आताम्=अदद्+ आताम्=अददाताम्। अ+दा+दा+झ=अ+द+द्+अत=अददत (देखें सूत्र ५०-५२) आगे अदत्थाः, अददाथाम्, अदद्ध्वम्, अददि, अदद्वहि, अदद्महि।

५३३ धा — अ+धा+धा+त=अ+ध+धा+त (देखें ५० ह्रस्वः) अ+ध+ध्+त = अधत्त (देखें ५१, ५२) अ+ध+धा+आताम्=अदधाताम्, अदधत (उपर्युक्त की भाँति) अधत्थाः अदधाथाम्, अधद्ध्वम्, अदधि, अदध्वहि, अदध्महि

५३४ मा — अ+मा+मा+त=अमीमीत आने पर अमिमीत, (देखें ह्रस्वः ५०, तथा ईल्यघोः)=अमिमीत।

अ+मा+मा+आताम्=अमिमाताम् (चूँकि ई हल्यघोः केवल हलादि कित् ङित् परे लगता है।)=अमिमाताम्। अमिमत (झ् का अत्) आगे अमिमीथाः, अमिमाथाम्, अमिमीध्वम अमिमि, अमिमीवहि, अमिमीमहि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५३५ हा — अ + हा + हा+त = अजहात = अजिहीत (देखें लट् के रूप) अजिहाताम्, अजिहत, अजिहीथाः, अजिहाथाम् अजिहीध्वम्। अजिहि, अजिहीवहि, अजिहीमहि। (इसमें कोई नया सूत्र नहीं लगता।

२—लङ् लकार: (आत्मनेपदम्)

(४) दिवादिगण:

५३६ क्लिश् — अ + क्लिश् + य + त = अक्लिश्यत।

अ + क्लिश् + आताम् = अक्लिश्येताम् (चूंकि यहाँ य अकारान्त है अत: उससे परे आताम् के आने पर उसके आ के स्थान में इय् होगा। इय् से लट् की भाँति य् गिर जायेगा। अ + क्लिश् + य + अन्त = अक्लिश्यन्त (देखें अतो गुणे) आगे अक्लिश्यथाः, अक्लिश्येथाम्, अक्लिश्यध्वम्, अक्लिश्ये, अक्लिश्यावहि, अक्लिश्यामहि।

(देखें अतो दीर्घो यञि)

५३८ जनी — अ + जा + य + त = अजायत (देखें ज्ञाजनोर्जा सूत्र १०२) अजायेताम्, अजायन्त, अजायथाः, आजायेथाम्, अजायध्वम्, अजाये, अजायावहि, अजायामहि।

इसी आधार पर ५३७ अखिद्यत, ५३९ अडीयत, ५४० अतप्यत, ५४१ अदीप्यत ५४२ अद्यत, ५४३ अधीयत, ५४४ अपद्यत, ५४५ अपीयत, ५४६ अप्रीयत, ५४७ अबुध्यत ५४८ अमन्यत, ५४९ अमायत, ५५० अयुज्यत, ५५१ अयुध्यत, ५५२ अरुध्यत ५५३ अलीयत, ५५४ अवाश्यत, ५५५ अविद्यत, ५५६ अव्रीयत, ५५७ असूयत, ५५८ असृज्यत रूप बनते हैं।

२—लङ् लकार: (आत्मनेपदम्)

(५) स्वादिगण:

५५९ अश् — आ + अश् + नु + त = आश्नुत, आ + अश् + नु + आताम् = आश्नुवाताम्, आश्नुवत (देखें सूत्र ९७) (साथ ही देखें सूत्र १७ जिससे नु के उ का उवङ् हुआ)। आगे आश्नुथाः, आश्नुवाथाम्, आश्नुध्वम्, आश्नुवि, आश्नुवहि, आश्नुमहि।

५६० चि — अ + चि + नु + त = अचिनुत। अ + चि + नु + आताम् = अचिन्वाताम्, अचिन्वत, अचिनुथाः, अचिन्वाथाम्, अ + चि + नु + ध्वम् = अचिनुध्वम्, अचिन्वि, अचिनुवहि, अचिनुमहि। इसी प्रकार ५६१ अधुनुत, ५६२ असुनुत।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(५२८ अ) चक्ष् — अ+चक्ष्+त=अचष्ट (क् का लोप होने पर) अचक्ष्+आताम्=अचक्षाताम्, अचक्षत (देखें आत्मनेपदेष्वनतः)।

५२९ ब्रूञ् — अ+ब्रू+त=अब्रूत

अ+ब्रू+आताम् (उ का उवङ् करके) अब्रुवाताम् (देखें सूत्र १७)

अ+ब्रू+झ=अब्रू+अत=अब्रुवत (उपर्युक्त की भाँति)

अ+ब्रू+थास्=अब्रूथाः, अब्रुवाथाम्, अब्रूध्वम्।

अ+ब्रू+इ= (उवङ् करके) अब्रुवि, अब्रूवहि, अब्रूमहि (ध्यान रहे टि का एत्व केवल टित् लकारों में होता है अतः यहाँ नहीं हुआ।

५३० आ+शास् — आ+अ+शास्+त=आशास्त, आशासाताम्, आशासत, आ+अ+शास्+थास्=आशास्थाः, आशासाथाम्, आशाध्वम् (देखें धि च, सूत्र ९८), आ+अ+शास्+इ=आशासि, आशास्वहि, आशास्महि।

५३१ शीङ् — अ+शी+त=अशेत। (देखें ९९)

अ+शी+आताम्= अशे+आताम्=अशयाताम्। अ+शी+झ=अशे+अत= अशेरत देखें शीङो रुट् सूत्र १००) आगे अशेथाः, अशयायाम्, अशेध्वम्। अशी+इ= अशे+इ=अशयि, अशेवहि, अशेमहि।

२—लङ् लकारः (आत्मनेपदम्)

(३) जुहोत्यादिगणः

५३२ दा— अ+दा+दा+त=अददात=अदद्त (ह्रस्वः तथा श्नाभ्यस्तयोरातः से, सूत्र ५०, ५१)=अदत्त (खरि च से चर्त्व) अ+दा+दा+आताम्=अदद्+ आताम्=अददाताम्। अ+दा+दा+झ=अ+द+द्+अत=अददत (देखें सूत्र ५०-५२) आगे अदत्थाः, अददाथाम्, अदद्ध्वम्, अददि, अदद्वहि, अदद्महि।

५३३ धा — अ+धा+धा+त=अ+ध+धा+त (देखें ५० ह्रस्वः) अ+ध+ध्+त = अधत्त (देखें ५१, ५२) अ+ध+धा+आताम्=अदधाताम्, अदधत (उपर्युक्त की भाँति) अधत्थाः अदधाथाम्, अधद्ध्वम्, अदधि, अदध्वहि, अदध्महि

५३४ मा — अ+मा+मा+त=अमीमीत आने पर अमिमीत, (देखें ह्रस्वः ५०, तथा ईल्यघोः)=अमिमीत।

अ+मा+मा+आताम्=अमिमाताम् (चूँकि ई हल्यघोः केवल हलादि कित् ङित् परे लगता है।)=अमिमाताम्। अमिमत (झ् का अत्) आगे अमिमीथाः, अमिमाथाम्, अमिमीध्वम अमिमि, अमिमीवहि, अमिमीमहि।

५३५ हा — अ + हा + हा + त = अजहात = अजिहीत (देखें लट् के रूप) अजिहाताम्, अजिहत, अजिहीथाः, अजिहाथाम् अजिहीध्वम्। अजिहि, अजिहीवहि, अजिहीमहि। (इसमें कोई नया सूत्र नहीं लगता।

२—लङ् लकारः (आत्मनेपदम्)

(४) दिवादिगणः

५३६ क्लिश् — अ + क्लिश् + य + त = अक्लिश्यत।

अ + क्लिश् + आताम् = अक्लिश्येताम् (चूंकि यहाँ य अकारान्त है अतः उससे परे आताम् के आने पर उसके आ के स्थान में इय् होगा। इय् से लट् की भाँति य् गिर जायेगा। अ + क्लिश् + य + अन्त = अक्लिश्यन्त (देखें अतो गुणे) आगे अक्लिश्यथाः, अक्लिश्येथाम्, अक्लिश्यध्वम्, अक्लिश्ये, अक्लिश्यावहि, अक्लिश्यामहि।
(देखें अतो दीर्घो यञि)

५३८ जनी — अ + जा + य + त = अजायत (देखें ज्ञाजनोर्जा सूत्र १०२) अजायेताम्, अजायन्त, अजायथाः, आजायेथाम्, अजायध्वम्, अजाये, अजायावहि, अजायामहि।

इसी आधार पर ५३७ अखिद्यत, ५३९ अडीयत, ५४० अतप्यत, ५४१ अदीप्यत ५४२ अद्यत, ५४३ अधीयत, ५४४ अपद्यत, ५४५ अपीयत, ५४६ अप्रीयत, ५४७ अबुध्यत ५४८ अमन्यत, ५४९ अमायत, ५५० अयुज्यत, ५५१ अयुध्यत, ५५२ अरुध्यत ५५३ अलीयत, ५५४ अवाश्यत, ५५५ अविद्यत, ५५६ अव्रीयत, ५५७ असूयत, ५५८ असृज्यत रूप बनते हैं।

२—लङ् लकारः (आत्मनेपदम्)

(५) स्वादिगणः

५५९ अश् — आ + अश् + नु + त = आश्नुत, आ + अश् + नु + आताम् = आश्नुवाताम्, आश्नुवत (देखें सूत्र ९७) (साथ ही देखें सूत्र १७ जिससे नु के उ का उवङ् हुआ)। आगे आश्नुथाः, आश्नुवाथाम्, आश्नुध्वम्, आश्नुवि, आश्नुवहि, आश्नुमहि।

५६० चि — अ + चि + नु + त = अचिनुत। अ + चि + नु + आताम् = अचिन्वाताम्, अचिन्वत, अचिनुथाः, अचिन्वाथाम्, अ + चि + नु + ध्वम् = अचिनुध्वम्, अचिन्वि, अचिनुवहि, अचिनुमहि। इसी प्रकार ५६१ अधुनुत, ५६२ असुनुत।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२—लङ् लकारः (आत्मनेपदम्)

(६) तुदादिगणः

५६३ जुष् — अ+जुष्+अ+त = अजुषत, अ+जुष्+अ+आताम् = अजुषेताम् (आताम् के आ के स्थान में इय् होकर तथा य् के लोप होने पर) ध्यान रहे यहाँ भी श के अ आ जाने से "**आतोङितः**" की प्रवृत्ति हो जाती हैं। आगे अजुषन्त, अजुषथाः, अजुषेथाम्, अजुषध्वम्, अजुषे, अजुषावहि, अजुषामहि।

५६४ तुद् — अ+तुद्+अ+त = अतुदत, अतुदेताम्, अतुदन्त, अतुदथाः, अतुदेथाम्, अतुदध्वम्, अतुदे, अतुदावहि, अतुदामहि।

इसी प्रकार ५६६ अनुदत, ५६७ अमिलत, ५६८ अमुञ्चत, ५६९ अम्रियत, ५७० अलजत ५७०अ अलज्जत, ५७१ अविजत, ५७२ अविन्दत, ५७३ असिञ्चत, ५७४ अशीयत रूप बनते हैं।

५६५ आ+दृङ् = आ+आदृङ्+अ+त आने पर सूत्र १०४ की प्रवृत्ति हो जाती है। अतः आद्रियत, (**अचिश्नु धातुभ्रुवां** से इ को इय् करके) आगे आद्रियेताम्, आद्रियन्त, आद्रियथाः, आद्रियेथाम्, आद्रियध्वम्, आद्रिये, आद्रियावहि, आद्रियामहि। इसी प्रकार अम्रियत, अम्रियेताम्, अम्रियन्त आदि रूप बनते है।

(२) लङ् लकारः (आत्मनेपदम्)

(७) रुधादिगणः

५७५ छिदिर् — अ+छि+न+द्+त आने पर सूत्र २४ से न के अ का लोप हो जाता है तो अ+छि+न्+द्+त स्थिति बनती है। इसमें "छे च" सूत्र १३ से च् आ जाता है जो अ तथा छ के बीच बैठता है, क्योंकि वह छ को परे चाहता है। अतः द् का चर्त्व त् करके अच्छिन्त्त रूप बनता है। आगे अच्छिन्दाताम्, अच्छिन्दत, अच्छिन्त्थाः, अच्छिन्दाथाम्, अच्छिन्द्ध्वम्, अच्छिन्दि, अच्छिन्द्वहि, अच्छिन्द्महि।

५७६ भिद् — इसके रूप छिद् की भाँति बनते हैं। अ+भि+न+द्+आताम् = अ+भि+न्+द्+त = अभिन्त्त (द् का चर्त्व करके) आगे अ+भि+न+द+अ+भि + न् + द् + आताम् = अभिन्दाताम्। अभिन्दत, अभिन्त्थाः, अभिन्दाथाम् अभिन्द्ध्वम्, अभिन्दि, अभिन्द्वहि, अभिन्द्महि।

५७७ भुज् — अ+भुज्+न+ज्+त = अभु+न्+ज्+त = अभुंक्त। (चोः कुः से ज् के स्थान में क् करके, देखें सूत्र १२६) आगे अ+भु+न+ज्+आताम् =

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभुञ्जाताम् अभुनज् + अत = अभुञ्जत। (देखें सूत्र ९७), आगे अभुंक्था:, अभुञ्जाथाम्, अभुंड्ग्ध्वम्, अभुञ्जि, अभुञ्ज्वहि, अभुञ्ज्महि।

इसी प्रकार ५७८ युज् व ५७९ रुध् के रूप होंगे जो सुविधा के लिए पूरे दिये जाते हैं।

अयुंक्त —	अयुंक्था: —	अयुञ्जि	अरुन्ध —	अरुन्धा: —	अरुन्धि
अयुञ्जाताम् —	अयुञ्जाथाम् —	अयुञ्ज्वहि	अरुन्धाताम् —	अरुन्धाथाम् —	अरुन्ध्वहि
अयुञ्जत —	अयुंग्ध्वम् —	अयुज्महि	अरुन्धत —	अरुन्द्ध्वम् —	अरुन्ध्महि

२—लङ् लकार: (आत्मनेपदम्)

(८) तनादिगण:

५८० कृ — अ + कृ + उ + त = अकुरुत (देखें लट्) अ + कुरु + आताम् = अकुर्वाताम्, अ + कुरु + अत = अकुर्वत (देखें ९७) अकुरुथा:, अकुर्वाथाम्, अकुरुध्वम्, अकुर्वि, अकुर्वहि, अकुर्महि।

५८१ तनु — अ + तन् + उ + त = अतनुत (चूंकि अ के स्थान पर उकार केवल कृ में होता है।) अ + तन् + उ + आताम् = अतन्वाताम् अतन्वत, अतनुथा:, अतन्वाथाम्, अतनुध्वम्।

उत्तम पु० में अतन्वि, अतन्वहि, अतनुवहि, अतन्महि, अतनुमहि।

५८२ मन् —

अमनुत —	अमनुथा: —	अमन्वि
अमन्वाताम् —	अमन्वाथाम् —	अमन्वहि, अमनुवहि
अमन्वत —	अमनुध्वम् —	अमन्महि, अमनुमहि।

(२) लङ् लकार (आत्मनेपदम्)

(९) क्र्यादिगण:

५८३ क्री —अ + क्री + ना + त = अक्रीणात आने पर = अक्रीणीत (देखें सूत्र ६०), अ + क्री + ना + आताम् = अक्रीणाताम् आगे अक्रीणत (देखें सूत्र ९७)। अक्रीणीथा:, अक्रीणाथाम्, अक्रीणीध्वम्, अक्रीणि, अक्रीणीवहि, अक्रीणीमहि।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५८४ ग्रह — अ+ग्रह्+णीत=अगृह्णीत (ग्रहिज्या से सम्प्रसारण) अगृह्णाताम्, अगृह्णत, अगृह्णीथाः, अगृह्णाथाम्, अगृह्णीध्वम्, अगृह्णि, अगृह्णीवहि, अगृह्णीमहि ।

(२) लङ् लकारः (आत्मनेपदम्)

(१०) चुरादि गणः

५९१ अर्थ — आ+अर्थ्+इ+त=आर्थि+त=आर्थि+शप्+त (आर्थि की धातु संज्ञा होने पर)=आर्थि+अ+त=आर्थे+अ+त (गुण होने पर=आर्थयत । प्र+आर्थयत=प्रार्थयत । उसने प्रार्थना की=स प्रार्थयत । आगे अकरान्त य मिलने के कारण आताम् के आ के स्थान पर इय् होने तथा य् के लोप होने पर प्रार्थयेनाम् प्रार्थयन्त, प्रार्थयथाः, प्रार्थयेथाम्, प्रार्थयध्वम् । प्रार्थये—प्रार्थयावहि, प्रार्थयामहि ।

५९२ चुर् — अचोरयत — अचोरयथाः — अचोरये ।
अचोरयेताम् — अचोरयेथाम् — अचोरयावहि ।
अचोरयन्त — अचोरयध्वम् — अचोरयामहि ।

इसी आधार पर ५९३ अदीपयत, ५९४ अमादयत ५९५ अशातयत ।

—·—·—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिच्छेद ५

३. लृट् लकारः (परस्मैपदम्)

(१) भ्वादिगणः

यह लकार आर्धधातुक कहा जाता है । अतः इसमें सार्वधातुक विकरण नहीं लगते । केवल **१९ सूत्रों** की सहायता से इस लकार के सभी गणों के रूप बन जाते हैं । इसमें तिप् तस्, झि पूर्ववत् लगेंगे ।

अक् + ति आने पर

सूत्र १२० स्यतासी लृलुटोः (३-१-३३) धातु से लृट् में स्य और लुट् में तास् हो जाय । इसके अनुसार अक् + स्य + ति स्थिति बनती है ।

सूत्र १२१ आर्धधातुकस्येड्वलादेः (७-२-३५) वलादि आर्धधातुक परे होने पर इट् का आगम हो जाय । इट् ''स्य'' से पहले आता है क्योंकि यह टित् है । अतः अक् + इ + स्य + ति = अकिष्यति, (इ के आने से स् का ष् से जाता है । देखें सूत्र १७१)

अकिष्यतः, अकिष्यन्ति, अकिष्यसि, अकिष्यथः ।
अकिष्यथ, अकिष्यामि, अकिष्यावः, अकिष्यामः ।

२ अट् — अक् की भाँति —

अटिष्यति	—	अटिष्यसि	—	अटिष्यामि
अटिष्यतः	—	अटिष्यथः	—	अटिष्यावः
अटिष्यन्ति	—	अटिष्यथ	—	अटिष्यावः

इसी आधार पर ३ अञ्चिष्यति, ४ अतिष्यति ५ अर्घिष्यति, ६ अर्चिष्यति, ७ अर्जिष्यति, ८ अर्दिष्यति, ९ अर्हिष्यति, १० अलिष्यति, ११ अविष्यति, १२ ईर्ष्यिष्यति १४ एजिष्यति, १५ कठिष्यति, १६ कांक्षिष्यति, १७ कीलिष्यति, १८ कुञ्चिष्यति १९ कूजिष्यति, २१ क्रन्दिष्यति, २२ क्रमिष्यति, २३ क्वणिष्यति, २४ क्रोडिष्यति २६ क्षरिष्यति, २७ क्षेष्यति, २८ क्षास्यति (देखें सूत्र १३१), २९ खञ्जिष्यति ३० खनिष्यति, ३१ खादिष्यति, ३२ खेलिष्यति, ३३ गदिष्यति, ३४ गमिष्यति, ३५ गुञ्जिष्यति, ३६ गोपायिष्यति, गोपिष्यति, गोप्स्यति, (आर्धधातुक में आय आदि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विकल्प से होते हैं। अतः जब आय न होगा तो गोपिष्यति रूप बनेगा। जब इट् भी न आयेगा तो गोप्स्यति ही रहेगा। (देखें सूत्र १३४), ३७ गास्यति, ३८ गर्जिष्यति, ३९ गर्विष्यति, ४० ग्लास्यति, घ्रास्यति, ४३ चरिष्यति, ४४ चर्विष्यति, ४५ चलिष्यति ४६ चेतिष्यति, ४७ चुम्बिष्यति, ४८ चूषिष्यति, ४९ जपिष्यति, ५१ जीविष्यति ५२ जल्पिष्यति, ५३ ज्वरिष्यति, ५४ ज्वलिष्यति, ५५ तप्स्यति, ५६ तूषिष्यति, ५८ तर्जिष्यति, ६० दलिष्यति, ६३ दास्यति, ६६ धूपायिष्यति, धूपिष्यति, ६७ धरिष्यति, ६८ धर्षिष्यति, ६९ ध्मास्यति, ७० ध्यास्यति, ७१ नटिष्यति, ७२ नर्दिष्यति, ७४ नन्दिष्यति, ७६ नर्दिष्यति, ७८ पठिष्यति, ७९ पतिष्यति, ८० पास्यति, ८१ पुन्थिष्यति, ८२ पूषिष्यति, ८३ फलिष्यति, ८६ बृंहिष्यति, ८७ भक्ष्यति (देखें धातु ५९ त्यज् की साधनिका) ८८ भणिष्यति, ९० भूषिष्यति, ९१ भरिष्यति ९२ भ्रमिष्यति, ९३ मण्डिष्यति ९४ मथिष्यति, ९५ मन्थिष्यति, ९६ महिष्यति, ९७ मीलिष्यति, ९८ मूर्च्छिष्यति, १०० म्नास्यति, १०३ रक्षिष्यति, १०४ रटिष्यति, १०५ रणिष्यति, १०६ रुण्ठिष्यति १०९ लजिष्यति, ११० लपिष्यति, १११ लषिष्यति, ११२ लसिष्यति, ११३ लुञ्चिष्यति ११४ लोठिष्यति, ११५ लुण्ठिष्यति, ११६ वजिष्यति, ११७ वदिष्यति, ११८ वनिष्यति १२० वमिष्यति, १२३ वांछिष्यति, १२४ वास्यति, १२५ बेलिष्यति, १२६ वेल्लिष्यति, १२७ व्रजिष्यति, १२८ शंसिष्यति, १३० शमिष्यति, १३२ शूलिष्यति, १३३ श्रयिष्यति, १३४ श्रोष्यति, १३५ सजिष्यति, १३६ सेधिष्यति, १३७ स्थास्यति, १३८ स्रविष्यति, १३९ सर्पिष्यति, (देखें सूत्र १२३), १४१ स्खलिष्यति, १४२ स्तनिष्यति, १४३ स्मरिष्यति १४४ स्वनिष्यति, १४५ हसिष्यति, १४६ हरिष्यति, १४७ हर्षिष्यति, १४८ ह्लसिष्यति १४९ ह्वास्यति। इनके अतिरिक्त कुछ धातुओं में विशेष परिवर्तन होते हैं—जैसे

४१ घस् — घस् + स्य + ति आनें पर

सूत्र १२२ सः स्यादार्धधातुके (७-४-४९) सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय परे रहते धातु के स् के स्थान में त् हो जाय। घस् में यही स्थिति है। तब घस् + स्यति = घत्स्यति घत्स्यतः, घत्स्यन्ति घत्स्यसि, घत्स्यथः, घत्स्यथ, घत्स्यामि, घत्स्यावः, घत्स्यामः। इसी भाँति १२१ वस् से वत्स्यति, वत्स्यतः, वत्स्यन्ति आदि रूप बनते है। ध्यान रहे कि स्य प्रत्यय मूल धातु में जुड़ता है, धातु के आदेश में नहीं। यथा पा से पास्यति, दा से दास्यति। साथ ही आकारान्त धातुओं में इट् न आने से स्य का ष्य भी नहीं होता।

१३ ऋ — ऋ + स्य + ति आने पर

सूत्र १२३ ऋद्धनोः स्ये (७-२-७०) ह्रस्व ऋकारान्त तथा हन् धातु से परे स्य

---

* आयादय आर्द्धधातुके वा (३-१-३१)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को इट् हो जाय। चूंकि हन् धातु अनिट् है अतः इसके लिए विशेष सूत्र बनाना पड़ा, जिससे इससे भी इट् हो जाय। यह अदादिगण में मिलेगी। यहाँ ऋ+इ+स्यति = अरिष्यति, अरिष्यतः, अरिष्यन्ति रूप बनते हैं, इसी प्रकार ५७ तरिष्यति १४६ हरिष्यति आदि।

टिप्पणी इस लकार में कोई विकरण नही आता। विकरण केवल सार्वधातुक लकारों में ही होते है। पर इसमें—सार्वधातुकार्धधातुकयोः से इगन्त अङ्ग का गुण अवश्य होता है।

यथा २७ क्षेष्यति, ५० जेष्यति, ६४ द्रविष्यति, ७५ नेष्यति, १३८ स्रविष्यति, १४३ स्मरिष्यति, आगे उपधा के लघु को गुण करके ८५ वोधिष्यति, ९९ मर्षिष्यति, १४७ हर्षिष्यति, १३१ शोचिष्यति, १३६ सेधिष्यति, १४० सर्पिष्यति रूप बनते हैं।

५९ त्यज् — त्यज्+स्य+ति आने पर चोः कुः से ज् के स्थान में क् हो जाता है। त्यक्+स्यति (देखें सूत्र १२६) ऐसी स्थिति में कवर्ग से परे स्य के स् के स्थान में ष् होता है। (देखें सूत्र १७१) अतः त्यक्+ष्यति = त्यक्ष्यति। आगे त्यक्ष्यतः, त्यक्ष्यन्ति रूप बनते है। इसी आधार पर ८७ भक्ष्यति ७७ पक्ष्यति बनते हैं।

सूत्र १२४ षढोः कः सि (८-२-४१) सकार परे रहने पर षकार और ढकार को ककार हो जाय। इस आधार पर जहाँ भी श्, ष्, ज् या क् में से कोई वर्ण धातु के अन्त में होगा वह क्ष् में बदल जायगा। जैसे —भुज्—भोक्ष्यति, १०१ यज्—यक्ष्यति।

६२ दंश् — दंक्ष्यति (ध्यान रहे नुम् का लोप केवल शप् परे रहते होता है।)

६२ दह् —दह्+स्यति आने पर पहले दह् के स्थान पर दघ् होता है। (देखें सूत्र ३१) तब दघ्+स्यति आने पर द् के स्थान में ध् होता है। (देखें सूत्र ३३) अतः धघ्+स्यति आने पर "**झलां जशोऽन्ते** तथा "**खरि च**" से धक्+स्यति तब १७१ के आधार पर धक्+ष्यति = धक्ष्यति रूप बनता है। आगे धक्ष्यतः, धक्ष्यन्ति। इसी आधार पर २५ क्रुश् से क्रोक्ष्यति, १२२ वह् से वक्ष्यति, १०७ रुष् तथा १०८ रुह् मे रोक्ष्यति। आगे दृश्+स्यति आने पर—

सूत्र १२५ सृजिदृशोर्झल्यमकिति (६-१-५८) कित् को छोड़कर झलादि प्रत्यय परे रहते सृज् और दृश् को अम् हो। अम् होने से यह अन्त्य अच् के बाद आता है। अतः दृ+अ+श्+स्यति तथा सृ+अ+ज्+स्यति स्थितियाँ बनीं, तब ज् से क् के लिए देखे सूत्र १२६।

सूत्र १२६ चोः कुः (८-२-३०) चवर्ग के स्थान में कवर्ग हो, झल् परे रहते या पदान्त में। इस आधार पर द्रक्+स्यति, स्रक्+स्यति, द्रक्+ष्यति तथा स्रक्+ष्यति

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(पूर्व सूत्रों से) = द्रक्ष्यति तथा स्रक्ष्यति। एक रूपता के कारण सृज् को यहां दिखा दिया गया है अन्यथा यह तुदादिगण की धातु है।

११९ वप् + स्य + ति = वप्स्यति, वप्स्यतः, वप्स्यन्ति। १२६ शप् + स्य + ति = शप्स्यति, शप्स्यतः, शप्स्यन्ति। इन दोनों धातुओं में चूंकि इट् नहीं आता अतः अन्य कार्य नहीं होता। इट् कब आता है, कब नहीं इसके लिए पुस्तक के अन्त में एक सूची दे दी गयी है जो इस निराकरण में सहायक होगी।

आगे ७३ नम् — नम् + स्यति, तथा १०२ यम् + स्यति आने पर म् को अनुस्वार में बदल देते हैं तो नंस्यति तथा यंस्यति रूप बनते हैं।

९८ मुर्छा + स्यति = मूर्च्छिष्यति, मूर्च्छिष्यतः मूर्च्छिष्यन्ति। (देखें ९५ सूत्र)
१४९ ह्वे + स्यति = ह्वास्यति, ह्वास्यतः ह्वास्यन्ति।

३—लृट् लकारः (परस्मैपदम्)

(२) अदादिगणः

१५० अद् — अद् + स्यति = अत्स्यति (खरि च से चर्त्व करके) अत्स्यतः अत्स्यन्ति, अत्स्यसि, अत्स्यथः अत्स्यथ, अत्स्यामि, अत्स्यावः, अत्स्यामः।

१५१ अस् — अस् + स्यति आने पर—

सूत्र १२७ अस्तेर्भूः—(२-४-५२) अस् के स्थान पर भू आदेश हो यदि उससे परे आर्धधातुक प्रत्यय हो। अतः इसके रूप भविष्यति, भविष्यतः, भविष्यन्ति आदि बनेंगे।

१५२ इ — इ + स्यति = एष्यति (गुण तथा षत्व करके) आगे एष्यतः, एष्यन्ति, एष्यसि, एष्यथः, एष्यथ, एष्यामि, एष्यावः, एष्यामः।

१५३ चक्षिङ् — ख्या + स्यति = ख्यास्यति, ख्यास्यतः, ख्यास्यन्ति आदि।

१५४ चकासृ — चकास् + इ + स्यति = चकासिष्यति, चकासिष्यतः चकासिष्यन्ति आदि।

१५५ — जागृ जागृ + इ + स्यति = जागरिष्यति, जागरिष्यतः जागरिष्यन्ति आदि।

१५६ दुह् — धोक्ष्यति, धोक्ष्यतः, धोक्ष्यन्ति आदि। (देखें सूत्र ३१, ३२)।

१५७ द्विष् — द्विष् + स्यति (देखें षढोः कः सि) = द्वेक् + ष्यति = द्वेक्ष्यति, द्वेक्ष्यतः, द्वेक्ष्यन्ति।

१६० ब्रूञ् — ब्रू + स्यति = वच् + स्यति (ब्रू का वच् करके देखें सूत्र १२८)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूत्र १२८ ब्रुवो वचि—(२-४-५३) ब्रू को आर्धधातुक प्रत्यय परे रहते वच् आदेश हो जाय। तदनन्तर वच् के च् को क् होता हैं। (देखें चोः कुः सूत्र १२६) अतः वक्ष्यति रूप बनता है। वच् एक अलग धातु भी है। इसका भी भविष्य में वक्ष्यति ही रूप बनता है चूंकि यह भी चकारान्त है।

१७० विद् — विद्+इ+स्यति=वेदिष्यति, वेदिष्यतः वेदिष्यन्ति आदि (सेट् और अनिट् सूची में देखें)।

१७१ शास्+इ+स्यति=शासिष्यति, शासिष्यतः, शासिष्यन्ति आदि। १७२ श्वस्+इ+स्यति=श्वसिष्यति, श्वसिष्यतः, श्वसिष्यन्ति आदि। इसी प्रकार १७५ स्वप्स्यति, स्वप्स्यतः, स्वप्स्यन्ति। १७६ हन्+इ+स्यति=हनिष्यति, हनिष्यतः, हनिष्यन्ति (यह धातु अनिट् थी पर इसमें "**ऋद्धनोः स्ये**" से इट् का विधान है। देखें सूत्र १२३)

१६५ यु+इ+स्यति=यो+इ+स्यति=यविष्यति, यविष्यतः आदि।

१६६ रु+इ+स्यति=रो+इ+स्यति=रविष्यति, रविष्यतः आदि। इनके अतिरिक्त आकारान्त धातुओं में स्यति ऐसे ही जुड़ जाता है। इनमें कोई परिवर्तन नहीं होता। यथा—१५९ पास्यति, १६२ मास्यति, १६१ भास्यति, ९६४ यास्यति, १६८ लास्यति।

३—लृट् लकारः (परस्मैपदम्)

(३) जुहोत्यादिगणः

जुहोत्यादिगण में शप् के स्थान पर श्लु होता है। शप् या श्लु केवल चार लकारों में होता है जो सार्वधातुक लकार कहे जाते हैं। इनमें लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् आते हैं। इसका फल यह हुआ कि लृट् में द्वित्व आदि भी नहीं होता। अतः इसके रूप बनाना और भी सरल है। जैसे—१७७ दा+स्यति=दास्यति, दास्यतः, दास्यन्ति आदि।

१७८ धा+स्यनि=धास्यति, धास्यतः, धास्यन्ति आदि।

१७९ पॄ+इ+स्यति=परिष्यति, परिष्यतः परिष्यन्ति।

१८० भी+स्यति=भेष्यन्ति, भेष्यतः, भेष्यन्ति।

१८१ भृ+इ+स्यति=भरिष्यति, भरिष्यतः, भरिष्यन्ति।

१८२ हा+स्यति=हास्यति, हास्यतः, हास्यन्ति।

१८३ हु+स्यति=होष्यति, होष्यतः होष्यन्ति।

१८४ ह्री+स्यति=ह्रेष्यति, ह्रेष्यत, ह्रेष्यन्ति।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३) लृट् लकारः (परस्मैपदम्)

(४) दिवादिगणः

१८५ अस् + इ + स्यति = असिष्यति, असिष्यतः, असिष्यन्ति ।

१८६ कुप् + इ + स्यति = कोपिष्यति, कोपिष्यतः, कोपिष्यन्ति ।

इसी आधार पर क्रोत्स्यति, १८८ क्लेदिष्यति–क्लेत्स्यति (इट् की विकल्पता से) १९० क्षेप्स्यति ।

इससे स्पष्ट है कि जो धातु सेट् है उन्हीं में इट् आता है दूसरों में नहीं । कोई कोई ऐसी भी हैं जो सेट् या अनिट् विकल्प से होती हैं । ऐसी धातुओं के दो रूप बन जाते हैं एक इ सहित दूसरा इ रहित जैसे यहाँ क्लेदिष्यति और क्लेत्स्यति बने हैं ।

और भी इसी प्रकार १८९ क्षमिष्यति, १९२ क्षोभिष्यति । १९४ नशिष्यति, १९५ तमिष्यति, १९६ तपिष्यति, १९७ तर्षिष्यति १९८ त्रसिष्यति, १९९ देविष्यति, २०१ दर्पिष्यति, २०४ नर्तिष्यति–नर्त्स्यति, २०६ पुष्पिष्यति, २०७ भृशिष्यति, २०८ भ्रमिष्यति, २०९ भ्रंशिष्यति, २१० मदिष्यति, २११ मोहिष्यति, २१२ मर्षिष्यति २१४ रोपिष्यति, २१६ लोभिष्यति, २१९ शमिष्यति, २२० शोचिष्यति, २२४ श्रमिष्यति २२६ स्नेहिष्यति, २२७ स्वेदिष्यति, २२९ सेविष्यति, २३१ हर्षिष्यति ।

सूत्र १२९ मस्जिनशोर्झलि (७-१-६०) झलादि प्रत्यय परे रहते मस्ज और नश् धातु को नुम् का आगम हो । पर जब इट् हो जायगा तो नुम् न होगा क्योंकि फिर वह झलादि न रहेगा । अतः नशिष्यति ही रूप बनता है ।

१९४ नश् + स्यति = आने पर

सूत्र १३० रधादिभ्यश्च — (७-२-४५) रध्, नश्, तृप्, दृप्, द्रुह्, मुह्, ष्णुह ष्णिह्, धातुओं से परे वलादि सार्धधातुक को विकल्प से इट् का आगम हो । इनके अनुसार जब इट् होगा तो नश् + इ + स्यति = नशिष्यति रूप होता है और जब इट् न होगा तो नश् + स्यति आने पर पहले श् को ष्, तदनन्तर ष् को क् तथा स्य को ष्य आदि होकर नक्ष्यति बनता है । इसमें १२९ से नुम् आने पर नंक्ष्यति, नंक्ष्यतः नंक्ष्यन्ति आदि बनते हैं । इस गण की क्रुध्, क्षिप्, क्षुध्, तुष्, दुष्, पुष्, शुध्, शप्, व्यध्, लुप्, श्लिष्, रञ्ज और दो धातुएं अनिट् हैं । अतः इनके रूप भिन्न होते हैं । यथा—१८७ क्रुध् + स्यति = (गुण करके) क्रोध् + स्यति । तथा "खरि च" से ध् का चर्त्व त् करके क्रोत्स्यति रूप बनता है । आगे क्रोत्स्यतः, क्रोत्स्यन्ति, क्रोत्स्यसि, क्रोत्स्यथः, क्रोत्स्यथ, क्रोत्स्यामि, क्रोत्स्यावः, क्रोत्स्यामः । इसी प्रकार १९१ क्षुध् (क्षोत्स्यति) १९० क्षेप्स्यति, १९६ तोक्ष्यति (ष् से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क् तथा स्य से ष्य करके) २०० दुष् (दोक्ष्यति), २०५ पुष् (पोक्ष्यति), २१३ रञ्ज (रंक्ष्यति), २१७ व्यध् (व्यत्स्यति), २१८ शप्स्यति, २२१ शुध् (शोत्स्यति), २२२ शुष् (शोक्ष्यति), २२५ श्लिष् (श्लेक्ष्यति), २२८ षिध् (सेत्स्यति), रूप बनते है ।

२०२ दो + स्यति आने पर एक नया सूत्र लगता है ।

सूत्र १३१ आदेच् उपदेशेऽशिति (६-४-४५) उपदेश में एजन्त धातु को आत्व हो जाय किन्तु शित् प्रत्यय परे होने पर न हो । दास्यति । इसी प्रकार २२३ शो (शास्यति) तथा षो (सास्यति) के रूप बनते हैं ।

सूत्र १३२ वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्—(८-२-३३) द्रुह्, मुह्, ष्णुह् तथा ष्णिह् के हकार के स्थान में विकल्प से घकार हो झल् परे रहते या पदान्त में । पदान्त का उदाहरण सुबन्त में मिलता है जहाँ द्रुह् के रूप संज्ञा की तरह चलते हैं । ८४ यहाँ 'स्य' झल् परे है, अतः जब इससे इट् न होगा तो ध्रुघ् + स्यति स्थिति बनेगी । चर्त्व करने पर ध्रुक् + स्यति = ध्रोक्ष्यति रूप बनेगा । जब इससे इट् होगा तो द्रुह् + इ + स्यति = द्रोहिष्यति रूप बनेगा ।

सूत्र १३३ सेऽसिचिकृतचृतछृदतृदनृत —(७-२-५७) कृत्, चृत्, छृद्, तृद् और नृत धातुओं से परे सिच् भिन्न सकारादि आर्धधातुक को विकल्प से इट् आता है । इसके अनुसार नृत् तथा नश् के रूप दिखाये जा चुके हैं ।

३—लृट् लकारः (परस्मैपदम्)

(५) स्वादिगणः

२३२ आप् + स्यति = आप्स्यति आप्स्यतः, आप्स्यन्ति । ३३३ क्षि + स्यति = क्षेष्यति, २३४ चि + स्यति = चेष्यति, २३५ दु + स्यति = दोष्यति । २३६ धू + स्यति = आने पर,

सूत्र १३४ स्वरति–सूति–सूयति–धूञ्–ूदितो वा—(७-२-४४) अर्थात् स्वरति, सूति, सूयति, धूञ् और ऊदित् (जिनसे ऊ इत् हुआ हो) धातुओं से विकल्प से इट् आवे । अतः धू + इ + स्यति = धो + इ + स्यति (गुण) एच् सन्धि = धविष्यतः, धविष्यन्ति आदि, किन्तु जब इसको इट् न होगा तो धो + स्यति = धोष्यति, धोष्यतः, धोष्यन्ति रूप बनते हैं । २३७ वृञ् + इ + स्यति = वरिष्यति, वरिष्यतः, वरिष्यन्ति आदि ।

२३८ शक् + स्यति = शक् + ष्यति = शक्ष्यति, शक्ष्यतः, शक्ष्यन्ति आदि ।
(क् के कारण स्य के ष्य होने पर)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२३९ षिञ्‌ = सेष्यति, सेष्यतः, सेष्यन्ति आदि ।

२४० षुञ्‌ = सु + स्यति = सोष्यति, सोष्यतः सोष्यन्ति ।

३—लृट् लकारः (परस्मैपदम्)

(६) तुदादिगणः

२४१ इष् + इ + स्यति = एषिष्यति, एषिष्यतः, एषिष्यन्ति ।

२४२ उज्झ, + इ + स्यति = उज्झिष्यति, उज्झिष्यतः, उज्झिष्यन्ति ।

२४३ कृत् + इ + स्यति = कर्तिष्यति, कर्तिष्यतः कर्तिष्यन्ति ।

इससे इट् विकल्प से आता है, अतः जब इट् न होगा तो कर्त्स्यति कर्त्स्यतः कर्त्स्यन्ति रूप बनेगे । २६० मस्ज + स्यति आने पर एक वार्तिक की प्रवृत्ति होती है ।

१३५ वा मस्जेरन्त्यात् पूर्वो नुम् वक्तव्यः—(१-१।४७) अर्थात् मस्ज धातु के अन्त्य जकार से पहले नुम् और आना चाहिये ।

अतः म + न् + ज् + स्यति = मंक्ष्यति रूप बनना है। आगे मंक्ष्यतः, मंक्ष्यन्ति आदि ।

इस गण की अन्य धातुओं में केवल इट् आने अथवा न आने का अन्तर है । उनके रूप अत्यन्त सामान्य रीति मे बन जाते हैं । यहां उन्हें दो खण्डों में दिखाया जा रहा है—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सेट् (जिनमें इट् होता है ।)	अनिट् (जिनमें इट् नहीं होता ।)
२४८ गुफ् + इ + स्यति = गोफिष्यति २४५ कॄ + इ + स्यति = करिष्यति करीष्यति २५० गॄ + इ + स्यति = गरिष्यति = गरीष्यति २५१ छुर् + इ + स्यति = छुरिष्यति २४९ गुम्फ + इ + स्यति = गुम्फिष्यति २५५ त्रुट् + इ + स्यति = त्रुटिष्यति २५७ निल् + इ + स्यति = नेलिष्यति २६१ मिल् + इ + स्यति = मेलिष्यति २६२ ,, ,, ,, = ,, २६४ मृड् + इ + स्यति = मर्डिष्यति २६७ लिख् + इ + स्यति = लेखिष्यति २७० लुभ् + इ + स्यति = लोभिष्यति २७२ विध् + इ + स्यति = वेधिष्यति २७४ व्रश्च् + इ + स्यति = व्रश्चिष्यति = अथवा व्रक्ष्यति २७५ व्यच् + इ + स्यति = व्यचिष्यति २८० स्फुट् + इ + स्यति = स्फोटिष्यति २८१ स्फुर् + इ + स्यति = स्फुरिष्यति टिप्पणी—त्रुट्, छुर्, स्फुर् धातुएं गाङ् कुटादिभ्यः से ङित्वद् हो जाती हैं । अतः इनमें "पुगन्तलघूपधस्य च" से गुण नहीं होता ।	२४४ कृष् + स्यति = क्रक् + ष्यति = क्रक्ष्यति अथवा कर्क्ष्यति, इसमें उपधा को अम् का आगम होता है । देखें सूत्र १६८, **अनुदात्तस्यचर्दुपधस्यान्यतरस्याम्** अर्थात् कित् भिन्न झलादि प्रत्यय परे होने पर ऋ उपधा वाली अनिट् धातु को अम् का आगम हो । पर यह अम् विकल्प से होता है, अतः इसके दो रूप बनते हैं । जब अम् होगा तो कृ + अ + ष् + स्यति स्थिति बनेगी और यण् होकर क्रक्ष्यति बनेगा । जब न आयेगा तो ऋ को गुण होगा कर्क्ष्यति रूप होगा । आगे— २४६ क्षेप्स्यति, २४७ क्षेप्स्यति, २५२ नोत्स्यति, २५३ तोत्स्यति, २५४ तर्प्स्यति, तर्पिष्यति (इट् की विकल्पता) २५६ देक्ष्यति, २५८ प्रक्ष्यति (प्रच्छ के छ को सूत्र ३८ से ष् हो जाता है, तो प्रष् रहने पर प्रक् + स्यति = प्रक् + ष्यति = प्रक्ष्यति बनता है । २५९ भ्रक्ष्यति, २६३ मोक्ष्यति, २६५ म्रक्ष्यति, मर्क्ष्यति (कृष् की भाँति) २२६ रोक्ष्यति, २६८ लेप्स्यति २६९ लोप्स्यति, २७१ वेत्स्यति, २७३ वेक्ष्यति, २७६ सेक्ष्यति, २७७ सत्स्यति, २७८ स्रक्ष्यति (देखें सूत्र १२५) २७९ स्प्रक्ष्यति अथवा स्पर्क्ष्यति सृज् की भाँति ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३) लृट् लकारः (परस्मैपदम्)

(७) रुधादिगणः

२८२ छिद् + स्यति = छेत्स्यति, छेत्स्यतः छेत्स्यन्ति । २८३ पिष् + स्यति = पेक्ष्यति पेक्ष्यतः, पेक्ष्यन्ति (ष् का क् तथा स् का ष् करके) ।

२८४ भिद् + स्यति = भेत्स्यति, भेत्स्यतः, भेत्स्यन्ति आदि ।

२८५ भुज् + स्यति = भोक्ष्यति, भोक्ष्यतः, भोक्ष्यन्ति ।

२८६ युज् + स्यति = योक्ष्यति, योक्ष्यतः, योक्ष्यन्ति ।

२८७ रुध् + स्यति = रोत्स्यति, रोत्स्यतः, रोत्स्यन्ति आदि ।

२८८ हिंसि + इ + स्यति = हिंसिष्यति, हिंसिष्यतः हिंसिष्यन्ति ।

इन सभी के रूप पूर्व सूत्रों के आधार पर बन जाते हैं ।

३—लृट् लकारः (परस्मैपदम्)

(८) तनादिगण·

२८९ कृ + इ + स्यति = करिष्यति, करिष्यतः, करिष्यन्ति ।

२९० तन् + इ + स्यति = तनिष्यति, तनिष्यत·, तनिष्यन्ति ।

इनमें कृ धातु अनिट् थी पर सूत्र १२३ "ऋद्धनोः स्ये" इसे सेट् कर देता हैं ।

३. लृट् लकारः (परस्मैपदम्)

(९) क्र्यादिगणः

२९१ अश् + इ + स्यति = अशिष्यति, अशिष्यतः, अशिष्यन्ति । २९२ क्री + स्यति (अनिट् होने से) = क्रेष्यति, क्रेष्यतः, क्रेष्यन्ति । २९३ ग्रह + इ + स्यति = ग्रहीष्यति, ग्रहीष्यत., ग्रहीष्यन्ति । (देखे "ग्रहोऽलिटि दीर्घः" सूत्र १३६) ।

सूत्र १३६ **ग्रहोऽलिटि दीर्घः**—(७-२-३७) एकाच् ग्रह् धातु से किये गये इट् को दीर्घ हो जाय । यह लिट् में न हो । ध्यान रहे इसका सम्प्रसारण केवल सार्वधातुक लकारों में कित् तथा ङित् प्रत्यय परे रहते होता है । लृट् लकार आर्धधातुक है अतः ग्रह में मूल में ही स्यति (ष्यति होकर) जुड़ जाता है ।

इसी आधार पर २९४ ज्ञा + स्यति = ज्ञास्यति, २९५ दृ + इ + स्यति = दरीष्यति, **दरिष्यति,** २९६ धू + इ + स्यति = धविष्यति, (ऊ का गुण और अव् होकर)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२९७ पविष्यति, २९८ प्रेष्यति, २९९ बन्ध् + स्यति = भन्त्स्यति (देखें सूत्र ३३), ३०० मन्थिष्यति, ३०१ मुष् + इ + स्यति = मोषिष्यति, ३०२ मृद् + इ + स्यति = मर्दिष्यति । ३०३ मृ + इ + स्यति = मरिष्यति, ३०४ लू + इ + स्यति = लविष्यति । ३०५ वृ + इ + स्यति = वरिष्यति, ३०६ शॄ + इ + स्यति = शरीष्यति, शरिष्यति ।

३—लृट् लकारः (परस्मैपदम्)

(१०) चुरादिगणः

३०७ अंक + इ + अ + इष्यति = अंके + अ + इष्यति = अंकयिष्यति । आगे अंकयिष्यतः, अंकयिष्यन्ति । इसी प्रकार ३०८ अघयिष्यति, अघयिष्यतः, अघयिष्यन्ति, ३०९ अर्चयिष्यति, अर्चयिष्यतः, अर्चयिष्यन्ति आदि ।

इस गण में धातुएं अनेकाच् हो जाती है । अनेकाच् धातुएँ सदा सेट् होती हैं । अतः इस गण में इट् सभी में आता है । इस गण में लट् के यति के स्थान में यिष्यति रखना होता है । यथा ३१० अर्जयिष्यति, ३११ अर्दयिष्यति, ३१२ अर्हयिष्यति, ३१३ आपयिष्यति, ३१४ ईडयिष्यति, ३१५ ईरयिष्यति, ३१६ ऊर्जयिष्यति, ३१७ कणयिष्यति, ३१८ कथयिष्यति, ३१९ कल्पयिष्यति, ३२० कुत्सयिष्यति । इसी आधार पर ३२१-४२५ तक की धातुओं के रूप बनेंगे ।

३—लृट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(१) भ्वादिगणः

४२६ अंक् + इ + स्यते = अंकिष्यते, आगे अंकिष्येते, अंकिष्यन्ते, (लट् के समान टि को ए करके तथा आताम् के आ के स्थान में इय् करके) आगे अंकिष्यसे, अंकिष्येथे अंकिष्यध्वे, अंकिष्ये, अंकिष्यावहे, अंकिष्यामहे ।

लृट् लकार चूंकि टित् है अतः यहाँ "टित आत्मनेपदानां टेरे" से टि को ए होता है । साथ ही स्य में य का अ मिलता है अतः 'आतोङितः" से इय् होकर य् का लोप आदि भी होता है ।

४२७ अय् + इ + स्य + ते = अयिष्यते, आगे अयिष्येते, अयिष्यन्ते, अयिष्यसे, अयिष्येथे, अयिष्यध्वे, अयिष्ये, अयिष्यावहे, अयिष्यामहे । इसी प्रकार ४२८ ईक्षिष्यते, ४२९ ईषिष्यते, ४३० ईहिष्यते, ४३१ ऊहिष्यते, ४३२ प्यायिष्यते. ४३३ एजिष्यते, ४३४ कत्थिष्यते, ४३५ कामयिष्यते, कमिष्यते, ४३६ कलिष्यते, ४३७ कल्पिष्यते,

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४३८ काशिष्यते, ४३९ कूर्दिष्यते, ४४० कल्पिष्यते, ४४१ क्रन्दिष्यते, (देखें इदितो नुम्), ४४२ क्रपिष्यते, ४४३ क्लिन्दिष्यते (इदितोनुम्) ४४४ क्लेशिष्यते, ४४५ क्षमिष्यते, ४४६ क्षोभिष्यते (गुण करके), ४४७ खनिष्यते, ४४८ गर्हिष्यते, ४४९ गाहिष्यते, ४५० गूहिष्यते (इसकी उपधा में दीर्घ ऊ होने से गुण नहीं हुआ) ४५१ ग्रंथिष्यते, ४५२ ग्रसिष्यते, ४५३ घटिष्यते, ४५४ चेष्टिष्यते, ४५५ जृम्भिष्यते, ४५६ त्वरिष्यते, ४५७ डयिष्यते, (डी से डें+इ+स्यते) ४५८ लभ्+स्यते=लप्स्यते (इसमें भ् का चर्त्व प् करके क्योंकि इसके अनिट् होने के कारण इसमें इ नहीं आता), ४५९ तितिक्षिष्यते (यह सदा सन्नन्त रहती है।) ४६० त्रपिष्यते तथा त्रप्स्यते (इट् की विकल्पता से), ४६१ त्रास्यते (यहाँ आकारान्त से इट् नहीं।) ४६२ दक्षिष्यते, ४६३ ददिष्यते ४६४ दीक्षिष्यते, ४६५ द्रेकिष्यते, ४६६ द्योतिष्यते, ४६७ धरिष्यते, ४६८ ध्वंसिष्यते ४६९ पविष्यते, ४७० प्रथिष्यते, ४७१ प्लविष्यते, ४७२ बाधिष्यते, ४७३ बोधिष्यते, ४७४ भाषिष्यते, ४७५ भासिष्यते, ४७६ भ्राजिष्यते, ४७७ भिक्षिष्यते, ४७८ भ्रंक्ष्यते (सूत्र ३८ से श् से ष्, १२४ से ष् से क् तथा १७१ से स्य से ष्य करके) ४७९ मण्डिष्यते ४८० मन्दिष्यते, ४८१ मोक्ष्यते, (चोः कुः से च् का क् करके), ४८२ मुण्डिष्यते, ४८३ मोदिष्यते, ४८४ यतिष्यते, ४८५ याचिष्यते, ४८६ रंक्ष्यते, (ज् का क् होने पर), ४८७ रप्स्यते, (लभ् की भाँति भ् का चर्त्व करके) ४८८ रंस्यते, (ध्यान रहे रम्, नम् यम्, गम् सभी अनिट् हैं) ४८९ राजिष्यते, ४९० रोचिष्यते, ४९१ रेप्स्यते, (रम् की भाँति चर्त्व), ४९२ लंघिष्यते, ४९३ लज्जिष्यते, ४९४ लम्बिष्यते, ४९५ लोकिष्यते, ४९६ लोचिष्यते, ४९७ वंकिष्यते, ४९८ वंदिष्यते, ४९९ वर्तिष्यते, (वृत् आदि पाँच धातुओं से स्य और सम् प्रत्यय परे रहते विकल्प से परस्मैपद हो जाता है और वृत आदि पाँच धातुओं से परस्मैपद में सकारादि आर्धधातुक परे रहते इट् नहीं होता।) वर्त्स्यति। ५०० वर्धिष्यते, ५०१ वेपिष्यते, ५०२ वेष्टिष्यते, ५०३ व्यथिष्यते ५०४ शंकिष्यते, ५०५ शत्स्यते, ५०६ शप्स्यते, ५०७ शिक्षिष्यते, ५०८ शोभिष्यते, ५०९ श्लाघिष्यते ५१० श्लोकिष्यते, ५११ स्तम्भिष्यते, ५१२ स्मेष्यते, ५१३ सहिष्यते, ५१४ सूदिष्यते ५१५ सेविष्यते, ५१६ स्पन्दिष्यते, ५१७ स्पर्द्धिष्यते, ५१८ स्फोटिष्यते, ५१९ स्यन्दिष्यते ५२० स्वङ्क्ष्यते, ५२१ स्वादिष्यते, ५२२ स्वेदिष्यते, ५२३ स्रंसिष्यते, ५२४ ह्लादिष्यते।

३—लृट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(२) अदादिगणः

५२५ आस्+इ+स्यते=आसिष्यते, आगे आसिष्येते, आसिष्यन्ते। आसिष्यसे आसिष्येथे, आसिष्यध्वे, आसिष्ये, आसिष्यावहे, आसिष्यामहे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५२६ इङ् — अधि + इ + स्यते = अध् + इ + इ + ष्यते = अधिय + ष्यते = अध्येष्यते । अध्येष्येते (आतां का इय् करके) अध्येष्यन्ते, अध्येष्यसे, अध्येष्येथे, अध्येष्यध्वे अध्येष्ये, अध्येष्यावहे, अध्येष्यामहे । इसी आधार पर ५२७ ईडिष्यते, ५२८ ईरिष्यते (५२८अ) ख्यास्यते ५२९ वक्ष्यते (ब्रू से वच् करके देखें सूत्र १२८) ५३० आशास्+इ + स्यते = आशासिष्यते । शी के अधिक उपयोगी होने से पूरे रूप दिये जाते हैं ।

शयिष्यते	शयिष्यसे	शयिष्ये
शयिष्येते	शयिष्येथे	शयिष्यावहे
शयिष्यन्ते	शयिष्यध्वे	शयिष्यामहे

३—लृट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(३) जुहोत्यादिगणः

५३२ दा + स्यते = दास्यते, आगे दास्येते, दास्यन्ते, दास्यसे, दास्येथे, दास्यध्वे दास्ये, दास्यावहे, दास्यामहे । इसी आधार पर ५३३ धास्यते, ५३४ मास्यते, ५३५ हास्यते आगे हास्येते, हास्यन्ते । हास्यसे, हास्येथे, हास्यध्वे । हास्ये, हास्यावहे, हास्यामहे । ये सभी पूर्व सूत्रों से बन जाते हैं, इनमें इट् नहीं होता ।

(३) लृट् लकार (आत्मनेपदम्)

(४) दिवादिगणः

५३६ क्लिश् + इ + स्यते आने पर इट् से इ "**स्यातासी**" से स्य, त आतां से त आता है तब टि को ए करके तथा धातु को गुण करके "**क्लेशिष्यते**" रूप बनता है । आगे क्लेशिष्येते, क्लेशिष्यन्ते, क्लेशिष्यसे, क्लेशिष्येथे, क्लेशिष्यध्वे, क्लेशिष्ये, क्लेशिष्यावहे, क्लेशिष्यामहे रूप बनते हैं । ५३७ खिद् + स्यते = खेत्स्यते (यह अनिट् है, तथा द् का चर्त्व होता है ।)

५३८ जन् + इ + स्यते = जनिष्यते आगे जनिष्येते, जनिष्यन्ते आदि ।

५३९ डी + इ + स्यते = डे + इ + स्यते = डयिष्यते, आगे डयिष्येते, डयिष्यन्ते ।

५४० तप् + स्यते (अनिट् है) = तप्स्यते, तप्स्येते, तप्स्यन्ते ।

५४३ दीप + इ + स्यते = दीपिष्यते, ५४२ दू + इ + स्यते = दविष्यते

५४३ धी + स्यते = धेष्यते, धेष्येते, धेष्यन्ते ।

५४४ पद् + स्यते = पत्स्यते, ५४५ पी + स्यते = पेष्यते ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५४६ प्री + स्यते = प्रेष्यते, ५४७ बुध् + स्यते = भोत्स्यते

(देखें सूत्र ३३ जिससे ब् (तृतीय) के स्थान में भ् (चतुर्थ) होता है। यहां ध् के स्थान में "खरिच" से चर्त्व त् होता है।)

५४८ मन् + स्यते = मंस्यते, मस्येते, मंस्यन्ते।

५४९ मा + स्यते = मास्यते, ५५० युज् + स्यते = योक्ष्यते (ज् को क् चोः कुः से, क् के परे स्य को ष्य तथा क्ष्य करके)।

५५१ युध् + स्यते = योत्स्यते, योत्स्येते, योत्स्यन्ते।

५५२ रुध् + स्यते = रोत्स्यते, ५५३ ली + स्यते आने पर—

सूत्र १३७ **मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च**—(६-१-५०) एच् का निमित्त अशित् अथवा ल्यप् परे रहते मीनाति, मिनोति तथा दीङ् धातुओं को आकार अन्तादेश हो।

सूत्र १३८ **विभाषा लीयते**—(६-१-५१) एच् के प्रसङ्ग में शित् भिन्न प्रत्यय तथा ल्यप् परे रहते ली को विकल्प से आकार आदेश हो। अतः लास्यते, लास्येते लास्यन्ते रूप बनते हैं। (ध्यान रहे आकार से परे स्य का ष्य नहीं होता) जब आकार नहीं होगा तो लेष्यते, लेष्येते, लेष्यन्ते रूप बनेंगे।

५५४ वाश् + इ + स्यते = वाशिष्यते, वाशिष्येते, वाशिष्यन्ते। ५५५ विद् + स्यते वेत्स्यते, ५५६ व्री—व्रेष्यते, ५५७ सू + स्यते = सोष्यते, इट् आने पर सविष्यते। ५५८ सृज् + स्यते = स्रक्ष्यते। आगे स्रक्ष्येते स्रक्ष्यन्ते आदि।

३—लृट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(५) स्वादिगणः

५५९ अश् + इ + स्यते = अशिष्यते, अशिष्येते, अशिष्यन्ते, अशिष्यसे, अशिष्येथे अशिष्यध्वे, अशिष्ये, अशिष्यावहे, अशिष्यामहे।

५६० चि + स्यते = चेष्यते, चेष्येते, चेष्यन्ते, चेष्यसे, चेष्येथे, चेष्यध्वे, चेष्ये चेष्यावहे, चेष्यामहे।

५६१ धू + इ + स्यते = धो + इ + स्यते = धविष्यते, चूंकि इट् विकल्प से आता है, अतः जब इट् न होगा तो धोष्यते, धोष्येते, धोष्यन्ते। (देखें सूत्र १३४) ५६२ सू + स्यते = सोष्यते, सोष्येते, सोष्यन्ते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३—लृट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(६) तुदादिगणः

५६३ जुष् + इ + स्यते = जोषिष्यते, जोषिष्येते, जोषिष्यन्ते आदि ।
५६४ तुद् + स्यते = तोत्स्यते (यह अनिट् धातु है), तोत्स्येते, तोत्स्यन्ते ।
५६५ आ + दृ + इ + स्यते = आदरिष्यते, आदरिष्येते आदि ।
५६६ नुद् + स्यते = (यह भी अनिट् है) = नोत्स्यते, नोत्स्येते आदि ।
५६७ मिल् + इ + स्यते = मेलिष्यते, मेलिष्येते, मेलिष्यन्ते ।
५६८ मुच् + स्यते = मोक्ष्यते, मोक्ष्येते, मोक्ष्यन्ते, मोक्ष्यसे, मोक्ष्येथे, मोक्ष्यध्वे, मोक्ष्ये, मोक्ष्यावहे, मोक्ष्यामहे (देखें सूत्र १२६)
५६९ मृ + इ + स्यते = मरिष्यते, मरिष्येते, मरिष्यन्ते ।
५७० लज् + इ + स्यते = लजिष्यते, लजिष्येते, लजिष्यन्ते ।
५७१ विश् + स्यते = वेक्ष्यते, वेक्ष्येते- वेक्ष्यन्ते ।
५७२ विद् + स्यते = वेत्स्यते, ५७३ सिच् + स्यते = सेक्ष्यते ।
५७४ शद् + स्यतें = शत्स्यते, शत्स्येते, शत्स्यन्ते ।

३—लृट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(७) रुधादिगणः

५७५ छिद् + स्यते = छेत्स्यते, ५७६ भिद् + स्यते = भेत्स्यते
५७७ भुज् + स्यते = भोक्ष्यते (देखें चोः कुः तथा सूत्र १७१)
५७८ युज् + स्यते = योक्ष्यते, योक्ष्येते, योक्ष्यन्ते आदि ।
५७९ रुध् + स्यते = रोत्स्यते (ध् का चर्त्व करके)

३—लृट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(८) तनादिगणः

५८० कृ + इ + स्यते = करिष्यते (देखें सूत्र १२३ जिससे इसको स्य परे रहते इट् का विधान है ।

करिष्यते	—	करिष्यसे	—	करिष्ये,	वैसे यह धातु अनिट् है इसीलिए कृ + क्त = कृत. बनता है ।
करिष्येते	—	करिष्येथे	—	करिष्यावहे	
करिष्यन्ते	—	करिष्यध्वे	—	करिष्यामहे	

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५८१ तनु — तन् + इ + स्यते = तनिष्यते, तनिष्येते, तनिष्यन्ते ।
५८२ मन् — स्यते = मनिष्येते, मनिष्येते, मनिष्यन्ते ।

३—लृट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(९) क्र्यादिगणः

५८३ क्री + स्यते = क्रेष्यते, क्रेष्येते, क्रेष्यन्ते आदि । ५८४ ग्रह् + इ + स्यते = (देखें सूत्र १३६) ।

ग्रहीष्यते	—	ग्रहीष्यसे	—	ग्रहीष्ये
ग्रहीष्येते	—	ग्रहीष्येथे	—	ग्रहीष्यावहे
ग्रहीष्यन्ते	—	ग्रहीष्यध्वे	—	ग्रहीष्यामहे

५८५ ज्ञा + स्यते = ज्ञास्यते, ज्ञास्येते, ज्ञास्यन्ते आदि ।
५८६ धु + स्यते = धोष्यते, इट् होने पर धविष्यते ।
५८७ पविष्यते, ५८८ प्री + स्यते = प्रेष्यते ।
५८९ लू + इ + स्यते = लविष्यते, ५९० वृ + इ + स्यते (वरीष्यते)

३—लृट् लकारः [आत्मनेपदम्]

(१०) चुरादिगणः

५९१ अर्थ + इ (णिच् का शेष) + स्यते = अर्थे + इ + स्यते = अर्थयिष्यत । इसी आधार पर प्र + अर्थ + यिष्यते = प्रार्थयिष्यते । आगे प्रार्थयिष्यन्ते । ५९२ चोरयिष्यते, चोरयिष्येते, चोरयिष्यन्ते । ५९३ दीपयिष्यते, ५९४ मादयिष्यते, ५९५ शातयिष्यते ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिच्छेद ६

४—लोट् लकारः [परस्मैपदम्]

(१) भ्वादिगणः

सूत्र १३९ **लोट् च**—(३-३-१६२) विधि आदि अर्थों में लोट् आता है। विधि आदि ६ अर्थ हैं। १—विधि, २—निमन्त्रण, ३—आमन्त्रण, ४—अधीष्ट, ५—संप्रश्न ६—प्रार्थना। इनमें सेवक आदि को आज्ञा देना विधि होती है। अपने समान बन्धुओं को बुलाना निमन्त्रण है। इसमें आज्ञा नहीं होती पर इसे टाला नहीं जा सकता। आमन्त्रण में निमन्त्रण से भी कम बल होता है। इसमें आमंत्रित व्यक्ति स्वतन्त्र है चाहे आये चाहे नहीं। अधीष्ट में सत्कार सहित प्रेरणा का भाव रहता है। इसके लिए कहा गया है—"**अधीष्टः सत्कारपूर्वकः व्यापारः।**" जैसे अध्यापक आदि से कहा जाय—"**श्रीमन्! ममपुत्रमध्यापयतु।**" संप्रश्न में परामर्श लेने का भाव होता है। प्रार्थना में बड़ों से याचना का भाव रहता है।

१ अक्+ति आने पर अक्+शप्+ति=अक्+अ+ति, अकति स्थिति बनती है। तब अगला सूत्र लगता है।

सूत्र १४० **एरुः**–(३-४-८६) लोट् की अन्तिम इ के स्थान में उ हो जाय। अकतु गच्छतु, वदतु आदि। जहाँ किसी धातु के अन्त में अ होता है वहाँ शप् के अ आने पर "**अतो गुणे**" से पररूप होकर रूप बनता है। जैसे **गच्छ**+अ+तु = **गच्छतु**, पिब+अ +तु=पिबतु।

सूत्र १४१ "**तुह्योस्तातङ् आशिष्यन्यतरस्याम्**"—(७-१-३५) आशीर्वाद अर्थ में तु और हि को विकल्प से तातङ् हो जाय। अक्+अ+तात्=अकतात्। तातङ् से केवल तात् शेष रहता है। अक्+अ+ताम्=अकताम्।

सूत्र १४२ **लोटोलङ्वत्**– (३-४-८५) तस्थस्थमिपां आदि के लिए लोट् को लङ् के समान माना जाय। तस्थस्थ आदि ङित् लकारों के लिए कहे गये थे पर इस सूत्र के आधार पर ये लोट् में भी लगते हैं क्योंकि लोट् को लङ् के समान बना दिया गया है। आगे अक+अन्तु=अकन्तु। ऐसे ही पठन्तु, वदन्तु, गच्छन्तु आदि।

अक्+अ+सि आने पर

सूत्र १४३ **सेर्ह्यपिच्च**—(३-४-८७) लोट् के सि के स्थान में हि आदेश हो। वह

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हि अपित् माना जाय। अपित् इसलिए कहा गया है कि सि पित् है अतः उसके स्थान में होने वाला आदेश कहीं वैसा न माना जाय।

आगे अक+हि आने पर पुनः एक नयी स्थिति हुई—

सूत्र १४४ **अतो हेः**—(६-४-१०५) अदन्त अङ्ग से परे हि का लोप हो जाय। हि की यह स्थिति भ्वादि, दिवादि, तुदादि तथा चुरादि में होती है। अतः इन चारों गणों में उसका लोप हो जाता है। पठ, भव, खाद, कथय, लिख आदि सभी इससे बन जाते हैं।

आगे अक्+अ+तम् = अकतम् पठतम्, गच्छतम्,

अक्+अ+त = अकत। अक्+अ+मि आने पर—

सूत्र १४५ **मेर्निः**—(३-४-८९) लोट् के मि के स्थान पर नि आदेश हो जाय। अतः अक+नि आने पर—

सूत्र १४६ **आडुत्तमस्य पिच्च**—(३-४-९२) लोट् के उत्तम पुरुष को आट् का आगम हो तथा वह पित् हो। अक+आ+नि = अकानि। गच्छानि, भवानि। आगे अक+वस् = अकावस्, अक+मस् = अकामस् आनें पर स् का लोप हो जाता है। (देखें '**नित्यं ङितः**' सूत्र १०८) तब अकाव, अकाम, भवाव, भवाम, पठाव, पठाम रूप बनते हैं।

इसी आधार पर २ अटतु, ३ अञ्चतु, ४ अततु, ५ अर्घतु, ६ अर्चतु, ७ अर्जतु ८ अर्दतु, ९ अर्हतु, १० अलतु ११ अवतु, १२ ईर्ष्यतु, १३ ऋच्छतु, १४ एजतु, १५ कठतु १६ कांक्षतु, १७ कीलतु, १८ कुञ्चतु, १९ कूजतु, २० कर्षतु, २१ क्रन्दतु, २२ क्रामतु क्राम्यतु, २३ क्वणतु, २४ क्रीडतु, २५ क्रोशतु, २६ क्षरतु, २७ क्षयतु, २८ क्षायतु, २९ खञ्जतु, ३० खनतु, ३१ खादतु, ३२ खेलतु, ३३ गदतु, ३४ गच्छतु, ३५ गुञ्जतु ३६ गोपायतु, ३७ गायतु, ३८ गर्जतु, ३९ गर्वतु, ४० ग्लायतु, ४१ घसतु, ४२ जिघ्रतु (देखें ११) ४३ चरतु ४४ चर्वतु, ४५ चलतु, ४६ चेततु, ४७ चुम्बतु, (देखें सूत्र ९) ४८ चूषतु, ४९ जपतु, ५० जयतु गुण करके) ५१ जीवतु. ५२ जल्पतु, ५३ ज्वरतु ५४ ज्वलतु, ५५ तपतु, ५६ तूषतु, ५७ तरतु, (गुण करके) ५८ तर्जतु, ५९ त्यजतु ६० दलतु, ६१ दंशतु, ६२ दहतु, ६३ यच्छतु (देखें सूत्र ११) ६४ द्रवतु (गुण करके), ६५ पश्यतु, (देखें सूत्र ११), ६६ धूपायतु, (आय जोड़कर) ६७ धरतु, ६८ धर्षतु ६९ धमतु, (देखे सूत्र ११) ७० ध्यायतु, ७१ नटतु, ७२ नदतु, ७३ नमतु, ७४ नन्दतु (देखें सूत्र ९), ७५ नयतु (गुण करके), ७६ नर्दतु, ७७ पचतु, ७८ पठतु, ७९ पततु ८० पिबतु, ८१ पुन्थतु (देखें सूत्र ९), ८२ पूषतु, ८३ फलतु ८४ फुल्लतु, ८५ बोधतु, ८६ बृंहतु (देखे सूत्र ९), ८७ भजतु, ८८ भणतु, ८९ भवतु (गुण करके), ९० भूषतु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

९१ भरतु, ९२ भ्रमतु (भ्राम्यतु, देखें सूत्र २०), ९३ मण्डतु (सू० ९), ९४ मथतु ९५ मन्थतु, ९६ महतु, ९७ मीलतु, ९८ मूर्च्छतु, ९९ मर्षतु (देखें सूत्र ७) १०० मनतु (देखें ११) १०१ यजतु, १०२ यच्छतु (देखें सूत्र ११), १०३ रक्षतु, १०४ रटतु १०५ रणतु, १०६ रुण्ठतु, १०७ रोषतु (देखें सूत्र ७), १०८ रोहतु (देखें सूत्र ७) १०९ लजतु, ११० लपतु, १११ लषतु, ११२ लसतु, ११३ लुञ्चतु, ११४ लोठतु ११५ लुण्ठतु, (चूंकि उपधा में उ नहीं अतः गुण नहीं हुआ), ११६ वजतु, ११७ वदतु ११८ वनतु, ११९ वपतु, १२० वमतु, १२१ वसतु, १२२ वहतु, १२३ वाञ्छतु, (देखें ९) १२४ वयतु, १२५ वेलतु, १२६ वेल्लतु. १२७ व्रजतु, १२८ शंसतु, १२९ शपतु, १३० शमतु, १३१ शोचतु, (देखें सूत्र ७), १३२ शूलतु, १३३ श्रयतु, १३४ शृणोतु (देखें सू० १५-१९), शृणुताम्, शृण्वन्ति, शृणु (देखें १५२) सामान्य रूप से हि का लोप अ से परे रहने पर होता है, पर यहाँ उसका अपवाद है।) आगे शृणुताम्, शृणुत शृणवानि, शृणवाव, शृणवाम (देखें सू० १४६, यह पित् होने से गुण को रोकता नहीं) १३५ सजतु, १३६ सेधतु (देखें, ७, १०) १३७ तिष्ठतु (देखें ११), १३८ स्रवतु, १३९ धावतु (देखें ११), १४० सर्पतु, १४१ स्खलतु, १४२ स्तनतु, १४३ स्मरतु (गुण करके), १४४ स्वनतु, १४५ हसतु, १४६ हरतु, १४७ हर्षतु, १४८ ह्लसतु, १४९ ह्वयतु।

४—लोट् लकारः [परस्मैपदम्]

(२) अदादिगणः

(ध्यान रहे इसमें शप् का लोप होता है)

१५० अद् + तु = अत्तु (खरि च से द् का त् तथा एरुः से ति का तु करके) अद् + ताम् = अत्ताम्, अद् + अन्तु (झि का अन्त तथा इ का उ करके) = अदन्तु। आगे अद् + सि आने पर पहले सि को हि तथा अद् + हि स्थिति बनती है।

सूत्र १४७ **हुझल्भ्यो हेर्धिः**—(६-४-१०१) हु के स्थान में तथा झलन्त धातुओं से परे हि को धि हो जाय। झलन्तों में यवरल तथा पाँचवां वर्ण छोड़कर कोई भी हल् वर्ण आता है। यहां अद् का द् झल् है। अतः अद् + हि = अद् + धि = अद्धि। यहाँ द् का चर्त्व नहीं हुआ क्योंकि आगे खर् नहीं मिला। अद् + तम् = अत्तम्, अद् + त = अत्त। अद् + मिप् = अद् + नि = अदानि (देखें सू० १४५-१४६) आगे अदाव, अदाम। (देखें सू० १४६ तथा १०८)।

१५१ अस् + तु = अस्तु, अस् + ताम् आने पर सूत्र २४ के आधार पर अस् के अ का लोप हो जाता है। अत. द्विवचन में स्ताम् रूप बनता है। इसी आधार पर अस् +

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्तु = स् + अन्तु = सन्तु । अस् + सिप् = अस् + हि, सू० १४७ के अनुसार अस् + धि आता है। इसके अनन्तर सूत्र २४ से "अ" का लोप हो जाता है तो स् + धि रह जाता है।

सूत्र १४८ **घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च**—(६-४-११९) घु संज्ञक तथा अस् धातु को एकार हो तथा अभ्यास का लोप भी हो। इसके अनुसार स् के स्थान पर ए होकर एधि रूप बनता है। परन्तु जहाँ थस् का तातङ् होगा वहाँ यह न लगेगा, अतः स्तात् रूप बनेगा। आगे अस् + तम् = अस्तम्, अस् + त = अस्त । अस् + आ + नि = असानि, अस् + आ + वस् = असाव (स् का लोप करके (देखें नित्यं ङितः), अस् + आ + मस् = असाम (देखें १०८)।

१५२ इण् + तु = एतु (गुण करके), इतात् (तातङ् से), इ + ताम् = इताम्। इ + अन्तु = यन्तु (यण् करके)। ध्यान रहे यहाँ यण् ने इयङ् को रोक दिया। (देखें लट् लकार), इ + सि = इहि (हि का लोप अकार से परे कहा गया है।) साथ ही हि अङित् होने से इ का गुण नहीं हुआ। इ + आ + नि आने पर इ को गुण हो जाता है क्योंकि आट् पित् कहा गया है। अतः ए + आनि = अयानि, आगे अयाव, अयाम।

१५४ चकास् + तु = चकास्तु, चकास्ताम्, चकास् + अतु = चकासतु। (चूंकि सूत्र २८ से चकासृ की अभ्यास सज्ञा हो जाती है अतः सूत्र २९ लग जाता है। अत इस रूप में अतु होता है, अन्तु नहीं। आगे—चकास् + सि, चकास् + हि आने पर पहले हि को धि होता हैं। (देखें सू० १४७), चकास् + धि होने पर स् का लोप हो जाता है (देखें सूत्र ९८) अतः चकाधि रूप बनता है। आगे चकास्ताम्, चकास्त, चकासानि, चकासाव चकासाम।

१५५ जागृ + तु = जागर्तु (गुण करके), जागृतात्, (तातङ् से) जागृ + ताम् = जागृताम् (ङित् होने से गुण नहीं) जागृ + अत् = जाग्रतु (यण् करके) जागृ + सि = जागृ + हि = जागृहि । जागृतम्, जागृत । जागृ + आ + नि = जागराणि, जागराव जागराम।

१५६ दुह् + तु = दोघ् + तु = दोग्धु (देखें लट् लकार), दुह् + ताम् = दुग्धाम् = (अपितु होने से गुण नहीं), दुह् + अन्तु = दुहन्तु। अत. इस धातु के सभी रूप निम्नलिखित होते हैं—

दोग्धु-दुग्धात्	दुग्धि, दुग्धात्	दोहानि
दुग्धाम्	दुग्धम्	दोहाव
दुहन्तु	दुग्ध	दोहाम ।

१५७ द्विष् + तु = द्वेष्टु (गुण तथा त् का ष्टुत्व करके) द्विष् + तात् = द्विष्टात् (तातङ् ङित् है अतः गुण नहीं) द्विष् + ताम् = द्विष्टाम्, द्विष् + अन्तु = द्विषन्तु

(इ का उ होकर) (देखें सूत्र १४०) मध्यम पुरुष में द्विष्+हि आने पर १४७ से हि को धि होता है। तब द्विष्+धि=द्विड्ढि (सन्धि करके) आगे द्विष्+तम्=द्विष्टम्, द्विष्ट, द्वेषाणि, द्वेषाव, द्वेषाम। १५८ नु+तु=नौतु (देखें सूत्र ४०), नु+तात्=नुतात् नुताम्, नु+अन्तु=नुवन्तु ("अचिश्नुधातुभ्रुवां" से उवङ् करके) आगे नुहि, नुतम्, नुत नु+आ+नि=नवानि (चूंकि आट् का 'आ' पित् है अतः गुण करके), नवाव, नवाम। इसी प्रकार १५३ कौतु, १६५ यौतु, १६६ रौतु, १७४ स्नौतु रूप बनते हैं।

१५९ पा+तु=पातु,	पातात्	—	पाहि, पातात्	—	पानि
	पाताम्	—	पातम्	—	पाव
	पान्तु	—	पात	—	पाम

इसी प्रकार १६१ भातु, १६२ मातु, १६४ वातु, १६८ लातु, १७३ स्नातु।

१६० ब्रु+तु, ब्रू+ई+तु (देखें सूत्र ३४)=ब्रो+ईतु=ब्रवीतु (गुण करके) आगे ब्रू+तात्=ब्रूतात्। ब्रू+ताम्=ब्रूताम्। ब्रू+अन्तु=ब्रुवन्तु (यण् के स्थान में उवङ् करके), ब्रू+सि=ब्रूहि, ब्रूतम्, ब्रूत, ब्रो+आनि=ब्रवाणि, ब्रवाव, ब्रवाम।

१६३ मृज्+तु आने पर सूत्र ३८ के आधार पर मार्ष्टु रूप बनता है। इसमें सूत्र ३७ के अनुसार वृद्धि होती है, शेष सामान्य सन्धि कार्य है।

मृज्+तात्=मृष्+तात्=मृष्टात्, आगे मृष्टाम्, मार्जन्तु। मार्जन्तु में केवल ३७ सूत्र विशेष है। इसमें ३८ की प्रवृत्ति नहीं है। आगे मृष्+हि=मृड्ढि (सभी सन्धि कार्य) देखें सूत्र १४७। मृज्+मि=मृज्+आ+नि=मार्जानि, मार्जाव, मार्जाम।

१६७ रुद्+तु=रोदितु, (सूत्र ३९ से इ का आगम तथा एरुः से उ) रुद्+इ+तात्=रुदितात्, रुदिताम्, रुद्+अन्तु=रुदन्तु। ध्यान रहे रुद्+अन्ति आने पर वलादि प्रत्यय न होने से इट् नहीं आता। (देखें सूत्र ३९।), रुद्+हि=रुदिहि (रुदादिभ्यः से इट् आने पर) आगे रुदितम्, रुदित, रुद्+आनि=रोदानि, रोदाव, रोदाम (गुण करके)

१६९ वच्+तु=वक्तु, वक्तात्, वक्ताम्, वचन्तु (चोः कुः से कुत्व करके) वच+सि=वच्+हि=वच्+धि=वग्धि (पूर्व सूत्रों से), वक्तम् वक्त, वचानि, वचाव वचाम।

१७० विद्+तु=वेत्तु, वित्ताम, विदन्तु, विद्+सि=विद्+हि=विद्+धि=विद्धि (देखें १४७), वित्तम्, वित्त, विद्+आनि=वेदानि, वेदाव, वेदाम। इससे एक शब्द का निपातन भी किया जाता है। विदाङ्कुर्वन्तु (आप जाने) निपातन का अर्थ मान लेना है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१७१ शास् + तु = शास्तु, शिष्टाम् (देखे शासवसिघसीनां च सूत्र ४४)

शास् + अतु = शासतु, (इसमें अन्ति न होकर अत होता है क्योंकि यह अभ्यस्त संज्ञक है। (देखें सूत्र २८)।

शास् + सि = शास् + हि = शास् + हिं = शास् + धि = शाधि (देखें सूत्र १४९, जिससे शास् का हि परे रहते केवल शा रह जाता है।) देखें गीता "**शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्**"। आगे शिष् + तम् = शिष्टम्, शिष् + त = शिष्ट, शासानि, शासाव शासाम।

सूत्र १४९ **शाहौ** (६-४-३५) शास् को शा आदेश हो हि परे रहते।

१७२ श्वस् + तु = श्वस् + इ + तु = श्वसितु (देखें ३९) आगे श्वसिताम्, श्वस्+ अन्तु = श्वसन्तु, श्वस् + हि = श्वसिहि (इट् लाकर) श्वसितम्, श्वसित। श्वस् + आनि = श्वसानि, श्वसाव, श्वसाम।

इसी आधार पर १७५ स्वपितु, स्वपिताम्, स्वपन्तु, आदि होंगे।

१७६ हन् + अन्तु = हन्तु, हन् + ताम् = हताम् (देखें सूत्र ४३ जिससे न् का लोप होता है)

हन् + अन्तु = हन् + अन्तु = घ्नन्तु (देखें सूत्र ४५, ४६)

हन् + हि आने पर—

सूत्र १५० **हन्तेर्जः** (६-४-३६) हि परे रहते हन् को ज आदेश हो जाय। अतः जहि रूप बनता है। हतम्, हत। हनानि, हनाव, हनाम।

सूत्र १५१ **असिद्धवदत्राभात्**—(६-४-२२) यदि एक ही निमित्त वाला कार्य करना हो तो पहले किया हुआ आभीय कार्य असिद्ध माना जाता है। अष्टाध्यायी के ६-४-२२ से लेकर पाद की समाप्ति तक सभी कार्य आभीय कहे जाते हैं। यहाँ हन् के स्थान पर ज होना तथा हि का लोप होना दोनों कार्य आभीय हैं। इनमें से पहला असिद्ध हो जाता है। यदि इसे यहाँ असिद्ध न मानते, तो ज के अकारान्त होने के कारण उससे परे हि का लोप हो जाता (देखें अतो हेः सूत्र १४४) परन्तु लोक में जहि कहा जाता है। अतः इसके लिए ऐसा सूत्र बनाना पड़ा। जब ज असिद्ध हो गया तो हि को हन् ही दिखाई देने लगा जो अकारान्त नहीं है।

४—लोट् लकारः (परस्मैपदम्)

(३) जुहोत्यादिगणः

१७७ दा + तु = दादातु (जुहोत्यादि में धातु का द्वित्व होता है।) = ददातु (देखें सूत्र ५०) बनता है।

दा + दा + ताम् आने पर (चूंकि यह अपित् है अतः दूसरे दा के आ का लोप होगा तथा अभ्यास को ह्रस्व)।

द + द् + ताम् = दत्ताम् (देखें सूत्र ५०, ५१ तथा खरि च)

द + द् + अतु (ध्यान रहे अभ्यस्त संज्ञक धातु के झ् के स्थान में अत् होता है।

ददतु। इस प्रकार प्रथम पुरुष के सभी रूप ददातु, दत्ताम्, ददतु हुए।

आगे द + द् + हि आने पर सूत्र १४८ लगता है। इससे अभ्यास का लोप होता है तथा दा और धा धातुओं को एकारान्त हो जाता है। देहि, आगे दत्तम्, दत्त, ददानि, ददाव, ददाम।

१७८ धा + तु = धा + धा + तु = ध+धा + तु (द्वित्व और ह्रस्व करके) = दधातु (अभ्यास का जश्त्व द करके देखें सूत्र ५२)

धा+धा + ताम् = धा + ध्+ताम् (देखें **श्नाभ्यस्तयोरातः** सूत्र ५१)

ध + ध्+ताम् = धत्ताम् (ह्रस्वः से अभ्यास का ह्रस्व करके तथा खरिच से चर्त्व करके)

धा + धा + अतु = दधतु (सभी कार्य ५० से ५२ तक के सूत्रों द्वारा तथा अभ्यस्त से झ् को अत् करके)

आगे दा के समान धेहि, धत्तम्, धत्त, दधानि, दधाव, दधाम।

१७९ पृ + तु = पृ + पृ + तु = पिपर्तु (लट् की भाँति बनाकर) तथा इ को एरुः से उ करके)

आगे पृ+पृ + तांम् = पिपूर्ताम् (देखें सूत्र ५४, ५५, ५६)

पृ+पृ + अतु = पिपुरतु, आगे पिपूर्हि, पिपूर्तम्, पिपूर्त, पिपराणि (आट् आने पर तथा नि को णि करने पर) पिपराव, पिपराम (देखें नित्यं ङितः सूत्र १०८)

१८० भी — भी + भी + तु = भिभीतु (ह्रस्व से)

भिभेतु = बिभेतु (गुण तथा अभ्यास का जश्त्व करके)

भी + भी + अतु = बिभीताम् बिभिताम् (देखें ५६, ५७)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वि+भी+अतु=विभ्यतु (अन्य कार्यों के अतिरिक्त झ् को अत् करके)

बिभिहि, बिभीतम्, बिभितम्, बिभित/बिभीत ।

बिभि+आनि (आत्व तथा नि आने पर)=बिभे+आनि (आट् के पित् मानने से गुण होने पर), बिभयानि, बिभयाव, बिभयाम ।

१८१ भृ — भृ+भृ+तु=भृभर्तु भिभर्तु (देखें सूत्र ५४) बिभर्तु (अभ्यास का जश्त्व) विभृतात्, विभृताम् ।

विभृ+अतु=यण् करके=बिभ्रतु ।

बिभृहि (हि के कारण गुण निषेध) बिभृतम्, बिभृत ।

बिभृ+आनि=(गुण, यण् तथा णत्व होने पर) बिभराणि बिभराव, बिभराम ।

१८२ हा+हा+तु=जहातु (देखें लट् तथा एरुः) आगे जहिताम्, (देखें सूत्र ५९) जहतु (झ का अत् तथा इ का उ करके), जहाहि, जहिहि, जहितम्, जहित
जहानि, जहाव, जहाम, जहीहि, जहीतम्, जहीत
(देखें सूत्र आ च हौ)

(सूत्र १५१अ) आ च हौ। (६-४-११७) हा धातु के आकार को हि परे रहते आकार भी हो। यहाँ आकार कहने का भाव यह है कि जो इ, या ई होती है वही न रहे, आ भी रह सके। अतः एक रूप जहाहि भी रहता है।

१८३ हु+हु+तु=जुहोतु (लट् का कार्य तथा एरुः)

जुहुतात्, जुहुताम्, जुहु+अतु=जुह्वतु ।

जुहुधि (देखें सूत्र १४७) जुहुतात्, जुहुतम्, जुहुत,

जुहु+आनि=जुहो+आनि=जुह्वानि, जुह्वाव, जुह्वाम ।

१८४ ह्री+तु=ह्री+ह्री+तु आदि आने पर सभी कार्य हु की भाँति होते हैं, किन्तु इसमें संयोग होने के कारण झि के झ् का अत् होता है और उस अ की परता में इ का यण् नहीं होता बल्कि 'अचिश्नुधातुभ्रुवां' से इयङ् होता है। अतः इसके रूप इस प्रकार होंगे।

जिह्रेतु, जिह्रीतात —	जिह्रीहि (तात्) —	जिह्रयाणि
जिह्रीताम् —	जिह्रीतम् —	जिह्रयाव
जिह्रियतु —	जिह्रीत —	जिह्रयाम

४—लोट् लकारः (परस्मैपदम्)

(४) दिवादिगणः

१८५ अस्+य+तु (य विकरण आने पर) = अस्यतु, शेष कार्य भ्वादि की भांति होते हैं।

अस्+य+ताम् = अस्यताम्, अस्+य+अन्तु = अस्यन्तु (अतो गुणे)

अस्+य+हि = अस्य (अकार से परे हि के लोप होने पर), अस्यतम्, अस्यत, अस्यानि, अस्याव, अस्याम ।

टिप्पणी—चूंकि इस गण में य विकरण आता है, अतः इसमें दो बातें अवश्य होंगीं। १—मध्यम पु० में हि का लोप, २ झि के झ के स्थान में अन्त होगा। अतः इस की धातुओं के रूप बड़ी ही सरलता से बन जाते है। यथा—

१८६ कुप्यतु, १८७ क्रुध्यतु, १८८ क्लिद्यतु, १८९ क्षाम्यतु, १९० क्षिप्यतु, १९१ क्षुध्यतु, १९२ क्षुभ्यतु, १९३ खिद्यतु, १९४ नश्यतु, १९५ ताम्यतु, १९६ तुष्यतु, १९७ तृष्यतु, १९८ त्रस्यतु, १९९ दीव्यतु (सूत्र ५६ से इसकी उपधा का दीर्घ होकर) आगे दीव्यताम्, दीव्यन्तु आदि। २०० दुष्यतु, २०१ दृप्यतु, २०२ द्यतु (देखें ६४), २०३ द्रुह्यतु, २०४ नृत्यतु, २०५ पुष्यतु, २०६ पुष्प्यतु, २०७ भ्रश्यतु, २०८ भ्राम्यतु (देखें ६३) २०९ भ्रंश्यतु, २१० माद्यतु, २११ मुह्यतु, २१२ मृष्यतु, २१३ रज्यतु २१४ रुप्यतु, २१५ लुप्यतु, २१६ लुभ्यतु, २१७ विध्यतु, २१८ शप्यतु, २१९ शाम्यतु (देखे सूत्र ६३), २२० शुच्यतु, २२१ शुध्यतु, २२२ शुष्यतु, २२३ श्यतु (दखे सूत्र ६४) २२४ श्राम्यतु, २२५ श्लिष्यतु २२६ स्निह्यतु, २२७ स्विद्यतु, २२८ सिध्यतु, २२९ सीव्यतु (देखें ५६) २३० स्यतु, २३१ हृष्यतु ।

४—लोट् लकारः परस्मैपदम्

(५) स्वादिगणः

२३२ आप्+नु+तु = आप्नोतु (गुण करके)

आप्+नु+ताम् = आप्नुताम् (अपित् होने से गुण नहीं)

आप्+नु+अन्ति = आप्नुवन्ति आने पर (उ का उवङ् तथा इ का उ करके) = आप्नुवन्तु रूप बनता है। आगे आप्नुहि (चूंकि अ से परे नहीं अतः हि का लोप नहीं।) आप्+नु+तम् = आप्नुतम्, आप्नुत, आप्नवानि (आट् पित् माना जाता है अतः गुण करके), आप्नवाव, आप्नवाम ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२३३ क्षि + नु + तु = क्षिणोतु, क्षिणुताम्, क्षिण्वन्तु (यण् करके) क्षि + नु + हि आने पर —

सूत्र १५२ उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात्—(६-४-१०६) जिसके पहले संयुक्त अक्षर न हो ऐसे उकारान्त वाले अङ्ग से हि का लोप हो जाय। अतः क्षिणु ही रह गया। आगे क्षिणुतम्, क्षिणुत। इसके विपरीत आप् धातु में संयोग था अतः हि का लोप नहीं हुआ था। क्षिणु + आनि (गुण करके) = क्षिणवानि, क्षिणवाव, क्षिणवाम (गुण करके)।

२३४ चि + नु + तु = चिनोतु, चिनुताम्, चिन्वन्तु (यण् करके) चिनु (क्षिणु की भाँति), चिनुतम्, चिनुत, चिनवानि, चिनवाव, चिनवाम। इसी प्रकार देखें—

२३५ दुनोतु, २३६ धूनोतु, धूनुताम्, धून्वन्तु, २३७ वृणोतु, वृणुताम्, वृण्वन्तु २३८ शक्नोतु, शक्नुताम्, शक्नुवन्तु, शक्नुहि, शक्नुतम्, शक्नुत, शक्नवानि, शक्नवाव शक्नवाम। २३९ सिनोतु, सिनुताम्, सिन्वन्तु (चि के समान)

२४०	सुनोतु	—	सुनु	—	सुनवानि
	सुनताम्	—	सुनुतम्	—	सुनवाव
	सुन्वन्तु	—	सुनुत	—	सुनवाम

४—लोट् लकारः (परस्मैपदम्)

(६) तुदादिगणः

२४१ इष् + तु = इच्छ् + अ + तु = इच्छतु (देखें लट्) आगे इच्छ + ताम् = इच्छताम्, इच्छन्तु। इच्छ (अ से परे हि का लोप) इच्छतम्, इच्छत। इच्छ + आनि = इच्छानि, इच्छाव, इच्छाम। (सभी रूप पूर्व सूत्रों से बन जाते हैं।)

ध्यान रहे इस गण में विकरण "श" लगता है, वह पित् नहीं है अतः धातुओं को गुण नहीं होता। अन्य बातों में यह भी भ्वादि के समान है। अतः इस गण के रूप भी बड़ी सरलता से बन जाते हैं।

यथा—२४२ उज्झतु, २४३ कृन्ततु, २४४ कृषतु, २४५ किरतु, २४६ क्षियतु २४७ क्षिपतु, २४८ गुफतु, २४९ गुम्फतु, २५० गिरतु, २५१ छुरतु, २५२ नुदतु २५३ तुदतु, २५४ तृपतु, २५५ त्रुटतु, २५६ दिशतु, २५७ निलतु, २५८ पृच्छतु (देखें सूत्र ६६ जिससे प्रच्छ को सम्प्रसारण होता है।) यहाँ श अपित् है जो ङित् के समान माना जाता है इसीलिए सम्प्रसारण हो जाता है। सम्प्रसारण यण् का उल्टा होता है। यण् में ऋ का र्, उ का व् होता है। उसके सम्प्रसारण में र् का ऋ और व् का उ

होता है । आगे पृच्छताम्, पृच्छन्तु, पृच्छ, पृच्छतम्, पृच्छत, पृच्छानि, पृच्छाव, पृच्छाम् । इसी तरह—२५९ भृज्जतु, २६० मज्जतु, २६१ मिलतु, २६२ मिलतु, २६३ मुञ्चतु, २६४ मृडतु, २६५ मृशतु, २६६ रुजतु, २६७ लिखतु, २६८ लिम्पतु, २६९ लुम्पतु, २७० लुभतु, २७१ विन्दतु, २७२ विधतु, २७३ विशतु, २७४ वृश्चतु, २७५ विचतु २७६ सिञ्चतु, २७७ सीदतु, (देखें सूत्र ११) २७८ सृजतु, २७९ स्पृशतु, २८० स्फुटतु २८१ स्फुरतु ।

४—लोट् लकार: (परस्मैपदम्)

(७) रुधादिगण:

२८२ छिद्+तु=छि+न+द्+तु=छिनत्तु (खरिच से द् का त्) छि+न+द्+ताम् आने पर सूत्र २४ के आधार पर न का अ गिर जाता है...तो छि+न्+द्+ताम्=छिन्ताम् (झरोझरि सवर्णे से द् का लोप करके) आगे छिन्दन्तु छि+न+द्+हि=छि+न्+द्+धि=छिन्धि (देखें सूत्र १४७), छिन्तम्, छिन्त, छिनदानि, छिनदाव, छिनदाम ।

२८४ भिद् — भि+न+द्+तु=भिनत्तु, भिन्ताम्, भिन्दन्तु, भिन्धि, भिन्तम्, भिन्त, भिनदानि, भिनदाव, भिनदाम ।

२८५ भुज् — भु+न+ज्+तु=भुनक्तु (ति को तु देखें एरुः) शेष लट् की भाँति । भु+न्+ज्+ताम्=भुंक्ताम्, भुञ्जन्तु, ।

भुंग्धि, भुंक्तम्, भुंक्त, भुनजानि, भुनजाव, भुनजाम ।

इसी तरह २८६ युनक्तु युंक्ताम्, युञ्जन्तु ।

२८७ रुध् — रु+न+ध्+तु=रुणद्धु (देखें सूत्र ३२ जिससे तु के त् को ध् होता है तथा ध् को जश् द् तथा न को णत्व करके) आगे रुन्धाम्, रुन्धन्तु, रुन्धि रुन्धम् रुन्ध, रुणधानि, रुणधाव, रुणधाम ।

२८३ पिष्लृ —पि+न+ष्+तु=पिनष्टु, पिंष्टाम्, पिंषन्तु । इसमें ष् के कारण ष्टुत्व होता है ।

आगे पिण्ढि, पिंष्टम्, पिंष्ट, पिनषाणि, पिनषाव, पिनषाम ।

२८८ हिंसि — हिनस्तु, हिंस्ताम्, हिंसन्तु, हिन्धि, (देखें ९८) हिंस्तम्, हिंस्त, हिनसानि, हिनसाव, हिनसाम ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४–लोट् लकारः [परस्मैपदम्]

(८) तनादिगण

२८९ कृ+उ+तु=करोतु (गुण करके) कुरुताम्, कुर्वन्तु (देखें सूत्र ७५ तथा ७६), कुरु (इसमें सूत्र १५२ से हि का लोप होता है।) आगे कुरुतम्, कुरुत। कृ+उ+आनि=करु+आनि=करवाणि (गुण् तथा अव् करके), करवाव तथा करवाम।

२९० तनु— तन्+उ+तु=तनोतु, तनुताम्, तन्वन्तु, तनु, तनुतम्, तनुत। तनु+आनि=तनो+आनि=तनवानि। तनवाव, तनवाम। किसी नये सूत्र की प्रवृत्ति नहीं है।

४—लोट् लकारः (परस्मैपदम्)

(९) क्रयादिगणः

२९१ अश्+ना+तु=अश्नातु, अश्नीताम् (देखें सूत्र ५९) अश्+ना+अन्तु (श्ना के आ का "**श्नाभ्यस्तयोरातः**" से लोप होता है। देखें सूत्र ५१) अतः अश्+न्+अन्तु=अश्नन्तु रूप बनता है। आगे अश्+ना+हि आने पर—

सूत्र १५३ हलः श्नः शानज्झौ—(३-१-८३) हल् से परे श्ना को शानच् हो यदि उससे परे हि हो। शानच् से केवल आन शेष रहता है। अत. अश्+आन+हि=अशानहि स्थिति बनती है। इसमें अ से परे हि आने से हि का लोप हो जाता है। तब अशान रह आता है। (देखें १४४, आगे अश्नीतम्, अश्नीत, अश्नानि, अश्नाव, अश्नाम।

२९२ क्री+ना+तु = क्रीणातु, क्रीणीताम्, (अश्नीताम् की तरह) क्रीणन्तु क्रीणीहि, (देखे सूत्र ५९) क्रीणीतम्, क्रीणीत, क्रीणानि, क्रीणाव, क्रीणाम।

इसी प्रकार २९३ ग्रह् से —

	गृह्णातु	—	गृहाण	—	गृह्णानि
	गृह्णीताम्	—	गृह्णीतम्	—	गृह्णाव
	गृह्णन्तु	—	गृह्णीत	—	गृह्णाम
२९४ ज्ञा—	जानातु	—	जानीहि	—	जानानि
	जानीताम्	—	जानीतम्	—	जानाव
	जानन्तु	—	जानीत	—	जानाम

इसी आधार पर २९५ दृणातु, २९६ धुनातु, २९७ पुनातु, २९८ प्रीणातु २९९ बध्नातु, बध्नीताम्—बध्नन्तु, बधान, बध्नीतम्, बध्नीत, बध्नानि, बध्नाव, बध्नाम। ३०० मथ्नातु, ३०१ मुष्णातु, ३०२ मृद्नातु, ३०३ मृणातु, ३९४ लुनातु ३०५ वृणातु ३०६ शृणातु।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४—लोट् लकार: [परस्मैपदम्]

(१०) चुरादिगण:

३०७ अंक्+इ+अ+तु=अंकयतु, अंकयताम्, अंकयन्तु, अंकयन्तु, अंकय (यहाँ भी हि का लोप होता है, क्योंकि शप् का अ य में है।) अंकयतम्, अंकयत। अंकयानि अंकयाव, अंकयाम।

इस गण में अपने ही अर्थ को बताने के लिए णिच् आता है। ऐसा इस गण की प्रकृति को देखकर ही किया गया है। इस में लट् में णिच् होता है उसी तरह लोट् में भी होता है। इस में लट् के कार्य के अतिरिक्त अन्तिम इ को उ तथा तस् आदि को ताम् आदि होते हैं। अत: इसके रूप बड़ी ही सरलता से बन जाते हैं। इसके रूप भ्वादिगण के लगभग समान ही होते है इसीलिए सब धातुओं के रूप यहाँ नहीं दिये जाते। इसके दो धातु प्रतिनिधि रूप हैं—चुर् तथा कथ। इनके रूप इस प्रकार हैं।

चुर्			कथ		
चोरयतु —	चोरय —	चोरयानि	कथयतु —	कथय —	कथयानि
चोरयताम् —	चोरयतम् —	चोरयाव	कथयताम् —	कथयतम् —	कथयाव
चोरयन्तु —	चोरयत —	चोरयाम	कथयन्तु —	कथयत —	कथयाम

४—लोट् लकार: (आत्मनेपदम्)

(१) भ्वादिगण:

इसमें जुड़ने वाले प्रत्यय निम्नलिखित है।

त —	थास् —	इड्
आताम् —	आथाम् —	वहि
झ —	ध्वम् —	महिङ्

४२६ अंक्+अ+त आने पर सूत्र ८८ से अंकते पहले बनता है।

सूत्र १५४ आमेत: (३-४-९०) लोट् के एकार को आम् अन्तादेश हो जाय। अत: अंकताम् रूप बना। इसी प्रकार शोभताम्, ईक्षताम्, आदि। द्विवचन में अंक+आताम्=अंक्+इय्+आताम् (आ के स्थान पर इय्=अंक्+इय्+ताम् करके) (लोपो व्योर्वलि से य् के लोप होने पर)=अंकेताम् रूप बना। इसी प्रकार शोभेताम्, ईक्षेताम्। अंक+अ+अन्त+ए, आने पर पररूप होकर अंकन्ते बना, तब एकार को ताम् करके अंकन्ताम् रूप बनता है। इसी प्रकार शोभन्ताम् तथा ईक्षन्ताम् रूप बनते है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंक्+अ+थास् आने पर सूत्र ९१ **"थास: से"** के आधार पर अंकसे बनता है तभी इसमें अगला सूत्र लगता है।

सूत्र १५५ सवाभ्यां वाऽमौ—(३-४-९१) सकार और वकार से परे लोट् के एकार को क्रम से व और अम् आदेश हों। अर्थात् स के परे व तथा व से परे अम् हो जाय। इस आधार पर अंकस्व, सेवस्व शोभस्व आदि रूप बनते हैं।

द्विवचन में अंक्+अ+आथाम् आने पर अंक+इय्+थाम् तथा य् के लोप होने पर अंकेथाम् रूप बनता है। इसी तरह शोभेथाम्, ईक्षेथाम् तथा सेवेथाम् आदि रूप बनते हैं। अंक्+अ+ध्वम्=अंकध्वम्, इसी प्रकार शोभध्वम्, ईक्षध्वम् सेवध्वम् आदि। आगे अंक्+अ+इ=अंके होने पर

सूत्र १५६ **एत ऐ**—(३-४-९३) लोट् के उत्तम पुरुष के एकार को ऐकार हो जाय। अत: अंकै रूप बनता है। इसी प्रकार शोभै, ईक्षै, सेवै आदि रूप बनते हैं।

अंक+अ+वह्+ए=अंक+वहे=अंकवहे आने पर सूत्र ४ के आधार पर अ को दीर्घ करके तथा "एत ऐ" से ऐ करके अंकावहै रूप बनता है। इसी तरह शोभावहै सेवामहै। इसी प्रकार अंक्+अ+मह+ए=अंकमहे से अंकामहै। (जैसे अंकावहै। इसी प्रकार अन्य धातुओं के रूप बनते हैं।

४३५ कम्+इ+अ+त+एत्व=कामयते (देखें लट्) ए को आम् करने पर कामयताम्, कामयेताम्, कामयन्ताम्, कामयस्व, कामयेथाम्, कामयध्वम्, कामयै कामयावहै, काययामहै।

४२७	अयताम्,	अयस्व,	अयै	४७४	भाषताम्,	भाषस्व,	भाषै
	अयेताम्.	अयेथाम्	अयावहै		भाषेताम्	भाषेथाम्	भाषावहै
	अयन्ताम्,	अयध्वम्	अयामहै		भाषन्ताम्	भाषध्वम्	भाषामहै
४९९	वर्तताम्,	वर्तस्व,	वर्तै,	४६३	ददताम्,	ददस्व,	ददै,
	वर्तेताम्	वर्तेथाम्	वर्तावहै,		ददेताम्	ददेथाम्	ददावहै,
	वर्तन्ताम्	वर्तध्वम्	वर्तामहै,		ददन्ताम्	ददध्वम्	ददामहै,

४६८(अ)	नयताम्	—	नयस्व	—	नयै
	नयेताम्	—	नयेथाम्	—	नयावहै
	नयन्ताम्	—	नयध्वम्	—	नयामहै

अन्य धातुओं के रूप भी इसी आधार पर बनेंगे—

४२९ ईषताम्, ४३० ईहताम्, ४३१ ऊहताम्, ४३२ प्यायताम्, ४३३ एजताम् ४३४ कत्थताम्, ४३६ कलताम्, ४३७ कल्पताम्, ४३८ काशताम्, ४३९ कूर्दताम्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४४० कल्पताम्, ४४१ क्रन्दताम्, ४४२ क्रपताम्, ४४३ क्लन्दताम्, ४४४ क्लेशताम्
४४५ क्षमताम्, ४४६ क्षोभताम्, ४४७ खनताम्, ४४८ गर्हताम्, ४४९ गाहताम्
४५० गूहताम्, ४५१ ग्रंथताम्, ४५२ ग्रसताम्, ४५३ घटताम्, ४५४ चेष्टताम्
४५५ जृम्भताम्, ४५६ त्वरताम्, ४५७ डयताम्, ४५८ लभताम्, ४५९ तितिक्षताम्
४६० त्रपताम्, ४६१ त्रायताम्, ४६२ दक्षताम्, ४६४ दीक्षताम्, ४६५ द्रेकताम्
४६६ द्योतताम्, ४६७ धरताम्, ४६८ ध्वंसताम्, ४६९ पवताम्, ४७० प्रथताम्
४७१ प्लवताम्, ४७२ बाधताम्, ४७३ बोधताम्, ४७५ भासताम्, ४७६ भ्राजताम्
४७७ भिक्षताम्, ४७८ भ्रंशताम्, ४७९ मण्डताम्, ४८० मन्दताम्, ४८१ मुश्चताम्
४८२ मुण्डताम्, ४८३ मोदताम्, ४८४ यतताम्, ४८५ याचताम्, ४८६ रजताम्
४८७ रभताम्, ४८८ रमताम्, ४८९ राजताम्, ४९० रोचताम्, ४९१ रेभताम्
४९२ लंघताम्, ४९३ लज्जताम्, ४९४ लम्बताम्, ४९५ लोकताम्, ४९६ लोचताम्
४९७ वंकताम्, ४९८ वन्दताम्, ५०० वर्धताम्, ५०१ वेपताम्, ५०२ वेष्टताम्
५०३ व्यथताम्, ५०४ शंकताम् ५०५ शीयताम् ५०६ शपताम्, ५०७ शिक्षताम्
५०९ श्लाघताम् ५१० श्लोकताम् ५११ स्तम्भताम्, ५१२ स्मयताम् ५१३ सहताम्
५१४ सूदताम् ५१५ सेवताम्, ५१६ स्पन्दताम्, ५१७ स्पर्द्धताम्, ५१८ स्फोटताम्,
५१९ स्यन्दताम्, ५२० स्वजताम्, ५२१ स्वादताम्, ५२२ स्वेदताम् ५२३ स्रंसताम्
५२४ ह्लादताम् ।

४—लोट् लकारः [आत्मनेपदम्]

(२) अदादिगणः

५२५ आस् + त + आम् = आस्ताम् ।

आस् + आताम् = आसाताम् (यहाँ आ के स्थान में इय् नहीं हुआ क्योंकि उसे अ की परता नहीं मिली जो शप्, श्यन् और श में मिलती है ।) आगे आस् + अत + आम् = आसताम् (देखें सूत्र ९७) आस्+थास् = "थासः से" से आस् + से आता है, तब से के एकार को व करके (देखें सूत्र १५५) आस् + स् + व = आस्स्व रूप बनता है । आस् + आथाम् = आसाथाम्, आस् + ध्वम् = आध्वम् । (देखें 'धि च' सूत्र ९८) आगे आसैं, आसावहै, आसामहै (देखें सूत्र ४)

५२६ इङ् — यह सदा अधिपूर्वक आता है । अतः = अधि + इ + ताम् = अधीताम्, अधि + इ + आताम् आने पर सूत्र १७ से इ को इय् करके अधि+इय् + आताम् = अधीयाताम् । अधि + इ + झ = अधि + इय् + अत = अधीयताम् अधि + इ + स्व =

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधीष्व (इण् से परे स् को ष् करके) अधि + इ + आथाम् = अधीयाथाम् (देख सूत्र १७), अधि + इ + ध्वम् = अधीध्वम् । अधि + इ + इ (इड् की) = अधि + इ + आ + इ (आट् का आगम) इसमें अधि से परे इ धातु है तथा अन्तिम इ इट् का अवयव है। है । अतः अधि + इ + आ + ऐ = अधि + ए + ऐ = अधि + अयै = अध्ययै रूप बनता है। अर्थात् अधि + आट् का आगम, ऐकार आदेश, वृद्धि, धातु के इकार को गुण, अय् आदेश तथा उपसर्ग के इकार को यण् कार्य यहाँ होते है।

आगे द्विवचन में अधि + इ + आ + वहै = अधि + ए + आवहै । = अधि + अयावहै = अध्ययावहै, इसी तरह बहुवचन में अध्ययामहै रूप बनते हैं।

५२७ ईड् + ताम् = ईट्टाम्, ईडाताम्, ईडताम् ।

सूत्र १५७ **ईड्जनोर्ध्वे च**—(७-२-७८) ईड्, ईश तथा जन धातुओं से परे वलादि सार्वधातुक से तथा ध्वे को इट् का आगम हो। अतः ईडिष्व, ईडाथाम्, ईडिध्वम्, ईडै ईडावहै, इडामहै ।

५२८ ईर्–ईर्ताम्, ईराताम्, ईरताम्, ईर्ष्व, ईराथाम्, ईर्ध्वम्, ईरै, ईरावहै ईरामहै ।

५२८(अ) चक्ष + ताम् = चष् + ताम् (क् का लोप होने पर) चष्टाम् = ष्टुत्व करके देखें सूत्र १६७, आगे चक्षाताम्, चक्षताम्, चक्ष्व, चक्षाथाम्, चड्ढ्वम् चक्षै चक्षावहै, चक्षामहै ।

५२९ ब्रू — ब्रू + ताम् = ब्रूताम्, ब्रू + आताम् (उ का उवङ् करके) = ब्रुवाताम्, ब्रू + अताम् = ब्रुवताम् (उ का उवङ् करके) ब्रू + स्व = ब्रूष्व, ब्रुवाथाम्, ब्रूध्वम्, ब्रू + ऐ = ब्रो + ऐ (ब्रवै) (गुण तथा अत् करके) ब्रवावहै, ब्रवामहै ।

५३० आ + शास् + ताम् = आशास्ताम्, आशासाताम्, आशासताम्, आशास्स्व, आशासाथाम्, आशाध्वम् (देखें 'धि च' सूत्र ९८) आशासै, आशासावहै, आशासामहै ।

५३१ शीङ्—शी + ताम् = शेताम् (देखें ९९) शी + आताम् = शे + आताम् = शयाताम्, शी + र + झ = शेरताम् (देखें शीङो रुट् सूत्र १००) ध्यान रहे रुट् केवल अत् से पहले होता है। शी + स्व = शेष्व, शी + आथाम् = शयाथाम्, शेध्वम् शी + आ + इ = शे + ए + ऐ = शयै, शी + आ + वहै = शयावहै, शे + आ + महै = शयामहै ।

४—लोट् लकारः (आत्मनेपदम्)

[३] जुहोत्यादिगणः

५३२ दा — दा + दा + ताम् =ददाताम् (ह्रस्वः से अभ्यास को ह्रस्व) द + द् + ताम् = दत्ताम् (**श्नाभ्यस्तयोरातः** से देखें ५१)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ददा + आताम् = **ददाताम्** (पूर्व सूत्रों से) दद् + अत् + आम् = **ददताम्,** (आ + अम् = आम्), दद् + स्व = **दत्स्व, ददाथाम्, दद्ध्वम्** । **ददै, ददावहै, ददामहै** ।

५३३ धा + धा + ताम् = धध्ताम् = धत्ताम् । इसमें अभ्यास का ह्रस्व, धातु के आ का लोप तथा ध का चर्त्व करके धत्ताम् बनता है । ध + ध् + आताम् = दधाताम् (अभ्यास का जश्त्व)

दधताम्, धत्स्व, दधाथाम्, धद्ध्वम् । दधै, दधावहै, दधामहै । इनमें कोई नया सूत्र नहीं लगता । द व ध के परिवर्तन के लिए देखें सूत्र ३२, ३३ ।

५३४ मा + मा + ताम् = ममाताम् (देखें १५४) मिमीताम् (देखें सूत्र १०१ ५९ तथा ५०–५१)

वैसे लट् के रूप में यदि ए के स्थान पर आम् कर दें तो भीं यही मिल जाता है ।

मिमाताम् (इसमें १०१ लगा पर ५९ नहीं क्योंकि जहाँ आताम् का आ है वहाँ वह हल् चाहता है ।)

आगे मिमताम् (झ् का अत् करके तथा आम् करके)

मिमीष्व,	मिमाथाम्,	मिमीध्वम्	] सभी पूर्व सूत्रों से
मिमै,	मिमावहै,	मिमामहै ।	

५३५ हा — मा की तरह सभी प्रक्रिया, पर अन्तर इतना कि इसमें हा के स्थान में झ तथा ज होता है ।

जिहीताम्	—	जिहीष्व	—	जिहै
जिहाताम्	—	जिहाथाम्	—	जिहावहै
जिहताम्	—	जिहीध्वम्	—	जिहामहै

४—लोट् लकार (आत्मनेपदम्)

(४) दिवादिगण:

५३६ क्लिश् + य + ताम् = क्लिश्यताम् (ए को आम् करके देखें १५४)

क्लिश् + य + आताम् = क्लिश्येताम् (आ के स्थान में इय् तथा य् का लोप)

चूंकि यहाँ "य" अकारान्त है, अत: ऐसा होता है । क्लिश्यन्ताम्, क्लिश्यस्व, क्लिश्येथाम्, क्लिश्यध्वम्, क्लिश्यै, क्लिश्यावहै, क्लिश्यामहै ।

५३८ जनी = जा (ज्ञाजनोर्जा से) जा + य + ताम् = जायताम्, जायेताम् जायन्ताम्, जायस्व, जायेथाम्, जायध्वम्, जायै, जायावहै, जायामहै ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५४८	मन् —	मन्यताम्	—	मन्यस्व	—	मन्यै	
		मन्येताम्	—	मन्येथाम्	—	मन्यावहै	
		मन्यन्ताम्	—	मन्यध्वम्	—	मन्यामहै	
५५५	विद् —	विद्यताम्	—	विद्यस्व	—	विद्यै	
		विद्येताम्	—	विद्येथाम्	—	विद्यावहै,	
		विद्यन्ताम्	—	विद्यध्वम्	—	विद्यामहै	

ये सभी पूर्व सूत्रों के आधार पर बने हैं ।

इनमें श्यन् के आने से गुण नहीं होता । और भी देखें ।

५५१	युध्-	युध्यताम्	—	युध्यस्व	—	युध्यै
		युध्येताम्	—	युध्येथाम्	—	युध्यावहै,
		युध्यन्ताम्	—	युध्यध्वम्	—	युध्यामहै
५५८	सृज्-	सृज्यताम्	—	सृज्यस्व	—	सृज्यै
		सृज्येताम्	—	सृज्येथाम्	—	सृज्यावहै
		सृज्यन्ताम्	—	सृज्यध्वम्	—	सृज्यामहै ।

४—लोट् लकार: (आत्मनेपदम्)

(५) स्वादिगण:

५५९ अश् + नु + ताम् = अश्नुताम् ।
अश् + नु + आताम् = अश्नुवाताम्, अश्नुवताम् ।
अश्नुष्व, अश्नुवाथाम्, अश्नुध्वम्, अश्नवै, अश्नवावहै, अश्नवामहै ।

५६० चि + नु + ताम् = चिनुताम्, चि + नु + आताम् = चिन्वाताम् ।
चि + नु + अत् + आम् = चिन्वताम्, चिनुष्व (इण् के परे षत्व)
चिन्वाथाम्, चिनुध्वम्, चिनु + आ + ऐ = चिनो + आ + ए = चिनवै,
चिनवावहै, चिनवामहै ।

५६१ धू + नु + ताम् = धूनुताम्, धून्वाताम्, धून्वताम् धूनुष्व, धून्वाथाम्,
धूनुध्वम्, धूनवै, धूनवावहै, धूनवामहै ।

५६२ षु = सु (धात्वादे: ष: स:) सु + नु + ताम् = सुनुताम्, सु + नु + आताम् =
सुन्वाताम्, सुनु + अत् + आम् = सुन्वताम्, सुनुष्व, सुन्वाथाम्, सुनुध्वम्,
सुनु + आ + ऐ = सुनो + ऐ = सुनवै, सुनवावहै, सुनवामहै । ध्यान रहे उत्तम
पुरुष में जब आट् आता है, तो पित् मानकर धातु को गुण भी होता हैं ।

४—लोट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(६) तुदादिगणः

५६३ जुष् + श + ताम् = जुष् + अ + ताम् = जुषताम्। जुष् + अ + आताम् (आ के स्थान में इय् तथा य् का लोपकर) = जुषेताम्, जुषन्ताम्, जुषस्व, जुषेथाम्, जुषध्वम् जुषै, जुषावहै, जुषामहै (आट् का आगम कर)

५६४ तुद् + अ + ताम् = तुदताम्, तुद्+अ+आताम् = तुदेताम् (आ को इय् करके) तुद् + अ + अन्त् + आम् = तुदन्ताम्, तुदस्व, तुदेथाम्, तुदध्वम्,

तुद् + अ + आ + ऐ = तुदै, तुदावहै, तुदामहै।

५७२	विन्दताम्	—	विन्दस्व	—	विन्दै
	विन्देताम्	—	विन्देथाम्	—	विन्दावहै
	विन्दन्ताम्	—	विन्दध्वम्	—	विन्दामहै
५७३	सिञ्चताम्	—	सिञ्चस्व	—	सिञ्चै
	सिञ्चेताम्	—	सिञ्चेथाम्	—	सिञ्चावहै
	सिञ्चन्ताम्	—	सिञ्चध्वम्	—	सिञ्चामहै

इसी प्रकार ५६५ आद्रियताम्, ५६६ नुदताम्, ५६७ मिलताम्, ५६८ मुञ्चताम् ५६९ म्रियताम् ५७० लजताम्, ५७१ विजताम्, ५७२ विन्दताम्, ५७३ सिञ्चताम् ५७४ शीयताम्।

४—लोट् लकारः (आत्मनेपदम्)

(७) रुधादिगणः

५७५ छिद् — छि + न + द् + ताम् आने पर सूत्र २४ के आधार पर न के अ का लोप हो जाता है। आत्मनेपद के प्रत्यय सभी ङित् के समान होते हैं क्योंकि उनमें कोई भी पित् नहीं है।

अतः छि + न् + द् + ताम् (द् को चर्त्व करके) छिन्त्ताम् (छिन्ताम) छिन्दाताम छि न् द् + अ + आम् = छिन्दताम् छिन्त्स्व, छिन्दाथाम्, छिन्द्ध्वम्।

छि + न + द् + आ + ए = छिनदै (यहाँ उत्तम पुरुष का आट् आता है, वह पित् माना जाता है। अतः न के अ का लोप नहीं होता। अ का लोप ङित् परे कहा गया हैं। छिनदावहै, छिनदामहै। (देखें झरो झरि सवर्णे)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५७६ भिद् — भि + न + द् + ताम् = भिन्त्ताम्, भिन्ताम्, भिन्दाताम् भिन्दताम्, भि + न् + द् + स्व = भिन्त्स्व, भिन्दाथाम्, भिन्द्ध्वम्, भिनदै, भिनदावहै भिनदामहै। (छिदिर् की भाँति)

५७७ भुज् — भु + न + ज् + ताम् = भु + न् + ज् + ताम् (न के अ का लोप करके) = भुंक्ताम् (चोः कुः से ज् को कुत्व होकर) भु + न् + ज् + आताम् = भुञ्जाताम्, भुञ्जताम्, भु न् ज् + स्व, भु + न् + क् + ष्व = भुंक्ष्व (पहले ज् को क् देखें १२६ क् के कारण षत्व तथा न को पर सवर्ण करके) भुञ्जाथाम्, भुंग्ध्वम् भुनजै, भुनजावहै भुनजामहै।

ठीक इसी प्रकार ५७८ युज् से युंक्ताम्, युञ्जाताम् युञ्जताम् आदि।

५७९ रुध् — रु + न + ध् + ताम् (इसमें अनेक सूत्रों की प्रवृत्ति आ जाती है। पहले न का अ गिरता हे, "श्नसोरल्लोपः से", रु + न् + ध् + ताम्, तब ध् के परे त् का ध् होता है (देखें ३२) रु + न् + ध् + धाम्, तब पहले ध का जशत्व झलां जश् झशि से करके रुन्द्धाम् = रुन्द्धाम् आगे रुन्धाताम्, रुन्धताम्, रुन्त्स्व, रुन्धाथाम्, रुन्द्ध्वम (ध का जशत्व करके) रुणधै (चूंकि न का अ नहीं गिरता) रुणधावहै, रुणाधामहै।

(आट्को पित् माना है।)

४—लोट् (आत्मनेपदम्)

(८) तनादिगणः

५८० कृ + उ + ताम् = कुरुताम्, कुरु + आताम् = कुर्वाताम् (देखें अत उत् सार्वधातुके ७६), आगे कुरु + अताम् = कुर्वताम् यहाँ झ् को अत् ९७ के आधार पर हुआ है।

कुरुष्व (इण् से परे स् का ष् करके) कुर्वाथाम्, कुरुध्वम् कृ + उ + आ + ऐ = करु + ऐ = करवै, करवावहै, करवामहै। ध्यान रहे यहाँ पित् होने से अत् उत् नहीं लगा।

इसी प्रकार ५८१ तनु ५८२ मनु के रूप बनते हैं। ये सुविधा के लिए सभी दिये जाते है—

मनुताम् —	मनुष्व —	मनवै
मन्वाताम् —	मन्वाथाम् —	मनवावहै
मन्वताम् —	मनुध्वम् —	मनवामहै
तनुताम् —	तनुष्व —	तनवै
तन्वाताम् —	तन्वाथाम् —	तनवावहै
तन्वताम् —	तनुध्वम् —	तनवामहै

४—लोट् (आत्मनेपदम्)

(९) क्रयादिगण:

५८३ क्री+ना+ताम्=क्रीणीताम् (देखें ५९) क्रीणाताम्, क्रीणताम् क्रीणीष्व, क्रीणाथाम्, क्रीणीध्वम्, क्रीणै, क्रीणावहै, क्रीणामहै।

ध्यान रहे कि **'ई हल्यघो.'** सूत्र ५९ हलादि कित् ङित् परे ही आ को ई करता है इसीलिए यहाँ क्रीणीताम्, क्रीणीष्व, क्रीणीध्वम् में ई हुई, पर आताम् आदि अजादि प्रत्यय परे रहने पर नहीं हुई। उत्तम पुरुष में लट् के पित् होने से नहीं हुई क्योंकि यह कित् ङित् में होती है।

५८६ ग्रह+ना+ताम्=गृह्णीताम्, गृह्णाताम्, गृह्णताम् (देखें ग्रहिज्यावयि सूत्र ६६ तथा ५९) गृह्णीष्व, गृह्णाथाम्, गृह्णीध्वम्, गृह्णै, गृह्णावहै, गृह्णामहै।

५८५ ज्ञा—	जानीताम्	—	जानीष्व	—	जानै
	जानाताम्	—	जानाथाम्	—	जानावहै
	जानताम्	—	जानीध्वम्	—	जानामहै

इसी प्रकार ५८६ धुनीताम्, धुनाताम्, धुनताम्, ५८७ पुनीताम्, पुनाताम्, पुनताम्, ५८८ प्रीणीताम्, प्रीणाताम्, प्रीणताम्, ५८९ लुनीताम्, लुनाताम् लुनताम्, ५९० वृणीताम्, वृणाताम्, वृणताम् आदि।

४—लोट् [आत्मनेपदम्]

(१०) चुरादिगण:

५९१ अर्थ (चूंकि इसमें णिच् सदा रहता है और उसके इ शेष रहने, गुण होने तब शप् होने पर अ आ जाता है, अतः आताम् के आ के स्थान पर इय् भी होता है।

अर्थ+इ+त+आय् = अर्थि+आताम् = अर्थे+अ+ताम् =अर्थयताम्, आगे अर्थय्+अ+आताम् =अर्थय+इय् + ताम् = अर्थयेताम्। अर्थयन्ताम अर्थयस्व, अर्थयेथाम्, अर्थयध्वम्, अर्थयै, अर्थयावहै, अर्थयामहै।

इसी प्रकार	दीपयताम्,	दीपयस्व,	दीपयै,
	दीपयेताम्,	दीपयेथाम्,	दीपयावहै
	दीपयन्ताम्,	दीपयध्वम्,	दीपयामहै
और भी—	चोरयताम्,	चोरयस्व,	चोरयै
	चोरयेताम्,	चोरयेथाम्,	चोरयावहै
	चोरयन्ताम्,	चोरयध्वम्,	चोरयामहै

इसी प्रकार ५९४ मादयताम, ५९५ शातयताम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिच्छेद ७

५–विधिलिङ् (परस्मैपदम्)

[१] भ्वादिगणः

१ अक्+अ+ति आने पर

सूत्र १५८ **यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च**–(३-४-१०३) लिङ् के परस्मैपद प्रत्ययों को यासुट् का आगम हो और उसे ङित् माना जाय। यासुट् से उट् गिर जाता है, केवल यास् रह जाता है। तब अक्+अ+यास्+त् स्थिति होती है। इस स्थिति में अगला सूत्र लगता है।

सूत्र १५९ **लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य**—(७-२-७९) सार्वधातुक लिङ् के अनन्त्य (जो अन्त में न हो) स का लोप हो जाय। इसके प्राप्त होने पर अगला सूत्र इसे कुछ स्थलों में रोक देता है।

सूत्र १६० **अतो येयः**—(७-२-८०) अदन्त अङ्ग से परे सार्वधातुक के अवयव **'यास्'** के स्थान में इय् हो जाय। अतः अक+इय्+त्=अकेत् (इय् के य् का **'लोपो व्योर्वलि'** से लोप हो जाता है। (देखें सूत्र ९०) यहाँ एक प्रश्न उठता है कि इसे इतना घुमा फिरा कर क्यों बनाया? इसका समाधान यह है कि इन सूत्रों की प्रवृत्ति अन्य स्थलों पर भी होती है। उन सभी का ध्यान रख कर ये बनाये गये हैं। उदाहरण के लिए 'यास्' आशीर्लिङ से नहीं हटेगा क्योंकि वहाँ उसे शप् का 'अ' न मिलेगा। वहाँ भूयात्, देयात् रूप बनते हैं। यहाँ यदि वलादि न कहते तो उत्तम पुरुष में भवेयम् अकेयम् आदि न बनते। इसके अतिरिक्त इस लकार के ङित् होने से **'तस्थस्थमिपां'** भी लगेगा।

अतः अक्+अ+यास्+ताम् (तस् के स्थान पर ताम करके)=अक+यास्+ताम्=अकेताम् (देखें १०७)

आगे अक्+अ+यास्+झि=अक+इय्+झि आने पर

सूत्र १६१ **झेर्जुस्**—(३-४-१०८) लिङ् के झि के स्थान में जुस् हो जाय। (जुस् से ज् गिर जाता है, उस् रह जाता है।) अतः अकेयुः, भवेयुः, पिबेयुः आदि रूप बनते हैं। अक्+अ+यास्+सिप्=अक+इय्+स्=अकेयस्=अकेः, (य् के लोप होने पर तथा स् का रुत्व विसर्ग करके) आगे अकेतम्, अकेत, अकेयम्, अकेव, अकेम। ध्यान रहे ङित् लकारों में उत्तम पुरुष का स् गिर जाता है।)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सार्वधातुक लकारों में एक बात का और ध्यान रखना हैं कि कहीं भी आदेश होने वाली धातुओं के मूल में प्रत्यय नहीं लगते । जैसे गच्छेत् होता है गमेत् नहीं । इसी तरह पिबेत्, जिघ्रेत्, यच्छेत्, पश्येत् आदि । श्रु को छोड़कर शेष सभी भ्वादि गणी धातुओं के रूप इसी आधार पर बन जाते हैं । श्रु के रूप इस प्रकार है—

श्रु+नु+यास्+त=शृणुयात्, शृणुयाताम्, श्रु+नु+या+ताम् (यहाँ यास् अपित् है अतः नु को गुण नहीं हुआ) शृणुयुः, शृणुयाः, शृणुयातम्, शृणुयात, शृणुयाम्, शृणुयाव, शृणुयाम ।

इसी तरह २ अटेत्, ३ अञ्चेत्, ४ अतेत्, ५ अर्घेत्, ६ अर्चेत्, ७ अर्जेत्, ८ अर्देत्, ९ अर्हेत्, १० अलेत्, ११ अवेत्, १२ ईर्ष्येत् १३ ऋच्छेत्, १४ एजेत् १५ कठेत्, १६ कांक्षेत्, १७ कीलेत्, १८ कुञ्चेत्, १९ कूजेत्, २० कर्षेत्, २१ क्रन्देत् २२ क्रामेत्, २३ क्वणेत्, २४ क्रीडेत्, २५ क्रोशेत्, २६ क्षरेत्, २७ क्षयेत्, २८ क्षायेत् २९ खञ्जेत्, ३० खनेत्, ३१ खादेत्, ३२ खेलेत्, ३३ गदेत्, ३४ गच्छेत्, ३५ गुञ्जेत् ३६ गोपायेत्, ३७ गायेत्, ३८ गर्जेत्, ३९ गर्वेत्, ४० ग्लायेत्, ४१ घसेत्, ४२ जिघ्रेत् ४३ चरेत्, ४४ चर्वेत्, ४५ चलेत्, ४६ चेतेत्, ४७ चुम्बेत्, ४८ चूषेत्, ४९ जपेत् ५० जयेत्, ५१ जीवेत्, ५२ जल्पेत्, ५३ ज्वरेत्, ५४ ज्वलेत्, ५५ तपेत्, ५६ तूषेत् ५७ तरेत्, ५८ तर्जेत्, ५९ त्यजेत्, ६० दलेत्, ६१ दंशेत्, ६२ दहेत्, ६३ यच्छेत् ६४ द्रवेत्, ६५ पश्येत्, ६६ धूपायेत्, ६७ धरेत्, ६८ धर्षेत्, ६९ धमेत्, ७० ध्यायेत् ७१ नटेत्, ७२ नदेत्, ७३ नमेत्, ७४ नन्देत्, ७५ नयेत्, ७६ नर्देत्, ७७ पचेत् ७८ पठेत्, ७९ पतेत्, ८० पिबेत्, ८१ पुन्थेत्, ८२ पूषेत्, ८३ फलेत् ८४ फुल्लेत् ८५ बोधेत्, ८६ बृंहेत्, ८७ भजेत्, ८८ भणेत्, ८९ भवेत्, ९० भूषेत्, ९१ भरेत् ९२ भ्रमेत्, ९३ मण्डेत्, ९४ मथेत्, ९५ मन्थेत्, ९६ महेत्, ९७ मीलेत्, ९८ मूर्च्छेत् ९९ मर्षेत्, १०० मनेत्, १०१ यजेत्, १०२ यच्छेत्, १०३ रक्षेत् १०४ रटेत्, १०५ रणेत्, १०६ रुण्ठेत्, १०७ रोषेत्, १०८ रोहेत्, १०९ लजेत्, ११० लपेत् १११ लषेत्, ११२ लसेत्, ११३ लुञ्चेत्, ११४ लोठेत्, ११५ लुण्ठेत्, ११६ वजेत् ११७ वदेत्, ११८ वनेत् ११९ वपेत्, १२० वमेत्, १२१ वसेत्, १२२ वहेत् १२३ वाञ्छेत्, १२४ वयेत्, १२५ वेलेत्, १२६ वेल्लेत्, १२७ व्रजेत्, १२८ शंसेत् १२९ शपेत्, १३० शमेत्, १३१ शोचेत्, १३२ शूलेत्, १३३ श्रयेत्, १३५ सजेत् १३६ सेधेत्, १३७ तिष्ठेत्, १३८ स्रवेत्, १३९ धावेत्, १४० सर्पेत्, १४१ स्खलेत् १४२ स्तनेत्, १४३ स्मरेत्, १४४ स्वनेत्, १४५ हसेत्, १४६ हरेत्, १४७ हर्षेत १४८ ह्लसेत्, १४९ ह्वयेत् ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५–विधिलिङ् [परस्मैपदम्]

(२) अदादिगण:

१५० अद्+यास्+त् (पूर्व सूत्रों से **इसमें शप् का लोप रहता है** ।) अद्+या+त् (**स् का १५९ से लोप होने पर**) =अद्यात्, अद्+या+ताम्=अद्याताम्, अद्+यास्+झि=आने पर यास् के स् का लोप होने पर अद्या+झि । झि के जुस् होने पर अद्या+उस् स्थिति बनती है । इसमें सूत्र १७० से आ का उ पर रूप होकर अद्यु: रूप बनता है ।

अद्+यास्+सिप्=अद्या+स्=अद्या:, अद्+यास्+तम्, यास् के स् का लोप होने पर अद्यातम्, अद्यात, अद्+या+अम्=अद्याम्, अद्याव, अद्याम । ठीक इसी तरह १७० विद्, विद्यात्, विद्याताम्, विद्यु: तथा १७६ हन् के रूप बनते है –

हन्यात्	—	हन्या:	--	हन्याम्
हन्याताम्	—	हन्यातम्	--	हन्याव
हन्यु:	—	हन्यात	—	हन्याम

१५१ अस्+यास्+ति आने पर सूत्र २४ से अस् के अ का लोप होने पर स्यात् रूप वनता है । आगे स्याताम् , स्यु:, स्या:, स्याताम् – स्यात, स्याम् , स्याव, स्याम ।

१५२ इण् — इ+यास्+त्=इयात् , इयाताम्, इयु:, इया:, इयातम् इयात, इयाम् , इयाव, इयाम ।

१५६ दुह्+यास्+त् = दुह्यात्, दुह्याताम् , दुह्यु: दुह्या:, दुह्यातम् , दुह्यात दुह्याम् , दुह्याव, दुह्याम ।

१६० ब्रू —	ब्रूयात्	—	ब्रूया:	—	ब्रूयाम्
	ब्रूयाताम्	—	ब्रूयातम्	—	ब्रूयाव
	ब्रूयु:	—	ब्रूयात	—	ब्रूयाम

१५९ पा+यास्+त्=	पायात्	—	पाया:	—	पायाम्
	पायाताम्	—	पायातम्	—	पायाव
	पायु:	—	पायात	—	पायाम

इसी प्रकार १६१ भायात् , १६४ यायात्, १६८ लायात् , १७३ स्नायात् ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१५८ नु+यास्+त्–नुयात्	—	नुयाः	—	नुयाम्		यहाँ उ की वृद्धि
नुयाताम्	—	नुयातम्	—	नुयाव		यास् के ङित् होने
नुयुः	—	नुयात	—	नुयाम		से नहीं होती ।

इसी तरह १६५ युयात्, १६६ रुयात्, १५३ कुयात् १७४ स्तुयात् १५४ चकास्+यास्+त्=चकास्यात् (यास् के स् का लोप होकर) आगे चकास्याताम्, चकास्युः, चकास्याः, चकास्यातम्, चकास्यात, चकास्याम्, चकास्याव, चकास्याम ।

१५५ जागृ+यास्+त्=	जागृयात्	—	जागृयाः	—	जागृयाम्
	जागृयाताम्	—	जागृयातम्	—	जागृयाव
	जागृयुः	—	जागृयात	—	जागृयाम
१५७ द्विष्+यास्+त्=	द्विष्यात्	—	द्विष्याः	—	द्विष्याम्
	द्विष्याताम्	—	द्विष्यातम्	—	द्विष्याव
	द्विष्युः	—	द्विष्यात	—	द्विष्याम
१६३ मृज् —	मृज्यात्	—	मृज्याः	—	मृज्याम्
	मृज्याताम्	—	मृज्यातम्	—	मृज्याव
	मृज्युः	—	मृज्यात	—	मृज्याम
१६७ रुद् —	रुद्यात्	—	रुद्याः	—	रुद्याम्
	रुद्याताम्	—	रुद्यातम्	—	रुद्याव
	रुद्युः	—	रुद्यात	—	रुद्याम

ठीक इसी आधार पर श्वस्+यास्+त्=श्वस्यात्, कहीं-कहीं इसका रूप भ्वादि-गण की भाँति भी चलता है, जैसे न विश्वसेत् ।

१७५ स्वप्यात् १६९ वच्+यास्+त् आने पर वच्यात्, वच्याताम्, वच्युः वच्याः वच्यातम् वच्यात, वच्याम्, वच्याव, वच्याम ।

सूत्र १६२ **वचिस्वपियजादीनां किति**—(६-१-१५) वच्, स्वप् और यज् धातुओं को कित् प्रत्यय परे रहते सम्प्रसारण हो जाय । इससे आशीर्लिङ में वच् का उच्यात् बन जाता है ।

१७१ शास्+यास्+त् आने पर सूत्र ४२ की प्रवृत्ति होती है जिससे शास् को शिष् हो जाता है ।

अतः	शिष्यात्	—	शिष्याः	—	शिष्याम्
	शिष्याताम्	—	शिष्यातम्	—	शिष्याव
	शिष्युः	—	शिष्यात	—	शिष्याम

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५—विधिलिङ् (परस्मैपदम्)

(३) जुहोत्यादिगण:

१७७ दा+दा+यास्+त् (चूंकि इस गण में द्वित्व होता है।) दादायात् आने पर अभ्यास का ह्रस्व धातु के आकार का लोप तथा स् का लोप करके दद्यात् बना, अत: दद्यात् रूप बनता है (देखें सूत्र ५०, ५१, तथा १५९)। आगे दद्याताम् दद्यु:, दद्या:, दद्यातम्, दद्यात, दद्याम्, दद्याव, दद्याम।

१७८ धा+धा+यास्+त्=धधायात्, धध्यात् आने पर 'झलांजश्झशि' से दध्यात् रूप बनता हैं। आगे दध्याताम्, दध्यु:, दध्या:, दध्यातम्, दध्यात, दध्याम् दध्याव, दध्याम।

१७९ पॄ+पॄ+यात् आने पर पिपूर्यात् (देखें सूत्र ५४, ५५, ५६) आगे पिपूर्याताम् पिपूर्यु: पिपूर्या:, पिपूर्यातम्, पिपूर्यात, पिपूर्याम्, पिपूर्यात्र, पिपूर्याम।

१८० भी+भी+यात्=भिभीयात् (सूत्र ५०), बिभीयात् (देखें ५२) बिभियात् (देखें सूत्र ५७), बिभियाताम्, बिभियु:, बिभिया:, बिभियातम्. बिभियात बिभियाम्, बिभियाव, बिभियाम।

१८१ भृ+भृ+यात्=बिभृयात्। आगे बिभृयाताम्, बिभृयु:, बिभृया:, बिभृयातम् बिभृयात, बिभृयाम्, बिभृयाव, बिभृयाम!

१८२ हा+हा+यात्=हहायात्, जहायात् (देखें लट्)=जह्यात् (देखें ५१), आगे जह्याताम् जह्यु:, जह्या:, जह्यातम्, जह्यात, जह्याम्, जह्याव, जह्याम।

१८३ हु+हु+यात्=जुहुयात्, आगे जुहुयाताम्, जुहुयु: जुहुया:, जुहुयातम् जुहुयात, जुहुयाम्, जुहुयाव, जुहुयाम।

१८४ ह्री+ह्री+यात्=जिह्रीयात्, जिह्रीयाताम्, जिह्रीयु:, जिह्रीया:, जिह्रीयातम्, जिह्रीयात, जिह्रीयाम्, जिह्रीयाव, जिह्रीयाम! सभी रूप पूर्व सूत्रों के आधार पर बन जाते है।

५—विधिलिङ् (परस्मैपदम्)

(४) दिवादिगण:

१८५ अस्+य+यास्+त् आने पर चूकि य अकारान्त है अत: यास् के स्थान में अतोयेय: से इय् होकर तथा लोपोव्योर्वलि से य् का लोप करके अस्+य+इ+त्= अस्येत् बनता है। आगे अस्येताम्, अस्येयु: (देखें झेर्जुस् तथा उस्यपदान्तात्)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अस् + य + इय् + स् = अस्येः, अस्येतम्, अस्येत । आगे अस् + य + इय् + अम् = अस्येयम्, अस्येव, अस्येम ।

२२३ श्येत्, श्येताम्, श्येयुः, श्येः, श्येतम्, श्येत, श्येयम्, श्येव, श्येम । (देखें ओतः श्यनि) इसी आधार पर दिवादिगण की सभी धातुओं के रूप बनेंगे । यथा—

१८६ कुप्येत्, १८७ क्रुध्येत्, १८८ क्लिद्येत्, १८९ क्षाम्येत्, १९० क्षिप्येत्, १९१ क्षुध्येत्, १९२ क्षुभ्येत्, १९३ खिद्येत् १९४ नश्येत्, १९५ ताम्येत्, १९६ तुष्येत्, १९७ तृष्येत्, १९८ त्रस्येत्, १६९ दीव्येत्, २०० दुष्येत्, २०१ दृप्येत्, २०२ द्येत्, २०३ द्रुह्येत्, २०४ नृत्येत्, २०५ पुष्येत्, २०६ पुष्प्येत्, २०७ भ्रश्येत्, २०८ भ्राम्येत्, २०९ भ्रश्येत्, २१० माद्येत्, २११ मुह्येत्, २१२ मृष्येत्, २१३ रज्येत्, २१४ रुप्येत्, २१५ लुप्येत्, २१६ लुभ्येत्, २१७ विध्येत्, २१८ शप्येत्, २१९ शाम्येत्, २२० शुच्येत्, २२१ शुध्येत्, २२२ शुष्येत् २२४ श्राम्येत्, २२५ श्लिष्येत्, २२६ स्निह्येत्, २२७ स्विद्येत् २२८ सिध्येत्, २२९ सीव्येत्, २३० स्येत्, २३१ हृष्येत् रूप बनते हैं ।

५—विधिलिङ् [परस्मैपदम्]

(५) स्वादिगणः

२३२ आप् + नु + यात् = आप्नुयात्, आप्नुयाताम्, आप्नुयुः । आप्नुयाः, आप्नुयातम्, आप्नुयात, आप्नुयाम्, आप्नुयाव, आप्नुयाम ।

२३३ क्षि—क्षिणुयात्, २३४ चिनुयात्, २३५ दुनुयात्, २३६ धूनुयात्, २३७ वृणुयात्, २३८ शक्नुयात्, २३६ सिनुयात्, २४० सुनुयात् । २३८ के पूरे रूप दिये जाते हैं क्योंकि इसका व्यवहार बहुत होता है ।

शक्नुयात्	--	शक्नुयाः	--	शक्नुयाम्
शक्नुयाताम्	—	शक्नुयातम्	--	शक्नुयाव
शक्नुयुः	--	शक्नुयात	--	शक्नुयाम

५–विधिलिङ् [परस्मैपदम्]

(६) तुदादिगणः

२४१ इष् + अ + यास् + त् = इच्छ् + अ + इय् + त् (देखें लट्) = इच्छेत्, आगे इच्छेताम्, इच्छेयुः, इच्छेः, इच्छेतम्, इच्छेत, इच्छेयम् (इसमें अम् होने के कारण य् का लोप नहीं होता), इच्छेव, इच्छेम । इसी प्रकार २५८ प्रच्छ (प्रच्छ से पृच्छ संप्रसारण से होता है । देखें सूत्र ६६) अति आवश्यक होने से इसके पूरे रूप दिये जाते हैं —

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृच्छेत्	—	पृच्छेः	—	पृच्छेयम्
पृच्छेताम्	—	पृच्छेतम्	—	पृच्छेव
पृच्छेयुः	—	पृच्छेत	—	पृच्छेम

तुदादिगण की सभी धातुओं के रूप इसी भाँति बन जाते है । ध्यान रहे इसमें गुण नहीं होता क्योंकि शप् के स्थान में श होता है जो इसे अकारान्त बना देता है । इसी आधार पर इसमें "**अतो येयः**" लग जाता है ।

२४२ उज्झेत्, २४३ कृन्तेत्, २४४ कृषेत्, २४५ किरेत्, २४६ क्षियेत्, २४७ क्षिपेत् २४८ गुफेत्, २४९ गुम्फेत्, २५० गिरेत्, २५१ छुरेत्, २५२ नुदेत्, २५३ तुदेत्, २५४ तृपेत् २५५ त्रुटेत्, २५६ दिशेत्, २५७ निलेत्, २५९ भृज्जेत्, २६० मज्जेत्, २६१ मिलेत् २६२ मिलेत्, २६३ मुञ्चेत्, २६४ मृडेत्, २६५ मृशेत्, २६६ रुजेत्, २६७ लिखेत् २६८ लिम्पेत्, २६९ लुम्पेत्, २७० लुभेत्, २७१ विन्देत्, २७२ विधेत्, २७३ विशेत् २७४ वृश्चेत्, २७५ विचेत्, २७६ सिञ्चेत्, २७७ सीदेत्, २७८ सृजेत्, २७९ स्पृशेत् २८० स्फुटेत्, २८१ स्फुरेत् ।

५–विधिलिङ् (परस्मैपदम्)

(७) रुधादिगणः

२८२ छिद् — छि+न+द्+यात् = छिन्द्यात्, छिन्द्याताम्, छिन्द्युः, (देखें सूत्र २४ तथा सूत्र १७०), छिन्द्याः, छिन्द्यातम्, छिन्द्यात, छिन्द्याम्, छिन्द्याव छिन्द्याम । (सभी पूर्व सूत्रों से)

२८३ पिस् — पि+न+स्+यात् = पिंस्यात्, (न के अ का लोप होने पर देखें सूत्र २४) आगे पिंस्याताम्, पिंस्युः ।

इसी प्रकार २८८ हिसि — हि+न्+स्+यात् = हिंस्यात्, हिंस्याताम् हिंस्युः । यहाँ '**इदितो नुम्**' से नुम् आता है पर '**श्नान्न लोपः**' से वह गिर जाता है ।

२८४ भिदिर् — भि+न्+द्+यात् = भिंद्यात्, भिंद्याताम्, भिंद्युः । भिंद्याः, भिंद्यातम्, भिंद्यात, भिंद्याम्, भिंद्याव, भिंद्याम ।

२८५ भुज् — भु+न्+ज्+यात् = भुञ्ज्यात्, भुञ्ज्याताम्, भुञ्ज्युः । यहाँ ज् के कारण न का ञ् हुआ—सामान्य सन्धि कार्य ।

२८६ युज् — भुज् के समान युञ्ज्यात्, युञ्ज्याताम्, युञ्ज्युः, युञ्ज्याः युञ्ज्यातम्, युञ्ज्यात, युञ्ज्याम्, युञ्ज्याव, युञ्ज्याम ।

२८७ रुधिर् — रु+न्+ध्+यात् = रुन्ध्यात्, रुन्ध्याताम्, रुन्ध्युः रुन्ध्याः रुन्ध्यातम्, रुन्ध्यात, रुन्ध्याम्, रुन्ध्याव, रुन्ध्याम आदि रूप बनते हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५–विधिलिङ् [परस्मैपदम्]

(८) तनादिगण:

२८९ कृ+उ+यात् आने पर लट् के समान **'अत उत् सार्वधातुके'** से कृ से कुर् हो जाता है। (देखें सूत्र ७६) तब—कुर्+उ+यात् स्थिति बनती है।

सूत्र १६३ ये च (६-४-१०९) कृ से परे 'उ' का लोप हो यदि उससे परे यकारादि प्रत्यय हो। अतः कुर्यात् रूप बनता है। आगे—

कुर्यात्	—	कुर्याः	—	कुर्याम्
कुर्याताम्	—	कुर्यातम्	—	कुर्याव
कुर्युः	—	कुर्यात	—	कुर्याम

इसी प्रकार २९० तन्+उ+यात्=तनुयात् (इसमें सूत्र १६३ की प्रवृत्ति नहीं है। चूंकि यह केवल कृ के लिए है। अत: इसके निम्नलिखित रूप बनते है।

तनुयात्	—	तनुयाः	—	तनुयाम
तनुयाताम्	—	तनुयातम्	—	तनुयाव
तनुयुः	—	तनुयात	—	तनुयाम

५—विधिलिङ् (परस्मैपदम्)

(९) क्र्यादिगण:

२९१ अश्+ना+यात् आने पर यासुट् के ङित् होने से "ई हल्यघोः" लगता है (देखें सूत्र ५९) तब अश्नीयात्, रूप बनता है। आगे अश्नीयाताम्, अश्नीयुः, अश्नीयाः अश्नीयातम्, अश्नीयात। अश्नीयाम्, अश्नीयाव, अश्नीयाम।

२९२ क्री — क्रीणीयात्, क्रीणीयाताम्, क्रीणीयुः।

२९३ ग्रह — गृह्णीयात्, गृह्णीयाताम्, गृह्णीयुः।

२९४ ज्ञा — जानीयात्, जानीयाताम्, जानीयुः, जानीयाः, जानीयातम्, जानीयात, जानीयाम्, जानीयाव, जानीयाम।

२९५ दृणीयात्, २९६ धुनीयात्, २९७ पुनीयात्, २९८ प्रीणीयात्, २९९ बध्नीयात्, ३०० मथ्नीयात्, ३०१ मुष्णीयात्, ३०२ मृद्नीयात्, ३०३ मृणीयात्, ३०४ लुनीयात्, ३०५ वृणीयात्, ३०६ शृणीयात्। (देखें सूत्र ८३ जिसमें ॠकारान्त धातु भी आ जाते हैं जैसे मॄ, वॄ, शॄ,। इनको शित् पर रहते ह्रस्व हो जाता है।)

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५—विधिलिङ् [परस्मैपदम्]

(१०) चुरादिगणः

३०७ अंक् + णिच् + त् = अंकि + अ + त् आने पर = अंकय् + अ + यास् + त् = अंकय + इय् + त् = अंकयेत्। आगे अंकयेताम्, अंकयेयुः, अंकयेः, अंकयेतम्, अंकयेत अंकयेयम्, अंकयेव, अंकयेम। इसी प्रकार

३०८	अघयेत्	—	अघयेः	—	अघयेयम्
	अघयेताम्	—	अघयेतम्	—	अघयेव
	अघयेयुः	—	अघयेत	—	अघयेम
३०९	अर्चयेत्	—	अर्चयेः	—	अर्चयेयम्
	अर्चयेताम्	—	अर्चयेतम्	—	अर्चयेव
	अर्चयेयुः	—	अर्चयेत	—	अर्चयेम

इसी आधार पर सभी चुरादिगणी धातुओं के रूप बन जायेंगे।

५—विधिलिङ् (आत्मनेपदम्)

(१) भ्वादिगणः

४२६ अंक् + अ + त (ध्यान रहे इसका त हलन्त नहीं है)

सूत्र १६४ **लिङः सीयुट्**—(३-४-१०२) लिङ् के स्थान में आदेश हुए आत्मनेपद प्रत्ययों को सीयुट् का आगम हो। सीयुट् से उट् गिर जाता है केवल सीय् रह जाता हे। यह टित् होने के कारण त से पूर्व आता है। अतः अंक + सीय् + त् आने पर १५९ से स् गिर जाता है। तब अंक + ईय् + त आने पर ईय् के य् का **'लोपो व्योर्वलि** से लोप हो जाता है। अन्ततः **अंकेत** रूप बनता है। इसीं आधार पर एधेत, शोभेत रूप बनते हैं। द्विवचन में अंक + सीय + आताम् आने पर स् का लोप हो जाता है पर य् का नहीं क्योंकि य् का लोप वलादि प्रत्यय परे रहने पर होता है। यहां आताम् का आ है। अतः अंकेयाताम् रूप बनता है। मूल बात यह है कि व्यवहार में यही चलता है तो यही बनाना है। बहुवचन में अंक् + अ + सीय् + झ आने पर पूर्व सूत्रों से अंके + झ स्थिति बन जाती है।

सूत्र १६५ **झस्य रन्**—(३-४-१०५) लिङ् के झ के स्थान में रन् हो जाय। अर्थात् अंकेरन्, शोभेरन्, सेवेरन् आदि रूप बनते हैं।

अंक् + अ + सीय् + थास् = अंकेथाः, इसी प्रकार शोभेथाः, सेवेथाः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंक् + अ + सीय् + आथाम् = अंकेयाथाम्, इसी तरह शोभेयाथाम्, सेवेयाथाम्।
अंक् + अ + सीय् + ध्वम् = अंकेध्वम्, इसी तरह शोभेध्वम्, सेवेध्वम्।
अंक् + अ + सीय् + इ = अकेय् + इ आने पर अगले सूत्र की प्रवृत्ति हो जाती हैं।

सूत्र १६६ इटोऽत्—(३-४-१०६) लिङ् के इट् के स्थान में 'अत्' हो जाय। अतः अंकेय् + अ = अंकेय इसी प्रकार शोभेय, सेवेय।

अंक् + अ + सीय् + वहि = अंकेवहि, (शोभेवहि, सेवेवहि)

अंक् + अ + सीय् + महि = अंकेमहि, (शोभेमहि, सेवेमहि)

इसको और भी स्पष्टता के लिए कुछ बहुत आवश्यक धातुओं के रूप पूरे-पूरे यहाँ दिये जाते हैं—

४२८ ईक्ष्			४३० ईह्		
ईक्षेत	ईक्षेथाः	ईक्षेय	ईहेत	ईहेथाः	ईहेय
ईक्षेयाताम्	ईक्षेयाथाम्	ईक्षेवहि	ईहेयाताम्	ईहेयाथाम्	ईहेवहि
ईक्षेरन्	ईक्षेध्वम्	ईक्षेमहि	ईहेरन्	ईहेध्वम्	ईहेमहि

४७४ भाष्			४३५ कम्		
भाषेत	भाषेथाः	भाषेय	कामयेत	कामयेथाः	कामयेय
भाषेयाताम्	भाषेयाथाम्	भाषेवहि	कामयेयाताम्	कामयेयाथाम्	कामयेवहि
भाषेरन्	भाषेध्वम्	भाषेमहि	कामयेरन्	कामयेध्वम्	कामयेमहि

४८५ याच्			४५८ लभ्		
याचेत	याचेथाः	याचेय	लभेत	लभेथाः	लभेय
याचेयाताम्	याचेयाथाम्	याचेवहि	लभेयाताम्	लभेयाथाम्	लभेवहि
याचेरन्	याचेध्वम्	याचेमहि	लभेरन्	लभेध्वम्	लभेमहि

इसी आधार पर सभी भ्वादिगणी आत्मनेपदी धातुओं के रूप बनते हैं।

(५) विधिलिङ् (आत्मनेपदम्)

(२) अदादिगणः

५२५ आस् + सीय् + त (यहाँ शप् का लुक् होता है।)

चूंकि यहाँ दो स् बीच में आ जाते है तो यह शंका होती है कि किस स् का लोप हो। इसका निर्णय अगला सूत्र करता है।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूत्र १६७ **स्कोः संयोगाद्योरन्ते च**—(८-२-२९) पदान्त में और झल् परे रहते जो संयोग उसके आदि सकार और ककार का लोप हो।

इस सूत्र से आस्+सीय+त् में से आस् के स् का लोप होने पर तथा सीय् के य् का '**लोपो व्योर्वलि**' से लोप होने पर आसीत रूप बन जाता है। आगे आस्+सीय्+आताम् आने पर आस् के स् का लोप हो जाता है पर सीय् के य् का नहीं। अतः आसीयाताम् रूप बनता है। आस्+सीय्+झ=आसीरन् (देखें झस्यरन् सूत्र १६५) आस्+सीय्+थास्=आसीथाः, आसीयाथाम्, आसीध्वम्, आसीय, आसीवहि, आसीमहि।

५२६ इङ् (ध्यान रहे यह सदा अधि पूर्वक आता है)

अधि+इ+सीय्+त में से स् तथा य् का लोप हो जाता है। तब अधि+इ+ई+त स्थिति बनती है। ऐसी स्थिति में धातु की इ को इय् हो जाता है (देखें अचिश्नुधातुभ्रुवां सूत्र १७)। अधि+इय्+ईत=अधीयीत। (उपसर्ग की इ से इय् का सवर्ण दीर्घ होकर) यह केवल मानसिक व्यांयाम लगता है पर लोक व्यवहार में अधीयीत बोला जाता रहा। अतः उसे ही साधना है। आगे अधि+इ+सीय्+आताम् आने पर सीय् के स् का लोप होता है पर य् का नहीं चूंकि उसे आगे वलादि प्रत्यय नहीं मिलता। तब अधीय्+ईयाताम्=अधीयीयाताम्। बहुवचन में अधि+इ+सीय्+झ=अधि+इय्+ईय्+रन् (झ का रन् होकर) (शेष सभी कार्य पूर्ववत्)=अधीयीरन्। रूप बनता है।

मध्यम पुरुष में—अधीयीथाः, अधीयीयाथाम्, अधीयीध्वम्।

उत्तम पुरुष में—अधीयीय, अधीयीवहि, अधीयीमहि।

५२७ ईड्— ईड्+सीय्+त=ईडीत (स् तथा य् का लोप करके)

ईडीयाताम् ईडीरन्, ईडीथाः, ईडीयाथाम्, ईडीध्वम्, ईडीय, ईडीवहि, इडीमहि।

इसी प्रकार ५२८ ईर् (इरीत, ईरीयाताम्, ईरीरन्)।

(५२८अ) चक्ष्+सीय्+त=चक्ष्+ई+त=चक्षीत।
चक्ष+ईय्+आताम=चक्षीयाताम् आगे चक्षीरन् आदि

५२९ ब्रूञ् — ब्रू+सीय्+त=आने पर

ब्रू+ई+त (ई के अजादि होने से ब्रू को उवङ् आदेश होता है) तो ब्रुव+ईत=ब्रुवीत रूप बनता है। ब्रू+ईय्+आताम्=ब्रुवीयाताम् आदि।

ब्रुवीत	— ब्रुवीथाः	— ब्रुवीय
ब्रुवीयाताम्	— ब्रुवीयाथाम्	— ब्रुवीवहि
ब्रुवीरन	— ब्रुवीध्वम्	— ब्रुवीमहि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५३० आशासु + सीय् + त = आशासीत (स् और य् के लोप होने पर)
आशास् + सीय् + आताम् = आशासीयाताम्, आशासीरन् आदि
५३१ शी + सीय् + त = शे + ईत = शयीत।
शी + ईय् + आताम् = शे + ईय् + आताम् = शयीयाताम्
शी + ई + झ = शे + ई + रन् = शयीरन्।
आगे शयीथाः, शयीयाथाम्, शयीध्वम्, शयीय, शयीवहि, शयीमहि।

५—विधिलिङ् (आत्मनेपदम्)

(३) जुहोत्यादिगणः

५३२ दा + दा + सीय् + त आने पर ददा + सीय् + त (ह्रस्वः से देखें ५०)
ददा + सीय् + त आने पर (श्नाऽभ्यस्तयोरातः से देखें ५१) दा के आ का लोप होता है।
दद् + सीय् + त = (स् और य् का लोप लिङः सलोपो १५९ तथा ९० से) = ददीत रूप बनता है।
दद् + ईय् + आताम् = ददीयाताम् आगे ददीरन्, ददीथाः, ददीयाथाम्, ददीध्वम् ददीय, ददीवहि, ददीमहि।
५३२ धा — धा + धा + सीय् + त = दधीत (सभी पूर्व सूत्रों से)
(सभी दा की तरह, पर ध का द अभ्यासे चर्च से)
दधीयाताम्, दधीरन्, दधीथाः, दधीयाथाम्, दधीध्वम्, दधीय, दधीवहि दधीमहि।
५३४ मा — मिमीत, मिमीयाताम्, मिमीरन् आदि।
(देखें सूत्र १०१ जिससे अभ्यास को इकार होता है।)
५३५ हा — हा + हा + ईय् + त = ह हा ईय् + त = जह् + ई+त = जहीत
जिहीत (देखें सूत्र १०१)
जिहीयाताम्, जिहीरन्, जिहीथाः, जिहीयाथाम्, जिहीध्वम्, जिहीय, जिहीवहि जिहीमहि।

५— विधिलिङ् (आत्मनेपदम्)

(४) दिवादिगणः

५३६ क्लिश् + य + सीय + त आने पर सीय् का स् तथा य् गिर जाता है। तब क्लिश् + य + ई + त = क्लिश्येत रूप बनता हैं। आगे क्लिश्येयाताम् (आताम् के कारण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सीय् के य् का लोप न होने पर) क्लिश्येरन्, क्लिश्येथाः, क्लिश्येयाथाम्, क्लिश्येध्वम्। क्लिश्येय, क्लिश्येवहि, क्लिश्येमहि।

इसी तरह ५३८ जा + य + सीय् + त = जा + य + ईत = जायेत, जा + य + इय् + आताम् = जायेयाताम्, जायेरन्, जायेथाः, जायेयाथाम्, जायेध्वम्, जायेय जायेवहि, जायेमहि।

५४७ बुध् —	बुध्येत	—	बुध्येथाः	—	बुध्येय
	बुध्येयाताम्	—	बुध्येयाथाम्	—	बुध्येवहि
	बुध्येरन्	—	बुध्येध्वम्	—	बुध्येमहि

इसी आधार पर ५३७ खिद्येत, ५३९ डीयेत, ५४० तप्येत, ५४१ दीप्येत, ५४२ दूयेत, ५४३ धीयेत, ५४४ पद्येत, ५४५ पीयेत, ५४६ प्रीयेत, ५४८ मन्येत ५४९ मायेत, ५५० युज्येत, ५५१ युध्येत, ५५२ रुध्येत, ५५३ लीयेत, ५५४ वाश्येत ५५५ विद्येत, ५५६ व्रीयेत, ५५७ सूयेत, ५५८ सृज्येत।

५—विधिलिङ् [आत्मनेपदम्]

(५) स्वादिगण:

५५९ अश् + नु + सीय् + त आने पर अश् + नु + ई + त (स् तथा य् का लोप होने पर) = अश् + नु + ईत = सूत्र १८ से उवङ् होकर) = अश्नुवीत। अश् + नु + सीय् + आताम् = अश्नुवीयाताम्, अश्नुवीरन्, अश्नुवीथाः, अश्नुवीयाथाम्, अश्नुवीध्वम् अश्नुवीय, अश्नुवीवहि, अश्नुवीमहि। (सभी पूर्व सूत्रों से) ध्यान रहे सूत्र १८ की एक शर्त यह भी है कि असंयोग पूर्व में हो तो यण् हो, अन्यथा उवङ् हो जाय। अश् में संयोग है इसीलिए उवङ् होता है, पर चि में संयोग नहीं है तो यण् हो जाता है।

५६० चि + नु + सीय् + त = चि + नु + ईत = चिन्वीत, आगे चि + नु + ईय् + याताम् = चिन्वीयाताम्। चिन्वीरन्, चिन्वीथाः, चिन्वीयाथाम्, चिन्वीध्वम्। चिन्वीय चिन्वीवहि, चिन्वीमहि।

ठीक इसी प्रकार ५६१ धून्वीत, ५६२ सुन्वीत।

५—विधिलिङ् (आत्मनेपदम्)

(६) तुदादिगण:

५६३ जुष् + अ + सीय् + त = जुष् + अ + ई + त = जुषेत
जुष् + अ + सीय् + आताम् = जुष् + अ + ईय् + आताम् = जुषेयाताम्।
आगे जुषेरन्, जुषेथाः, जुषेयाथाम्, जुषेध्वम्, जुषेय, जुषेवहि, जुषेमहि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५६४ तुद् —	तुदेत —	तुदेथाः —	तुदेय
	तुदेयाताम् —	तुदेयाथाम् —	तुदेवहि
	तुदेरन् —	तुदेध्वम् —	तुदेमहि

ठीक इसी प्रकार ५६५ द्रियेत, ५६६ नुदेत, ५६७ मिलेत, ५६८ मुञ्चेत, ५६९ म्रियेत, ५७० लजेत, ५७१ विजेत, ५७२ विन्देत ५७३ सिञ्चेत ।

५७४	शीयेत —	शीयेथाः —	शीयेय
	शीयेयाताम् —	शीयेयाथाम् —	शीयेवहि
	शीयेरन् —	शीयेध्वम् --	शीयेमहि

५—विधिलिङ् (आत्मनेपदम्)

(७) रुधादिगणः

५७५ छिदिर् — छि + न + द् + ईत = छिन्दीत (ङित् होने से न के अ का लोप देखें सूत्र २४) छि + न् + द् + ईय् + आताम् = छिन्दीयाताम् (यहाँ इसके पहले अ नहीं मिलता इसलिए आ का ईय् नहीं) तथा य् का लोप हलादि को परे देखकर होता है वह भी नहीं, केवल सीय् का स् लिङः सलोपो से गिर गया ।

आगे छिन्दीरन्, छिन्दीथाः, छिन्दीयाथाम् छिन्दीध्वम्, छिन्दीय, छिन्दीवहि छिन्दीमहि ।

इसी तरह ५७७ भुज्–भु + न + ज् + ई + त = भुञ्जीत (न के अ का लोप करके)
भु + न् + ज् + ईय् + आताम् = भुञ्जीयाताम् ।

भुञ्जीरन्, भुञ्जीथाः, भुञ्जीयाथाम्, भुञ्जीध्वम्, भुञ्जीय, भुञ्जीवहि, भुञ्जीमहि

५७९ रुन्धीत, रुन्धीयाताम्, रुन्धीरन्, रुन्धीथाः, रुन्धीयाथाम्, रुन्धीध्वम्, रुन्धीय, रुन्धीवहि, रुन्धीमहि ।

इसी आधार ५७६ भिन्दीत, ५७८ युञ्जीत ।

५—विधिलिङ् (आत्मनेपदम्)

(८) तनादिगणः

५८० कृ + उ + सीय् + त = कुर् + उ + सीय्त (अत उत् सार्व सूत्र ७६) = कुरु + सीय् + त से स् और य् के लोप होने पर कुरु + ईत = कुर्वीत, आगे कुरु + सीय + आताम् = कुरु + ईय् + आताम = कुर्वीयाताम्, कुर्वीरन्, कुर्वीथाः, कुर्वीयाथाम्, कुर्वीध्वम् कुर्वीय, कुर्वीवहि, कुर्वीमहि ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५८१ तनु = तन् + उ + सीय् + त = तन्वीत, तन्वीयाताम्, तन्वीरन्, तन्वीथाः, तन्वीयाथाम्, तन्वीध्वम्, तन्वीय, तन्वीवहि, तन्वीमहि ।

इसी आधार पर ५८२ मन—मन्वीत मन्वीयाताम् आदि ।

५—विधिलिङ् (आत्मनेपदम्)

(९) क्रयादिगणः

५८३ क्री + ना + सीय् + त = क्री + ना + ईत आने पर **श्नाऽभ्यस्तयोरातः** से (देखें ५१) ना के आ का लोप हो जाता है। तब क्री + न् + ईत = क्रीणीत रूप बनता है (न को रषाभ्यां नो णः से ण करके) आगे क्रीणीयाताम्, क्रीणीरन्, क्रीणीथाः, क्रीणीयाथाम्, क्रीणीध्वम्, क्रीणीय, क्रीणीवहि क्रीणीमहि ।

५८४ गृह्णीत, गृह्णीयाताम्, गृह्णीरन्, गृह्णीथाः, गृह्णीयाथाम्, गृह्णीध्वम्, गृह्णीय गृह्णीवहि, गृह्णीमहि ।

ठीक इसी तरह ५८५ जानीत, ५८६ धुनीत, ५८७ पुनीत, ५८८ प्रीणीत ५८९ लुनीत, ५९० वृणीत आदि रूप बनते है ।

५—विधिलिङ् (आत्मनेपदम्)

(१०) चुरादिगणः

५९१ अर्थ + णिच् + सीय् + त = अर्थि + अ + ईत (इसमें णिच् होने के वाद पुनः अर्थि की धातु संज्ञा होती है। उससे शप् आता है। (देखें **सनाद्यन्ता धातवः**) अतः अर्थे अ + ईत = अर्थयेत (गुण करके), अर्थय + इय् + आताम् = अर्थयेयाताम्, अर्थयेरन् । अर्थयेथाः, अर्थयेयाथाम्, अर्थयेध्वम्, अर्थयेय, अर्थयेवहि, अर्थयेमहि । ठीक इसी प्रकार ५९२ चोरयेत, ५९३ दीपयेत, ५९४ मादयेत, ५९५ शातयेत ।

सूत्र १६८ **अनुदात्तस्य-च-ऋदुपधस्यान्यतरस्याम्**—(उपदेश में ऐसी अनुदात्त धातु के जिसकी उपधा में ह्रस्व ऋ हो विकल्प से अम् का आगम हो यदि उससे परे झलादि कित् को छोड़कर कोई अन्य आर्धधातुक प्रत्यय हो ।

सूत्र १६९ **ऊदुपधाया गोहः**—(६-४-८९) यदि गुण का निमित्त अजादि प्रत्यय परे हो तो गुह धातु के उपधा वाले उकार को ऊकार हो जाय ।

सूत्र १७० **उस्यपदान्तात्**—(६-१-९६) अपदान्त अवर्ण से परे यदि उस् हो तो पूर्व पर के स्थान में पररूप एकादेश हो जाय ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूत्र १७१ **आदेश प्रत्ययो:**—(८-३-५९) इण् और कवर्ग से परे अपदान्त सकार (चाहे वह आदेश हो या प्रत्यय का अवयव) के स्थान में मूर्धन्य षकार हो जाय। जैसे राम+सु=रामेषु, करिष्यति।

सूत्र १७२ **हलङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्**—(६-१-६८) हलन्त से तथा दीर्घ ङी तथा आप् अन्त वाले शब्दों से परे सु, ति तथा सि के अपृक्त रूप हल् का लोप हो। यथा सरित्+स्=सरित्, नदी+स्=नदी, रमा+स्=रमा।

१७३ **मिदचोऽन्त्यात् पर:**—(१-१-४७) मित् सदा अन्त्य अच् से परे आता है।

१७४ **रषाभ्यां नो ण: समान पदे**--(८-४-१) रेफ और षकार से परे यदि एक ही पद में नकार हो तो उस नकार के स्थान में णकार हो जाय।

१७५ **अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि**—(८-४-२) अट्, कवर्ग, पवर्ग, आङ् और नुम् यदि अकेले या मिलकर र् या ष् के परे आयें तो भी न के स्थान में ण हो जाय।

अनिट् धातुएँ

हलन्त—शक्, पच् मुच्, रिच्, वच्, विच्, सिच्—पृच्छ त्यज्, निजिर्, भज् भञ्ज, भुज्, भ्रस्ज, मस्ज, यज्, युज्, रुज्, रञ्ज, विजिर्, स्वञ्ज सञ्ज, सृज्—अद्, क्षुद्, खिद्, छिद्, तुद्, नुद्, पद्य, भिद्, विद्य विनद्, विन्द, शद्, सद्, स्विद्य, स्कन्द, ह्लद्—क्रुध्, क्षुध्, बुध्, वन्ध युध्, रुध्, राध, व्यध्, शुध, साध, सिध्य, मन्य, हन्, आप् क्षिप्, क्षुप्, तप्, तिप्, तृप्य, दृप्य, लिप्, लुप्, वप्, शप्, स्वप्, सृप यभ, रभ, लभ, गम्, नम्, यम्, रम्। कुश्, दंश्, दिश्, दृश्, मृश् रिश्, रुश्, लिश्, विश्, स्पृश्, कृष्, त्विष्, तुष्, द्विष्, दुष्, पुष्, पिष् विष्, शिष, शुष, श्लिष, घस्, वस्, दिह्, दुह्, दह्, नह्, मिह्, रुह, लिह, वह। इनके अतिरिक्त शेष हलन्त सेट् होती।

अजन्त—अजन्तों में ऊकारान्त ॠकारान्त, तथा यु आदि १२ धातुएँ सेट् हैं शेष अनिट्। यु आदि में यु, रु, क्ष्णु, शी, स्नु, नु, टुक्षु, श्वि, श्रिञ्, डीङ्, वृङ् तथा वृञ् है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रयुक्त सूत्रों की अकारादि क्रम सूची

अचः परस्मिन् पूर्वविधौ	८५	आदेश प्रत्यययोः	१७१
अचि विभाषा	७१	आर्धधातुकस्येड वलादेः	१२१
अचि श्नुधातुभ्रुवां-	१७	आमेतः	१५४
अट्कुप्वाङ्	१७५	आहस्थः	३६
अङ्गार्ग्यगालवयोः	११६	इटोऽत्	१६६
अत उत् सार्वधातुके	७६	इणो यण्	२६
अतो गुणे	३	इतश्च	१०६
अतोदीर्घोयञि	४	इदितोनुम्धातोः	९
अतो हेः	१४४	इषुगमियमां छः	१२
अतो येयः	१६०	ईड्जनोर्ध्वे च	१५७
अर्ति पिपर्त्योश्च	५४	ई हल्यघोः	५९
अदः सर्वेषाम्	१११	उतश्च प्रत्ययात्	१५२
अदभ्यस्तात्	२९	उतो वृद्धिर्लुकि	४०
अदि प्रभृतिभ्यः शपः	२३	उदोष्ठय पूर्वस्य	५५
अनिदितां हल्	६५	उपधायां च	९५
अनुदात्तस्य चर्दुपधस्या—	१६८	उपसर्गस्यायतौ	९४
अभ्यासे चर्च	५२	उपात् प्रतियत्न	८१
अस्तिसिचोऽपृक्ते	११२	उस्यपदान्तात्	१७०
असिद्धवदत्राभात्	१५१	ऊदुपधाया गोहः	१६९
अस्तेर्भूः	१२७	ऋतइद्धातोः	६९
आ च हौ	१५१अ	ऋद्धनोः स्ये	१२३
आटश्च	१०९	एकाचो वशो भष्	३३
आडजादीनाम्	१०५	एत ऐ	१५६
आडुत्तमस्व पिच्च	१४६	एरुः	१४०
आतो ङितः	८६	ओतः श्यनि	६४
आत्मनेपदेष्वनतः	९७	कर्तरि शप्	१
आदिर्ञिटुडवः	८	कर्मणिङ्	९३
आदेच उपदेशेऽशिति	१३१	किरतौ लवने	७०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुहोश्चुः	५८
कृपो रोलः	९६
क्रमः परस्मैपदेषु	२१
क्र्यादिभ्यः श्ना	८२
गमहनजनखनघसां	४५
गुपूधूप विच्छपणि	२२
ग्रहिज्या वयि व्यधि	६६
ग्रहोऽलिटि दीर्घः	१३६
घ्वसोरेद्धावभ्यास	१४८
चक्षिङ् ख्याञ्	२७
चुरादिभ्यो णिच्	८४
चोः कुः	१२६
छे च	१३
जक्षित्यादयः षट्	२८
जहातेश्च	६०
जाग्रोऽविचिण्णल्	३०
जुसि च	११९
जुहोत्यादिभ्यः श्लुः	४७
ज्ञाज नोर्जा	१०२
झस्यरन्	१६५
झषस्तथोऽर्धोऽध	३२
झेर्जुसः	१६१
झोऽन्तः	२
टित आत्मनेपदानां टेरे	८८
णिचश्च	८६
णो नः	१४
तनादिकृञ्भ्यः उः	७५
तस्थस्थमिपां	१०७
तासस्त्योर्लोपः	२५
तिप्यनस्तेः	११३
तुदादिभ्यः शः	६८
तुह्योस्तातङ्	१४१
थासः से	९१
दधस्तथोश्च	५७
दंश संज स्वञ्जां	५
दश्च	११७
दादेर्धातोर्घः	३१
दिवादिभ्यः श्यन्	६२
धात्वादेः षः सः	१०
धि च	९८
न भ कुर्छुराम्	७७
नाभ्यस्तस्याचि	६१
नित्यं करोतेः	७८
नित्यं ङितः	१०८
पा घ्रा ध्मा स्थाम्ना	११
पुगन्त लघूपधस्य	७
पूर्वोऽभ्यासः (देखें पृष्ठ २२)	२२
प्वादीनां ह्रस्वः	८३
ब्रुव ईट्	३४
ब्रुवः पञ्चानाम्	३५
ब्रुवो वचि	१२८
भियोऽन्यतरस्याम्	५६
भ्रियाम् इत्	१०१
मस्जिनशोर्झलि	१२९
मस्जेरन्त्यात्	१३५
मितां ह्रस्वः	८७
मीनाति मिनोति	१३७
मृजेर्वृद्धिः	३७
मेर्नि	१४५
म्रियतेर्लुङ् लिङोश्च	१०३
यासुट् परस्मैपदेषु	१५८
ये च	१०३
वचि स्वपि	१६२
वा भ्राश् भ्लाश्	२०

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वा द्रुह् मुह्	१३२
विदो लटो वा	४१
विभाषा लीयते	१३८
व्रश्चभ्रस्जसृज्मृज्	३८
रञ्जेश्च	९२
रधादिभ्यश्च	१३०
रिङ् शयग्	१०४
रषाभ्यांनोण:	१७४
रुदश्च पञ्चभ्य:	११५
रुदादिभ्य: सार्वधातुके	३९
रुधादिभ्य: श्नम्	७३
लङ: शाकटायनस्यैव	११८
लिङ: सलोपोऽनन्त्यस्य	१५९
लिङ: सीयुट्	१६४
लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वड्	११०
लोट् च	१३९
लोटो लङ्वत्	१४२
लोपश्चास्यान्यतरस्याम्	२९
लोपोव्योर्वलि	९०
शमामष्टानां दीर्घ:	६३
शा हौ	१४९
शास इदङ् हलो:	४२
शासि वसि घसीनां च	४३
शीङो रुट्	१००
शीङ: सार्वधातुके गुण:	९९
शे मुचादीनाम्	७२
श्नसोरल्लोप:	२४
श्नाभ्येस्तयोरात:	५१
श्रुव: श्रृ च	१५
श्लौ	४८
षढो क: सि	१२४
समवाये च	८०
सवाभ्यां वाऽमौ	१५५
स स्यादार्धधातुके	१२२
सार्वधातुकार्धधातु-	६
सार्वधातुकमपित्	१६
संपरिभ्यांकरोतौ	७९
सिजभ्यस्त विदिभ्यश्च	११४
सेऽचिकृतचृत—	१३३
सेर्ह्यपिच्च	१४३
सृजदृशोर्झल्यमकिति	१२५
स्कोसंयोगाद्योरन्ते च	१६७
स्यतासी ऌलुटो:	१२०
स्वरति सूति सूयति	१३४
स्वादिभ्य: श्नु:	६७
हल: श्न:	१५३
हलङ्याब्भ्यो	१७२
हलादि शेष:	४९
हलि च	६०
हन्तेर्ज:	१५०
हुझल्भ्योर्हेधि:	१४७
हुश्नुवो: सार्वधातुके	१[illegible]
हो हन्तेर्	[illegible]
ह्रस्व:	

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेखक की अन्य कृतियाँ

१—हमारा अतीत

२—संस्कृत सरणिः

३—संस्कृत शिक्षण चन्द्रिका

४—कालिदास काव्यामृतम्

५—सुरभारती सुधा

मुद्रक—ईगल प्रिंटिंग प्रेस, यदुनाथ सान्याल रोड, लखनऊ—फोन-33143